राष्ट्र की सेवा में परमाणु
एनपीसीआईएल
NPCIL
ATOMS IN THE SERVICE OF THE NATION
न्यूक्लियर पॉवर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
Nuclear Power Corporation of India Limited

हिंदी ई-गृहपत्रिका

अणुविहार

वर्ष : 25, अंक : 80
अप्रैल से सितंबर, 2024

न्यूक्लियर पॉवर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड

(भारत सरकार का उद्यम)

नरोरा परमाणु विद्युत केंद्र

आईएसओ 14001 एवं आईएस 45001 प्रमाणित विद्युत केंद्र

राष्ट्र की सेवा में परमाणु
एनपीसीआईएल NPCIL
ATOMS IN THE SERVICE OF THE NATION
न्यूक्लियर पॉवर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
Nuclear Power Corporation of India Limited

हिंदी ई-गृहपत्रिका

अणुविहार

वर्ष : 25, अंक : 80
अप्रैल से सितंबर, 2024

मुख्य संरक्षक

प्रतीक अग्रवाल
केंद्र निदेशक

संरक्षक

संजय केशवराव कावरे
मुख्य अधीक्षक

परामर्शदाता

आशुतोष तिवारी
प्रमुख (मानव संसाधन)

संपादक

अर्चना श्रीवास्तव
उप प्रबंधक (राजभाषा)

संपादन सहयोग

प्रेम पाल
वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक

जय प्रकाश
वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक

लेख चयन समिति

शैलेश महावर
स्टेशन रिएक्टर भौतिज्ञ

विशाल भारद्वाज
वैज्ञा.अधि./ केमीकल लैब

मितेष अग्रवाल
प्रभारी अधिकारी, टीएलडी

पत्राचार हेतु पता

सम्पादक, अणुविहार नरौरा परमाणु विद्युत केंद्र
डाक : एनएपीएस, नरौरा, बुलंदशहर (उ.प्र.) पिन : 203389
ई-मेल : archanasrivastava@npcil.co.in

नरौरा परमाणु विद्युत केंद्र के कार्मिको एवं उनके परिजनों को राजभाषा हिन्दी के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करने एवं विभागीय गतिविधियों के प्रचार-प्रसार को समर्पित यह गृह-पत्रिका केवल आंतरिक नि:शुल्क वितरण के लिए है। लेखकों के विचार से संपादक मंडल सहमत हो, यह आवश्यक नहीं है।

-संपादक

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	शीर्षक	पृष्ठ सं.
1.	केंद्र निदेशक का संदेश	1
2.	संपादकीय - छोड़ो जाने दो...!	2
3.	नरौरा परमाणु विद्युत केंद्र का प्रदर्शन-सार	3
4.	एनपीसीआईएल की प्रमुख उपलब्धियां	4
5.	भारतीय नाभिकीय कार्यक्रम की ताकत-द्रुत प्रजनक रिएक्टर	5
6.	भारत के विकास में कृषि की भूमिका	8
7.	एनपीसीआईएल की विकास यात्रा	9
8.	भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम	10
9.	एनपीसीआईएल स्थानान्तरण लाभ	11
10.	बुद्धि	12
11.	बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान	13
12.	कौन हो तुम (कविता)	14
13.	निगम सामाजिक दायित्व के अंतर्गत कौशल विकास कार्यक्रम	15
14.	एनएपीएस स्टेशन प्रशिक्षण केंद्र की गतिविधियां	16
15.	सफर सफलता का	16
16.	एनएपीएस में राजभाषा हिंदी गतिविधियां	17
17.	वार्षिक कार्यक्रम 2025-26 में 'क' क्षेत्र लिए निर्धारित लक्ष्य	19
18.	स्वतंत्रता दिवस मनाया गया	20
19.	मेरी दिल्ली-बरेली यात्रा	21
20.	आओ ! भारत को अग्नि सुरक्षित बनाएं	22
21.	जीवन प्रकृति के संग करें	22
22.	फेसबुक की मित्रता	23
23.	नारी का संघर्ष	24
24.	सफलता की राह	25
25.	कर्मशील	26
26.	अग्निशमन सेवा सप्ताह	27
27.	गुणकारी पत्तियां	28
28.	स्वस्थ रहने की कुंजी एवं दिनचर्या	29
29.	अधूरा प्यार	30
30.	यूनिकोड के माध्यम से कम्प्यूटर पर हिंदी टाइपिंग	33
31.	कला की परछाई	35
32.	हम शतरंज के प्यादे हैं	36
33.	खोये खोये से रहते हैं हम	36
34.	चार लोग क्या कहेंगे	37
35.	मैं खुश हूँ	37
36.	मानक टिप्पणियां	38
37.	अंग्रेजी मुहावरे एवं उनके हिंदी पर्याय	39
38.	आगमन-प्रस्थान	40

केंद्र निदेशक की कलम से ...

प्रिय साथियो,

हमारा जीवन निरंतर सीखने की एक प्रक्रिया (Continuous Learning Process) है। जीवन में घटने वाली हर घटना, हर बात, हमें कुछ न कुछ सिखा कर, कोई न कोई अनुभव दिला कर जाती है, जो कभी न कभी हमारे काम आती है।

विकास के इस तेजी से बदलते युग में निरंतर सीखना हर एक व्यक्ति या संगठन की सफलता के लिए अति आवश्यक है। यदि निरंतर सीखने की प्रक्रिया को हम पूरी सजगता के साथ अपने रूटीन में ले कर आएं तो हम अपने ज्ञान, अनुभव और कार्यदक्षता के स्तर को और भी ऊंचा उठा सकते हैं। सतत सीखना हमारे कौशलों को अपडेट रखने और नए अवसरों को प्राप्त करने में भी मदद करता है। इससे आत्मविश्वास में भी वृद्धि होती है।

हमारी कंपनी (एनपीसीआईएल) के चार आधारभूत मूल्यों में संरक्षा, नैतिकता, सुश्रुषा के साथ-साथ 'श्रेष्ठता (एक्सीलेंस)' भी शामिल है जो शिक्षण, स्व-आकलन व उच्चतर मानक निर्धारण के माध्यम से निरंतर सुधार करने के सिद्धांत को बल देता है। यह श्रेष्ठता तभी संभव है जब हम अपने निरंतर सीखने की प्रक्रिया के प्रति सजग रहें और इसे सकारात्मक रूप से जारी रखें।

संयंत्र स्थल पर विभिन्न प्रकार की बैठकों का आयोजन भी इसीलिए किया जाता है कि हम अपने और अन्य साथी इकाइयों के हर छोटे-बड़े इवेंट्स के बारे में चर्चा कर अपने और दूसरों के अनुभव से सीख सकें और अपनी कंपनी के "पहले संरक्षा, फिर उत्पादन" के लक्ष्य को प्राप्त करते हुए अधिकतम बिजली उत्पादन कर देश की ऊर्जा सुरक्षा को सुनिश्चित कर सकें।

निरंतर सीखने की प्रक्रिया के तहत हम सबसे पहले आत्म मूल्यांकन (Self-Assessment) कर अपने लक्ष्यों का निर्धारण (Goal Setting) करते हैं। इसके बाद हमने जो सीखा है उसे प्रयोग (Practice) में लाना और उसका अभ्यास (Application) करते हैं। हमें कार्य से संबंधित फीडबैक और सुधार पर भी ध्यान देना चाहिए, तभी आगे निरंतर सुधार किया जा सकेगा।

निरंतर सीखना केवल व्यक्तिगत विकास का माध्यम नहीं है, बल्कि यह संगठन की दीर्घकालिक सफलता की सीढ़ी भी है। बदलते समय के साथ कदम मिलाकर चलने के लिए हमें सीखने की प्रक्रिया को जीवन का अनिवार्य हिस्सा बनाना होगा। निरंतर सीखने से हम न केवल वर्तमान चुनौतियों का सामना कर सकते हैं, बल्कि भविष्य के लिए भी बेहतर तैयार हो सकते हैं। इसलिए आइए हम सब साथ मिल कर निरंतर सीखने की प्रक्रिया में शामिल होते हैं।

बड़े हर्ष का विषय है कि एनएपीएस की छमाही हिंदी ई-गृहपत्रिका अणुविहार प्रकाशित हो रही है। यह पत्रिका न सिर्फ हमारे बिजलीघर की गतिविधियों का आईना है बल्कि सही मायने में यह हमारे सम्पूर्ण विभाग की छवि दर्शाने वाला दर्पण भी है। इस पत्रिका के प्रकाशन में हमारे अनेक कार्मिकों ने अपना भरपूर योगदान दिया है। हम उन सब के प्रति आभारी हैं। आशा है भविष्य में भी हमें आप सब का सहयोग मिलता रहेगा।

शुभकामनाओं सहित।

प्रतीक अग्रवाल
-केंद्र निदेशक, एनएपीएस

संपादकीय...

छोड़ो, जाने दो...!

"छोड़ो, जाने दो..."! ये मात्र शब्द नहीं हैं, इसके पीछे जीवन से जुड़ी कुछ फिलॉसाफी भी है। अनेक बार हम कार्यों को करते समय सोचते हैं कि ये कार्य किया जाए या न किया जाए? इस कार्य को करने से हमारा क्या फायदा होगा? नहीं करें, तो क्या हो जाएगा? ध्यान देंगे तो पाएंगे कि अनिर्णय की स्थिति में ज्यादातर बार हमारी अप्रोच "छोड़ो, जाने दो..." की होती है। वह कार्य हम टाल देते हैं और शायद फिर कभी नहीं करते हैं।

अक्सर आलस के कारण भी हम "छोड़ो, जाने दो" का प्रयोग कर लेते हैं। इसके अलावा जब किसी कार्य में हमारी रूचि न हो, वह हमारी पसंद का न हो या वह हमारी प्राथमिकता सूची में ही न हो, तब भी हम "छोड़ो, जाने दो" को अपनाते हैं। गहराई से देखें तो पाएंगे कि कहीं न कहीं हम, उस कार्य को छोड़ने से मिलने वाले परिणाम, चाहे वे नकारात्मक ही क्यों न हों, के लिए मन ही मन तैयार रहते हैं। उसके परिणाम से हमें कोई फर्क नहीं पड़ता, इसीलिए "छोड़ो जाने दो" की अप्रोच रखते हैं।

कई बार "छोड़ो, जाने दो" का प्रयोग बड़े हल्के में यूँ ही "बाद में देखेंगे" की तरह से किया जाता हैं। यह प्रयोग कालान्तर में घातक भी सिद्ध हो सकता है, क्योंकि अक्सर यह "बाद" कभी आता ही नहीं है। इसके ("छोड़ो, जाने दो") प्रयोग से अनेक बार हम जीवन में आए अवसरों को भी खो देते हैं। और फिर हमारे पास जीवनभर पछताने और अफसोस करने के अलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं बचता।

कभी-कभी हम यथास्थिति बनाए रखने के लिए भी "छोड़ो, जाने दो" का प्रयोग करते हैं ताकि उस विषय में सोचने के लिए हमें कुछ समय और मिल जाए। अपने आप ही कोई रास्ता निकल आए या कोई और आगे बढ़ के उस कार्य को कर दे, या फिर वह कार्य/बात समाप्त ही हो जाए और हमें कोई एक्शन न लेना पड़े। मतलब सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे।

कभी-कभी हम किन्हीं अप्रिय घटनाओं, वाद-विवाद या अनावश्यक/अनर्गल बातों या पचड़ों से बचने के लिए भी "छोड़ो, जाने दो" का उपयोग करते हैं। यह एक प्रकार से सकारात्मक अप्रोच है। इससे मन शांत व स्थिर रहता है और समय की भी बचत होती है एवं संबंध भी खराब नहीं होते।

इसलिए "छोड़ो, जाने दो" शब्दों (संकल्पना) का प्रयोग बहुत सोच-समझ कर, स्थिर मन और सूझ-बूझ के साथ, दीर्घगामी परिणामों को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए। ये शब्द हमारे जीवन को बदलने वाले हो सकते हैं। ये जीवन को उत्थान की तरफ या फिर अभाव अथवा पश्चाताप की तरफ भी ले जा सकते हैं। शब्द ब्रह्म हैं, इस बात को ध्यान में रखते हुए हमें बड़ी सजगता एवं सतर्कता के साथ शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

एनपीसीआईएल, नरौरा परमाणु विद्युत केंद्र की "ई-गृह पत्रिका अणुविहार" तैयार करते समय हमारी टीम ने बड़ी सजगता और सावधानीसे आपके लिए विविधतापूर्ण आलेख एकत्र किए है। आलेखों के चयन, उनके संपादन और रिपोर्ट आदि तैयार करते समय यह (छोड़ो...) अनेक स्थानों पर हमारे बहुत काम आया। हमारी पत्रिका में आप के लिए विभिन्न तकनीकी एवं गैर-तकनीकी विषयों पर आलेख के साथ-साथ विभागीय गतिविधियों, उपलब्धियों की रिपोर्ट, कहानियाँ, कविताएँ एवं अन्य उपयोगी सामग्री तथा फोटो फीचर आदि हैं, जिनके माध्यम से आपका ज्ञानवर्धन एवं मनोरंजन होगा। आशा है आप हमारी ई-गृहपत्रिका अणुविहार को पसंद करेंगे और अपनी प्रतिक्रिया से हमें अवगत कराएंगे। हमें आपके पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी।

अर्चना श्रीवास्तव

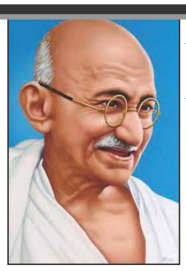

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना, देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।

महात्मा गांधी

नरौरा परमाणु विद्युत केंद्र का प्रदर्शन-सार

(अप्रैल 2024 - सितम्बर 2024)

क्रमांक	पैरामीटर		एनएपीएस-1	एनएपीएस-2
1.	अधिकतम सकल विद्युत क्षमता (Mwe)		220	220
2.	सकल विद्युत उत्पादन (MUs)		893.36	941.09
3.	संचित सकल विद्युत उत्पादन - अप्रैल, 2024 से (MUs)		893.36	941.09
4.	उत्तरी ग्रिड में शुद्ध विद्युत सप्लाई (MUs)		1659.604	
5.	सहायक खपत (MUs)		85.221	87.832
6.	उपलब्धता घटक (%)		100.00	100.00
7.	क्षमता घटक (%)		92.46	97.40
8.	आउटेज की संख्या (TG TRIP)	- योजनाबद्ध	0	0
		- बाध्यतावश	0	0
9.	रिएक्टर ट्रिपों की संख्या (स्वत:)		0	0
10.	पॉइजन शट डाउन की संख्या		0	0
11.	फुल पॉवर दिवस (सं.)		180.84	182.66
12.	संचित फुल पॉवर दिवस (सं.) (NAPS#1 के लिए 06.01.2008 से और NAPS#2 के लिए 29.08.2010 से)		4715.09	4180.27

-एस.टी.ई.(प्लानिंग)

एनएपीएस की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ (अप्रैल, 2024 से सितंबर, 2024)

- उपरोक्त अवधि में नरौरा परमाणु विद्युत केंद्र की दोनों इकाइयां निरंतर प्रचालनरत रहीं एवं एनएपीएस-1 एवं एनएपीएस-2 इकाइयां दिनांक 30 सितंबर, 2024 तक निरंतर प्रचालन के क्रमश: 275 दिन एवं 246 दिन पूरे कर चुकी हैं।
- एनएपीएस में दिनांक 21 सितंबर, 2024 को इंटीग्रेटिड कमांड, कंट्रोल एवं रेस्पांस (आईसीसीआर) ऑफ-साइट आपात अभ्यास सफलतापूर्वक सम्पन्न किया गया।
- अप्रैल से सितंबर, 2024 के दौरान एनएपीएस टाउनशिप स्थित सीएसआर सामुदायिक डिसपेन्सरी में 13283 मरीजों का नि:शुल्क उपचार किया गया।
- नियमित जनजागरूकता कार्यक्रम के तहत अप्रैल से सितंबर, 2024 के दौरान कुल 1092 व्यक्तियों (26 विजिट) ने नरौरा परमाणु विद्युत केंद्र का भ्रमण किया।

**

एनपीसीआईएल की प्रमुख उपलब्धियां

(अप्रैल, 2024 से सितंबर, 2024)

1. रापबिघ-3 ने नवीकरण एवं आधुनिकीकरण (आर. एवं एम.) गतिविधियों (सामूहिक शीतलक चैनल प्रतिस्थापन, सामूहिक फीडर प्रतिस्थापन एवं अन्य संरक्षा उन्नयनों) की सफलतापूर्वक पूर्णता के पश्चात 24 जुलाई, 2024 को प्रचालन पुन: आरंभ किया। जिन भारतीय रिएक्टरों में समान प्रकार की गतिविधियां आरंभ की गई थी उनमें से इन आर. एवं एम. गतिविधियों को सबसे कम समय में पूर्ण कर लिया गया। ये गतिविधियां बजट के अंदर ही पूर्ण की गई।
2. केकेएनपीपी इकाई- 1 व 2 ने ग्रिड के साथ अपने प्रथम जुड़ाव से लेकर अब तक एक लाख मिलियन यूनिट विद्युत का संचयी उत्पादन हासिल किया।
3. केकेएनपीपी-2 का ईंधन पुन:भरण शटडाउन (आरएसडी) 56 दिवसों में पूर्ण हुआ, जिसने, दोनों इकाइयों के आरंभ से लेकर अबतक सबसे अल्प अवधि के शटडाउन का एक नया कीर्तिमान स्थापित किया।
4. कापबिघ-4 ने दिनांक 21 अगस्त, 2024 को पूर्ण विद्युत प्रचालन (711 मेगावॉट की विद्युत स्तर के साथ) प्राप्त किया।
5. परमाणु ऊर्जा नियामक परिषद (पऊनिप) द्वारा क्रांतिकाता की ओर पहले कदम की अनुमति प्राप्त होने के पश्चात रापविप-7 में 19 सितंबर, 2024 को 22.42 बजे क्रांतिकता का महत्वपूर्ण कीर्तिमान (नियंत्रित विखंडन चैन रिएक्शन का आरंभ) हासिल किया गया।
6. अप्रैल, 2024 से सितंबर, 2024 तक एनपीसीआईएल का कुल उत्पादन 28327 मि.यू. रहा। इस प्रकार, न्यूक्लियर विद्युत ने पर्यावरण में लगभग 24 मिलियन टन CO_2 के समतुल्य का उत्सर्जन टाला।
7. मपबिघ-2 ने (दिनांक 06.10.2024 की स्थिति अनुसार) 366 दिवसों का अनवरत, संरक्षित एवं विश्वसनीय प्रचालन दर्ज किया, जिसके पश्चात इकाई को नियोजित शटडाउन गतिविधियों के लिए शटडाउन किया गया। केजीएस-2 ने दिनांक 15.09.2024 को अपने शटडाउन से पूर्व 706 दिवसों का अनवरत, संरक्षित एवं विश्वसनीय प्रचालन दर्ज किया । एनपीसीआईएल द्वारा प्रचालित किए जाने वाले विविध रिएक्टरों द्वारा अब तक 47 बार एक वर्ष से अधिक का (इनमें से, 4 बार दो वर्षों से अधिक का) अनवरत, संरक्षित एवं विश्वसनीय प्रचालन दर्ज किया गया है। केएपीएस-1 द्वारा 540 दिनों का अनवरत प्रचालन किया गया तथा इसके बाद इसे नियमित अनुरक्षण प्रयोजन से शटडाउन कर दिया गया।

8. न्यूक्लियर पॉवर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड तथा संयुक्त अरब अमिरात (यूएई) के एमिरेट्स न्यूक्लियर एनर्जी कॉर्पोरेशन (ईएनईसी) के बीच न्युक्लियर विद्युत संयंत्रों के प्रचालन व अनुरक्षण के क्षेत्र में 09 सितंबर, 2024 को एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित हुआ।
9. सरकार ने न्यूक्लियर पॉवर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड - एनपीसीआईएल और एनटीपीसी लिमिटेड के एक संयुक्त उपक्रम (जेवी)-अणुशक्ति विद्युत निगम लिमिटेड (अश्विनि) को परमाणु ऊर्जा अधिनियम, 1962 के अनुरूप न्यूक्लियर विद्युत उत्पादन तथा संबद्ध गतिविधियों के निर्वहन के लिए दिनांक 11 सितंबर, 2024 को अनुमोदन प्रदान किया।

संकलन: जयप्रकाश
राजभाषा अनुभाग

भारतीय नाभिकीय कार्यक्रम की ताकत-द्रुत (न्यूट्रान) प्रजनक रिएक्टर

(प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर)

परमाणु ऊर्जा की भारतीय नाभिकीय विद्युत उत्पादन एवं आपूर्ति के क्षेत्र में एक निश्चित एवं निर्णायक भूमिका रही है। विकासशील देश होने के कारण भारत की संपूर्ण विद्युत आवश्यकताओं का एक बड़ा भाग गैर पारंपरिक स्रोतों से पूरा किया जाता है क्योंकि पारंपरिक स्रोतों द्वारा बढ़ती हुई आवश्यकताओं को पूरा नहीं किया जा सकता। भारत ने नाभिकीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त की है। इसका श्रेय डॉ. होमी जहांगीर भाभा द्वारा प्रारंभ किए गए महत्वपूर्ण प्रयासों को जाता है जिन्होंने भारतीय नाभिकीय कार्यक्रम की कल्पना करते हुए इसकी आधारशिला रखी। तब से ही परमाणु ऊर्जा विभाग के समर्पित वैज्ञानिकों तथा इंजीनियरों द्वारा बड़ी सतर्कता के साथ इसे आगे बढ़ाया गया है। भारत उन्नत प्रौद्योगिकी के साथ एक जिम्मेदार परमाणु शक्ति के रूप में, भारत परमाणु और रेडियोलॉजिकल सामग्री की सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए, बिजली और गैर-ऊर्जा दोनों क्षेत्रों में परमाणु प्रौद्योगिकी के शांतिपूर्ण अनुप्रयोगों का विस्तार करने के लिए प्रतिबद्ध है।

किसी भी राष्ट्र के संपूर्ण विकास के लिए विद्युत की पर्याप्त तथा निर्बाधआपूर्ति का होना आवश्यक है। विद्युत की मात्रा के संदर्भ में कहें तो किसी राष्ट्र के सामाजिक-आर्थिक विकास का पैमाना वहां प्रति व्यक्ति विद्युत खपत की दर से आंका जाता है। कोयला आधारित ताप बिजलीघर, जल विद्युत संयंत्र,गैर पारंपरिक स्रोतों से विद्युत उत्पादक संयंत्र,विद्युत उत्पादन में अपना योगदान कर रहे हैं। परंतु,

क) भारत में कोयले के अनुमानित भंडार 206 अरब टन हैं।

ख) जल विद्युत उत्पादन क्षमता सीमित है और यह अनिश्चित मानसून पर निर्भर करती है ।

ग) गैर पारंपरिक स्रोतों (नाभिकीय, वायु, ज्वारीय तरंगों आदि) से अपनी प्रकृति के कारण जहाँ अन्य गैर परंपरागत स्रोत लघु विकेन्द्रित अनुप्रयोगों के लिए उपयुक्त हैं वहीं नाभिकीय बिजलीघर बृहत केन्द्रीय उत्पादन केंद्रों के लिए उपयुक्त हैं।

भारत ने विद्युत उत्पादन के लिए नाभिकीय ऊर्जा के प्रयोग के संबंध में सावधानीपूर्वक कदम आगे बढ़ाए हैं। इसके लिए परमाणु ऊर्जा अधिनियम बनाकर उसका क्रियान्वयन किया गया। इसके अंतर्गत निर्धारित उद्देश्यों में प्राकृतिक रुप से उपलब्ध तथा उच्च सम्भावना वाले तत्वों यूरेनियम एवं थोरियम का उपयोग भारतीय नाभिकीय विद्युत रिएक्टरों में नाभिकीय ईंधन के रूप में करना है। भारत में इन दोनों तत्वों के अनुमानित प्राकृतिक भण्डार इस प्रकार हैं :-

प्राकृतिक यूरेनियम भंडार - लगभग 70,000 टन

थोरियम भंडार - लगभग 3,60,000 टन

भारत ने थोरियमआधारित क्लोज्ड परमाणु ईंधन चक्र को तैनात करने के दीर्घकालिक लक्ष्य के साथ तीन-चरणीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम अपनाया है।

प्रथम चरण: प्राकृतिक यूरेनियम ईंधन वाले दबावयुक्त भारी जल रिएक्टर (पीएचडब्ल्यूआर)

द्वितीय चरण: फास्ट ब्रीडर रिएक्टर (एफबीआर) प्लूटोनियम आधारित ईंधन का उपयोग करते हैं

तीसरा चरण: थोरियम के उपयोग के लिए उन्नत परमाणु ऊर्जा प्रणालियाँ, उन्नत भारी पानी रिएक्टर (एएचडब्ल्यूआर) थोरियम-प्लूटोनियम ईंधन जलाएंगे और विखंडनीय यूरेनियम-233 का उत्पादन होगा।

पहला चरण - दाबित भारी पानी रिएक्टर जिसमें निम्नलिखित का उपयोग होता है :

1- ईंधन के रूप में प्राकृतिक यूरेनियम डाई-ऑक्साइड

2- मंदक एवं शीतलक के रूप में भारी पानी

3- प्राकृतिक यूरेनियम आईसोटोप का संयोजन इस प्रकार है - 0.7% विखण्डन U-235 और बाकी U-238।

वर्तमान में, एनपीसीआईएल 8180 मेगावाट की स्थापित क्षमता के साथ 24 परमाणु ऊर्जा रिएक्टरों (राजस्थान परमाणु विद्युत केंद्र इकाई-1, 100 मेगावाट पीएचडब्ल्यूआर, परमाणु ऊर्जा विभाग के स्वामित्व और एनपीसीआईएल द्वारा प्रबंधित, जो लंबे समय से बंद है) का संचालन करता है। वर्तमान में एनपीसीआईएल आठ रिएक्टरों (6800 मेगावाट) का निर्माण कर रहा है जिसमें राजस्थान परमाणु ऊर्जा परियोजना (आरएपीपी) इकाई-7 व 8 शामिल है।

दूसरा चरण - द्रुत प्रजनक रिएक्टर :

भारत के नाभिकीय विद्युत उत्पादन के द्वितीय चरण में रिएक्टर प्रचालन के प्रथम चरण से प्राप्त Pu-239 का मुख्य ईंधन के रूप में द्रुत प्रजनक रिएक्टर (एफबीआर) में उपयोग करने पर विचार किया गया है।

द्रुत प्रजनक रिएक्टर में Pu-239 मुख्य विखण्डन तत्व के रूप में कार्य करता है। ईंधन कोर के चारों ओर U-238 के समाच्छद से नाभिकीय तत्वांतरण के कारण नए Pu-239 पैदा होंगे तथा प्रचालन के दौरान अधिक से अधिक Pu-239 की खपत होगी। इसके अलावा द्रुत प्रजनक रिएक्टर के चारों ओर उपस्थित Th-232 का समाच्छद भी न्यूट्रानग्राही अभिक्रिया करेगा जिससे U-233 का निर्माण होगा। U-233 भारत के नाभिकीय विद्युत कार्यक्रम के तृतीय चरण के लिए नाभिकीय रिएक्टर ईंधन हैं।

तृतीय चरण - थोरियम के उपयोग के लिए उन्नत परमाणु ऊर्जा प्रणालियाँ :

भारत के नाभिकीय विद्युत उत्पादन कार्यक्रम के तृतीय चरण में प्रजनक रिएक्टरों में U-233 ईंधन का प्रयोग किया जाना है। भारत में थोरियम के विशाल भंडारों को देखते हुए U-233 ईंधन के प्रयोग से संचालित होने वाले प्रजनक रिएक्टरों का अभिकल्पन एवं

प्रचालन संभव है।

दूसरे चरण के तहत द्रुत प्रजनक रिएक्टर का विवरण :-

परमाणु ऊर्जा उत्पादन के दूसरे चरण में द्रुत प्रजनक रिएक्टरों की स्थापना और उनके साथ पुन:प्रसंस्करण संयंत्रों और प्लूटोनियम आधारित ईंधन संविचरण केंद्रों की स्थापना का प्रस्ताव ही भारतीय नाभिकीय कार्यक्रम एवं परमाणु ऊर्जा तकनीक का मुख्य आधार है। ये द्रुत प्रजनक रिएक्टर प्रणालियाँ जितना ईंधन इस्तेमाल करती हैं, इससे ज्यादा का उत्पादन करती हैं। इनमें ईंधन का इस्तेमाल पी.एच.डब्ल्यू.आर. रिएक्टरों से लगभग साठ गुना ज्यादा तक हो सकता है।

भारत का प्रथम 40 मेगावाट वाला द्रुत प्रजनक परीक्षण रिएक्टर (एफबीटीआर) 18 अक्तूबर, 1985 को क्रांतिक हुआ। तथा इसके टर्बोजेनरेटर को ग्रिड से जोड़ने पर 18 लाख यूनिट बिजली प्राप्त हुई। पिछले साल 2.15 करोड़ यूनिट बिजली पैदा की गई थी। इस ईंधन का बर्न-अप 1,54,000 मेगावाट दिवस प्रति टन तक पहुँचा जो कि मूल रूप से डिजाइन किए गए मानक का चार गुना अधिक है। आईजीसीएआर में एक फास्ट ब्रीडर टेस्ट रिएक्टर 1985 से परिचालन में है, हालांकि यह 2022 तक अपनी पूर्ण 40 मेगावाट

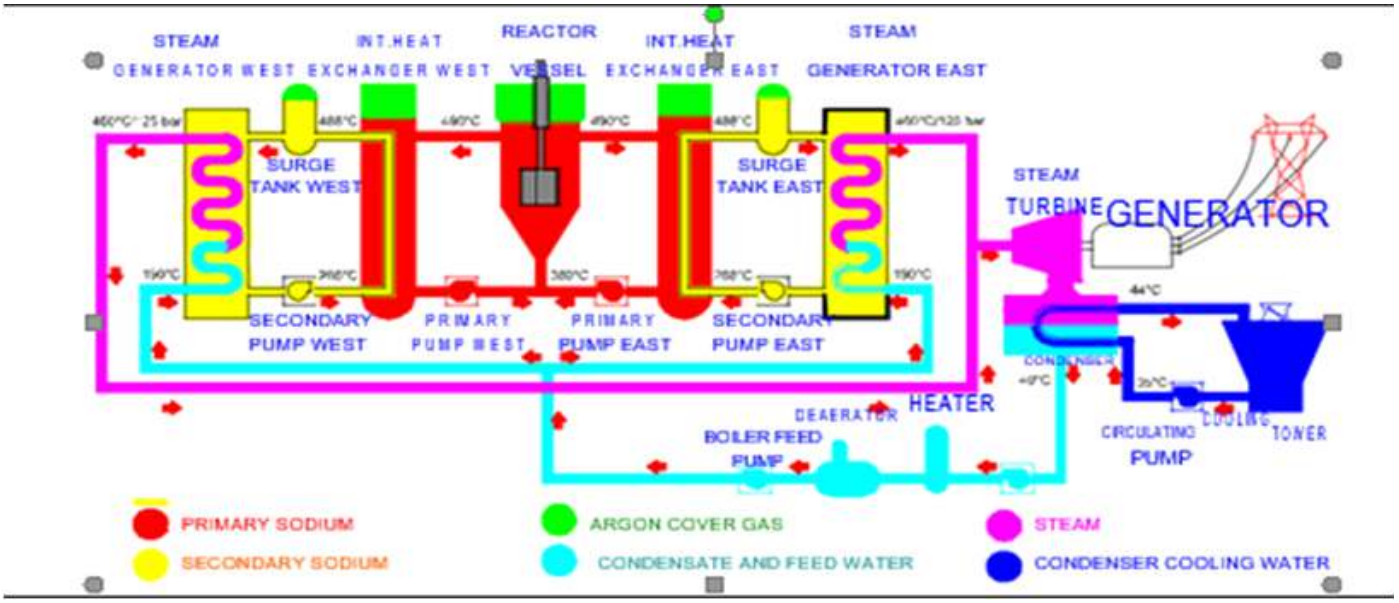

डिजाइन क्षमता तक नहीं पहुंच सका।

भारतीय द्रुत प्रजनक रिएक्टरों (एफबीटीआर) की अद्वितीय विशेषताएँ इस प्रकार हैं :-

1- प्लूटोनियम समृद्ध स्वदेश में विकसित U-Pu कार्बाइड ईंधन है ।

2- भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा उद्योग क्षेत्र से घनिष्ठ संबंध रखते हुए सभी मशीनरी, बाह्य इकाइयों और सामग्री का अभिकल्पन, विकास

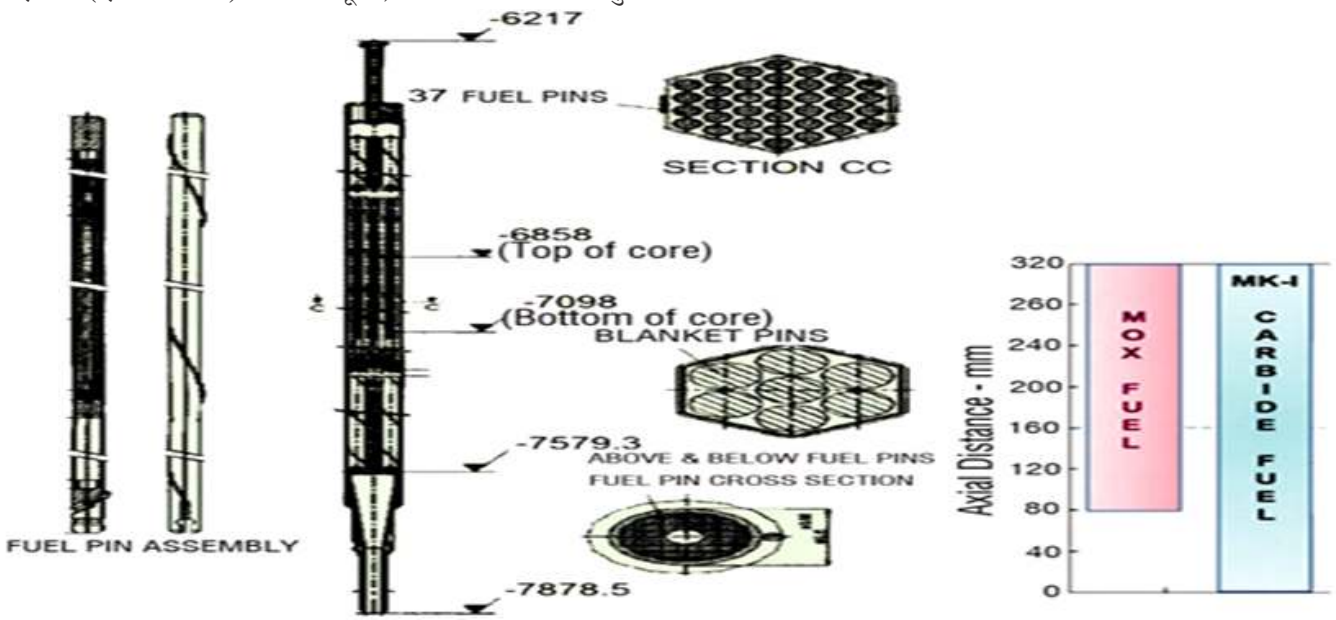

अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जापान और तत्कालीन यूएसएसआर के अलावा भारत छठा देश हुआ जिसके पास एफबीटीआर के निर्माण तथा प्रचालन की प्रौद्योगिकी है।

इस रिएक्टर को 17 मेगावाट विद्युत स्तर पर चलाया गया तथा निर्माण कार्य पूर्णत: भारतीय है।

इंदिरा गांधी परमाणु अनुसंधान केंद्र (आईजीसीएआर) में विकसित किए गए 500 मेगावाट प्रोटोटाइप एफबीआर का निर्माण चल रहा है। इसमें यूरेनियम और प्लूटोनियम के मिश्र ऑक्साइड का

इस्तेमाल ईंधन के रूप में किया जाएगा। इस कार्यक्रम का उद्देश्य उपलब्ध यूरेनियम धातु संसाधनों के जरिए भारत की विद्युत क्षमता को सौ गुना तक बढ़ाना है। पीएफबीआर के अभिकल्पन हेतु आवश्यक है :-

वाष्प-द्रवचालन कार्यविधि का विस्तृत और पूरा ज्ञान होना, विसर्पण(क्रीप), विसर्पण-श्रांति (क्रीप फेटिज्ञ) की पारस्परिक क्रिया तथा बकलिंग और अभिकल्पन इष्टतमीकरण हेतु द्रव-संरचना की अंतर्क्रिया और संरचनात्मक सुस्वस्थता का मूल्यांकन। साथ ही वाष्प द्रवचालन और संरचनात्मक यांत्रिकी के क्षेत्रों में बड़ी संख्या में कोडों का निर्माण करना। कोडों को प्रयोगात्मक आँकडों या अन्तर्राष्ट्रीय बेंचमार्क परीक्षणों द्वारा वैधीकृत किया गया।

द्रुत प्रजनक रिएक्टर के लिए ईंधन हेतु ईंधन का निर्माण वैधीकरण हेतु प्रयोगात्मक आँकड़े एकत्रित किए,उच्च तापीय सोडियम सुविधाओं की स्थापना और उनके सुरक्षित प्रचालन की क्षमता को विकसित किया तथा 8330 K तक के तापमान पर सोडियम में रिएक्टर उपकरणों के परीक्षण हेतु बड़े कंपोनेन्ट वाली जांच की रिग सुविधा को प्रयोग कर द्रुत प्रजनक रिएक्टर एवं द्वितीय चरण के परमाणु विद्युत कार्यक्रम को गति दी है।

500 मेगावाट विद्युत उत्पादन Usंग Pu-239 ईंधन से संचालित द्रुत प्रजनक रिएक्टर की स्थापना का कार्य प्रगति पर है। इसके साथ-साथ भारी पानी रिएक्टरों में प्लूटोनियम आधारित ईंधन की थोड़ी मात्रा में निवेश के साथ-साथ थोरियम आधारित ईंधन के उपयोग का प्रस्ताव है। उम्मीद है कि प्रगत भारी पानी रिएक्टरों से थोरियम का वृहद उपयोग वाले चरण तक पहुँचने में लगने वाली

भारतीय प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर

विश्व में उच्च प्लूटोनियम मात्रायुक्त मार्क-1 मिश्रित कार्बाइड ईंधन कोर का प्रथम बार विकास किया गया। मार्क-2 कोर का निर्माण कार्य ट्रांबे में प्रगति पर है। एफ.बी.टी.आर. में विखंडन के लिए प्रायोगिक एफ.बी.आर. सब-असेम्बली हेतु कई पी.एफ.बी.आर.एम.ओ.एक्स ईंधन तत्वों का निर्माण बीएआरसी द्वारा किया गया है। पीएफबीआर शुरू में यूरेनियम-प्लूटोनियम मिश्रित ऑक्साइड (एमओएक्स) ईंधन के एक कोर का उपयोग करेगा, जो यूरेनियम -U238 'कंबल' से घिरा होगा, जिसमें प्लूटोनियम और U-233 को "प्रजनन" करने के लिए यूरेनियम और थोरियम के एक कंबल का उपयोग करने की योजना है।

द्रुत प्रजनक रिएक्टर ईंधन के पुनर्प्रसंस्करण के लिए लेड मिनिसेल जिसे अब काम्पैक्ट रीप्रोसेसिंग फैसिलिटी फॉर एडवांस फ्यूल इन लेड सेल (कोरल) कहा जाता है, कलपाक्कम में स्थापित किया गया है। ये संयंत्र प्रचालन स्थापित कर भारत को आत्मनिर्भरता की ओर प्रेरित करेंगे।

द्रुत प्रजनक रिएक्टर एवं द्वितीय चरण के परमाणु विद्युत कार्यक्रम के लिए प्रौद्योगिकी का विकास एवं अनुरूपी प्रयोगों और उपकरणों के विकास के माध्यम से द्रुत प्रजनक रिएक्टर कार्यक्रम हेतु हमने विश्लेषणात्मक कोडों और निष्पादन मूल्यांकन कोडों के अवधि में कमी आएगी।

प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर (पीएफबीआर) को भाविनी (भारतीय नाभिकीय विद्युत निगम लिमिटेड) द्वारा विकसित किया गया है, जो परमाणु ऊर्जा विभाग के तहत एक सार्वजनिक क्षेत्र का उद्यम है, जिसे 2003 में फास्ट ब्रीडर रिएक्टरों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए स्थापित किया गया था। पीएफबीआर का निर्माण 2004 में शुरू हुआ, जिसकी मूल अनुमानित समाप्ति तिथि 2010 थी। पीएफबीआर की कोर लोडिंग प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की उपस्थिति में शुरू हुई जिससे इसका, निर्माण कोर लोडिंग की शुरुआत के साथ, 4 मार्च 2024 को पूरा हुआ। पीएफबीआर को दिसंबर 2024 में सेवा में लाया जाना निर्धारित है। पीएफबीआर भारत का पहला स्वदेशी पीएफबीआर है और यह भारत की तीन-चरणीय परमाणु ऊर्जा रणनीति में द्वितीय चरण की शुरुआत का प्रतीक है। इसका मुख्य उद्देश्य भारत को अपने प्रचुर थोरियम भंडार का उपयोग करने में मदद करना है। पीएफबीआर से परे बेहतर अर्थव्यवस्था और बढ़ी हुई सुरक्षा के साथ छह और एफबीआर (एफबीआर 600 मेगावाट) का निर्माण करने की योजना प्रगति पर है।

संजय कुमार,
फोरमैन-डी,तकनीकी सेवाएं इकाई

भारत के विकास में कृषि की भूमिका

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ की अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर करती है। कृषि न केवल हमारे लिए भोजन की आपूर्ति करती है, बल्कि यह देश के आर्थिक और सामाजिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत के विकास में कृषि की भूमिका को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

1. **आर्थिक योगदान-** कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। यह देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में महत्वपूर्ण योगदान देती है। कृषि गतिविधियाँ न केवल रोजगार पैदा करती हैं, बल्कि निर्यात के माध्यम से विदेशी मुद्रा भी अर्जित करती हैं।

2. **रोजगार सृजन-** कृषि भारतीय श्रम शक्ति को रोजगार का एक बड़ा हिस्सा प्रदान करती है। कृषि क्षेत्र देश की कुल जनसंख्या के लगभग 50% भाग को प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से रोजगार प्रदान करता है। कृषि में नवाचार और प्रौद्योगिकी से उत्पादकता बढ़ाई जा रही है जिससे किसानों की आय में बढ़ोत्तरी हो रही है। आज के आधुनिक युग में भारत में कृषि के लिए आधुनिक कृषि यंत्रों, उपकरणों, बीजों तथा उर्वरकों के उपयोग के कारण इनके उत्पादन के लिए नए उद्योग-धंधों का निर्माण हो रहा है जिसके परिणामस्वरूप नए रोजगार के अवसर भी देखने को मिल रहे हैं।

3. **औद्योगिक क्षेत्र हेतु वस्तुओं की आपूर्ति-** भारतीय उद्योगों का विकास काफी हद तक कृषि पर निर्भर है। देश के अधिकतर बड़े उद्योग जैसे—वस्त्र उद्योग, चीनी उद्योग, पटसन उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण आदि प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से कृषि की उत्पादकता एवं उसके विकास की गति पर निर्भर करते हैं।

4. **खाद्य सुरक्षा-** कृषि देश की खाद्य सुरक्षा का आधार है। सही कृषि नीतियों और तकनीकों के माध्यम से भारत ने खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त की है, जिससे भुखमरी और कुपोषण की समस्याओं को कम किया गया है।

5. **कृषि और ग्रामीण विकास-** कृषि की वृद्धि सीधे भारत देश के ग्रामीण विकास से जुड़ी है। कृषि क्षेत्र में सुधार ग्रामीण अवसंरचना, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार को प्रेरित करता है। यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करता है और जीवन स्तर में सुधार करता है।

6. **प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन-** कृषि क्षेत्र का प्राकृतिक संसाधनों जैसे जल, मिट्टी और वनस्पति पर गहरा प्रभाव पड़ता है। सही कृषि पद्धतियों के माध्यम से इन संसाधनों का टिकाऊ प्रबंधन सुनिश्चित किया जा सकता है, जो भारत देश के दीर्घकालीन विकास के लिए आवश्यक है।

7. **समाज और संस्कृति-** कृषि भारतीय समाज और संस्कृति का अभिन्न अंग है। यह ग्रामीण जीवन शैली, पारंपरिक ज्ञान और सांस्कृतिक गतिविधियों को बनाए रखने में सहायक है।

निष्कर्षत: कृषि भारत के समग्र विकास में एक आधारभूत भूमिका निभाती है। इसके आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय लाभों को मान्यता देना और कृषि क्षेत्र में आवश्यक सुधार लागू करना भारत के सतत विकास के लिए महत्वपूर्ण है। देश की सरकार, समाज के सभी वर्गों के लोगों और किसानों को मिलकर कृषि के विकास के लिए सतत प्रयासरत रहना चाहिए ताकि भारत की समृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति की जा सके।

-धिरज तिवारी
सहायक ग्रेड-1 (मा.सं.)

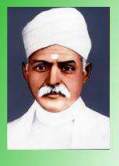

हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेदभाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।

- मदन मोहन मालवीय

एन.पी.सी.आई.एल की विकास यात्रा

भारत में परमाणु ऊर्जा की उत्पत्ति :-

भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद 1947 में देश की ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए परमाणु ऊर्जा के विकास के संबंध में नीतियां बनाई गईं तथा 1948 में परमाणु ऊर्जा आयोग की स्थापना की गई। आयोग द्वारा बनाई गई नीतियों को लागू करने के लिए 1954 में डॉ भाभा की अध्यक्षता में परमाणु ऊर्जा विभाग की स्थापना की गई। अगस्त 1956 में भारत का प्रथम रिएक्टर (अप्सरा) 'भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र द्वारा निर्मित किया गया।

स्थापना :-

17 सितंबर 1987 को एन.पी.सी.आई.एल. की स्थापना हुई। यह भारत सरकार के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत एक सार्वजनिक क्षेत्र का उद्यम है, इसका मुख्यालय मुम्बई में है।

परमाणु उद्योगों का विकास एवं उपलब्धियां :-

एनपीसीआईएल ने अपने प्रौद्योगिकी विकास के बल पर भारत के विभिन्न क्षेत्रों में परमाणु विद्युत इकाइयां स्थापित करके संचालित की हैं। भारत का पहला भारतीय प्रौद्योगिकी से निर्मित संयंत्र 700 MWe रिएक्टर काकरापार-3 का सफलतापूर्वक संचालन प्रारंभ कर दिया है। साथ ही भारतीय प्रौद्योगिकी द्वारा निर्मित भारत का पहला PFBR रिएक्टर कलपक्कम (तमिलनाडु) 500 MWe जल्द ही प्रचालनरत होने वाला है। भारतीय ऊर्जा संयंत्रों ने उच्च उपलब्धता कारक सुरक्षा प्रदर्शन और अंतर्राष्ट्रीय मानकों के बराबर सबसे लंबे समय तक निरंतर प्रचालन दर्ज किया है। भारत में उपलब्धता कारक, एनपीपी निरंतर प्रचालन करके भारतीय परमाणु ऊर्जा संयंत्रों ने भी अंतर्राष्ट्रीय बेंचमार्क के बराबर प्रदर्शन किया है। सुरक्षा के मामले में भारतीय परमाणु ऊर्जा रिएक्टरों का प्रदर्शन उत्कृष्ट रहा है। 592 रिएक्टर वर्षों के सुरक्षित दुर्घटना मुक्त प्रचालन के साथ एन.पी.सी.आई.एल ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है।

भारत का परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम :-

भारतीय परमाणु कार्यक्रम की परिकल्पना अद्वितीय अनुक्रमिक तीन चरणों और संबंधित प्रौद्योगिकियों के आधार पर की गई थी, जिसका उद्देश्य स्वदेशी परमाणु संसाधन प्रोफाइल में मामूली यूरेनियम और प्रचुर मात्रा में थोरियम संसाधनों का ईष्टतम उपयोग करना था, जहां एक चरण में खर्च किए गए ईंधन को अगले चरण के लिए ईंधन बनाने के लिए पुन:संसाधित किया जाता है। इससे ईंधन की ऊर्जा क्षमता कई गुना बढ़ जाती है, और उत्पन्न होने वाले अपशिष्ट की मात्रा बहुत कम हो जाती है।

परियोजना क्रियान्वयन :-

एन.पी.सी.आई.एल ने परमाणु ऊर्जा परियोजनाओं की क्रियान्वयन पद्धति और रणनीतियों में महारत हासिल की है और निर्माण की अवधि में कमी लाकर अन्य महत्वपूर्ण परियोजनाएं संचालित की हैं, 5 वर्षों में टीएपीएस 3 और 4 तथा कैगा-3 का निर्माण, कमीशनिंग जिसमें लागत में पर्याप्त बचत हुई है। साथ ही काकरापार-3 और 4 कमीशनिंग व सफलतापूर्वक प्रचालन के साथ कलपक्कम (पी.एफ बी.आर) की ईंधन लोडिंग एक महान उपलब्धि है। ध्यातव्य है कि भाविनी कार्यक्रम के तहत भारत का प्रथम फास्ट ब्रीडर रिएक्टर (500 मेगावाट) ऊर्जा सुरक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कदम है।

परमाणु ऊर्जा टैरिफ एवं लागत :-

परमाणु ऊर्जा के टैरिफ कोयला खदानों से दूरस्थ ताप विद्युत संयंत्रों के टैरिफ से प्रतिस्पर्धी है। भारतीय परमाणु रिएक्टर की निर्माण लागत विश्व के अन्य रिएक्टरों के बराबर है। इस प्रकार भारत में परमाणु ऊर्जा बिजली उत्पादन के लिए एक आर्थिक रूप से प्रतिस्पर्धी विकल्प के रूप में विकसित हुई है।

पर्यावरण में कार्बन उत्सर्जन में कमी —

ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन में जलवायु परिवर्तन आज दुनिया के सामने सबसे महत्वपूर्ण चुनौतियों में से एक है। ऊर्जा के नवीकरणीय स्रोत जैसे पवन ऊर्जा, सौर ऊर्जा के समान परमाणु ऊर्जा भी पर्यावरण के लिए सौम्य है, कोयला आधारित थर्मल पावर स्टेशन की अपेक्षा बहुत कम ईंधन की आवश्यकता होती है, ग्रीन डाउस गैस, कार्बन उत्सर्जन की संभावना न के बराबर है। ईंधन कम लगने से परिवहन अवसंरचना बहुत कम है। जहां तापीय विद्युत ऊर्जा में ईंधन कोयला मिलियन टनों की आवश्यकता होती है वहीं कुछ टनों में परमाणु ईंधन इस ऊर्जा उत्पादन के ईंधन की पूर्ति कर देता है।

भविष्य की योजनाएं :—

भारत जहां नए-नए कार्यक्रम एवं भाविनी, अश्विनी द्वारा नये-नये संयंत्रों के संचालन में गति आई है, वहीं भविष्य में 8 स्वदेशी रूप से डिजाइन किए गए 700 मेगावाट बिजली उत्पादन क्षमता वाले पी.एच.डब्ल्यू.आर. और 10 नए फ्लीट मोड वाले विद्युत संयंत्र स्थापित करने की परिकल्पना की गई है। द्वितीय चरण के पी. एफ.बी.आर. के संचालन में प्रगति के साथ 1000 मेगावाट क्षमता के आयातित तकनीक से हल्के पानी के रिएक्टरों की स्थापना की ओर भारत ने कदम बढ़ाए हैं।

निष्कर्ष एवं आगे की राह —

डॉ. भाभा द्वारा पचास के दशक की शुरुआत में परिकल्पित भारतीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम स्वदेशी प्रयासों से विकसित एवं सफलतापूर्वक लागू किया गया है। भारत उन्नत परमाणु प्रौद्योगिकी रखने वाले देशों के कुलीन वर्ग में शामिल हो गया है, भारत में परमाणु ऊर्जा व्यापक क्षमताओं के साथ परमाणु ऊर्जा उत्पादन तकनीक में परिपक्व हो गया है। आगे की राह में चुनौती तीन चरणीय कार्यक्रम को आगे बढ़ाना, थोरियम के उपयोग के लिए प्रौद्योगिकी का विकास और वाणिज्यिक रूप से उपयोग करना और राष्ट्र की दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करना है।

-आकाश पुर्विया
तकनीशियन 'बी', यांत्रिकी

भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम

सभ्यता की शुरुआत से ही मानव अंतरिक्ष की रोमांचक कल्पनाएं करता रहा है। इन रोमांचक कल्पनाओं में अंतरिक्ष कभी अध्यात्म का विषय बना तो कभी कविताओं और दंत-कथाओं का। पारलौकिकतावाद से प्रभावित होकर कभी मानव ने अपनी कल्पना के स्वर्ग और नरक अंतरिक्ष में स्थापित कर दिए तो कभी मानवतावाद के प्रभाव में आकर पृथ्वी को केंद्र में रखा और अंतरिक्ष को उसकी परिधि मान लिया।

धीरे-धीरे जब सभ्यता और समझ विकसित हुई तो मानव ने अंतरिक्ष के रहस्यों को समझने के लिए प्रेक्षण यंत्र बनाए, जिनमें दूरबीनें प्रमुख थीं। इसके बाद प्रारम्भ हुआ विज्ञान के माध्यम से अंतरिक्ष को समझने का प्रयास। इस क्रम में आर्यभट्ट से लेकर गैलीलियो, कॉपरनिकस एवं न्यूटन तक प्रयास करते रहे। न्यूटन के बाद आधुनिक अंतरिक्ष विज्ञान का विकास हुआ, जो आज इतना परिपक्व हो गया है कि हम 'मानव' को अंतरिक्ष में भेजने के साथ अंतरिक्ष पर्यटन एवं अंतरिक्ष में कॉलोनियां बसाने की भी कल्पना कर रहे हैं।

भारत में आधुनिक अंतरिक्ष कार्यक्रम के जनक डॉ. विक्रम साराभाई थे। भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का प्रथम उद्देश्य राष्ट्र हित में अंतरिक्ष तकनीक एवं उसके अनुप्रयोगों का विकास करना है। भारत ने जब अपने अंतरिक्ष कार्यक्रम की शुरुआत की थी तो कई विकसित देशों ने इसका मजाक बनाया था, परंतु भारत ने अपने कम बज़ट में भी उच्च अंतरिक्ष तकनीक को हासिल करने में सफलता प्राप्त की और आज वह श्रेष्ठ अंतरिक्ष तकनीक वाले देशों की कतार में शामिल है।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन :

इसे देश के प्रथम प्रधानमंत्री स्व. पं. जवाहरलाल नेहरू और उनके करीबी सहयोगी वैज्ञानिक डॉ. विक्रम साराभाई के प्रयासों से वर्ष १९६२ में भारतीय राष्ट्रीय अनुसंधान समिति के नाम से स्थापित किया गया, जो सीधे भारत के प्रधानमंत्री को रिपोर्ट करता है। वर्ष 1969 में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान (**इसरो**) की स्थापना हुई। स्थापना के पश्चात् भारत के लिए **इसरो** ने कई कार्यक्रमों एवं अनुसंधानों को सफल बनाया है। इसने न सिर्फ भारत के कल्याण के लिए बल्कि भारत को विश्व के समक्ष सॉफ्ट पॉवर के रूप में स्थापित करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत में कई अंतरिक्ष केंद्र हैं, जिनमें श्रीहरिकोटा स्थित मुख्य प्रक्षेपण केंद्र, तिरुअनंतपुरम स्थित विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र और जोधपुर स्थित सुदूर संवेदन केंद्र शामिल हैं। इसरो का अंतरिक्ष कार्यक्रम तेजी से बढ़ा है, जिससे वह वैश्विक अंतरिक्ष समुदाय में एक प्रमुख खिलाड़ी बन गया है।

भारत की अंतरिक्ष उपलब्धियां :

भारत की अंतरिक्ष के क्षेत्र में उपलब्धियों की बात करें तो भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने गत वर्षों में ऐसी कई उपलब्धियाँ हासिल की हैं, जिसने अंतरिक्ष विज्ञान में अग्रणी कहे जाने वाले अमेरिका और रूस जैसे देशों को भी चौंकाया है।

1. देश में दूरसंचार प्रसारण और ब्रॉडबैंड अवसंरचना के क्षेत्र में विकास के लिए इसरो ने उपग्रह संचार के माध्यम से कार्यक्रमों को चलाया। वर्तमान में भारत संचार सेवाओं के लिए 200 से अधिक ट्रांसपोंडरों का उपयोग हो रहा है। इन उपग्रहों के माध्यम से भारत में दूरसंचार, टेलीविजन, ब्रॉडबैंड, विडियो, आपदा प्रबंधन, खोज और बचाव अभियान जैसी सेवाएं प्रदान कर पाना संभव हुआ है।

2. अब कई देश भारत के प्रक्षेपण यान से अपने उपग्रहों को अंतरिक्ष में भेजने लगे हैं, इनमें ऐसे देश भी शामिल हैं जिनके पास उपग्रह प्रक्षेपण की उन्नत तकनीक है। 14 फरवरी 2017 को इसरो ने पीएसएलवी के जरिए एक साथ 104 सैटेलाइट लॉन्च कर विश्व में कीर्तमान स्थापित किया। इससे पहले इसरो ने वर्ष 2016 में एक साथ 20 सैटेलाइट प्रक्षेपित किए थे जबकि विश्व में सबसे अधिक रूस ने वर्ष 2014 में 37 सैटेलाइट लॉन्च कर रिकार्ड बनाया था। इस अभियान में भेजे गए 104 उपग्रहों में से तीन भारत के थे और शेष 101 उपग्रह दूसरे देशों के थे।

3. भारत में इसरो की महत्त्वपूर्ण भूमिका भू-पर्यवेक्षण के क्षेत्र में भी रही है। भारत में मौसम पूर्वानुमान, आपदा प्रबंधन, संसाधनों की मैपिंग तथा भू-पर्यवेक्षण के माध्यम से वनयोजन आदि करने के लिए भू-पर्यवेक्षण तकनीक की आवश्यकता होती है। इसरो इस क्षेत्र में अच्छा काम कर रहा है।

4. भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम में चंद्रयान-I, मंगलयान और एस्ट्रोसैट जैसे सफल मिशन शामिल हैं। अगस्त 2023 में, भारत चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव, जो कि एक अज्ञात क्षेत्र है, पर अंतरिक्ष यान उतारने वाला चौथा देश बन गया है।

5. 25 सितंबर 2014 को भारत ने मंगल ग्रह की कक्षा में सफलतापूर्वक मंगल यान स्थापित किया। इसकी उपलब्धि का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि भारत ऐसा पहला देश था, जिसने अपने पहले ही प्रयास में यह उपलब्धि हासिल की। इसके अलावा यह अभियान इतना सस्ता था कि अंतरिक्ष मिशन की पृष्ठभूमि पर बनी एक फिल्म ग्रैविटी का बजट भी भारतीय मिशन से महंगा था।

6. एक और महत्त्वपूर्ण क्षेत्र उपग्रह आधारित नौवहन है। नौवहन तकनीक का उपयोग भारत में वायु सेवाओं को मज़बूत बनाने तथा इसकी गुणवत्ता को सुधारने के लिए होता है। साथ ही वर्तमान समय में वायु आधारित सुरक्षा चुनौतियाँ भी कम नहीं हैं। इनको ध्यान में रखकर भारत ने गगन कार्यक्रम की शुरुआत की है।

अंतरिक्ष कार्यक्रम से संबद्ध वर्तमान चुनौतियाँ :

1. भारत के पास एस्ट्रोनॉट्स को प्रशिक्षित करने तथा मानव अंतरिक्ष उड़ान के लिए लॉन्च व्हीकल की उन्नत तकनीकों का अभाव है।
2. लॉन्च व्हीकल, लॉन्च क्रू-मोड्यूल, स्पेस कैप्सूल, रि-एंट्री टेक्नोलॉजी, लाइफ सपोर्ट सिस्टम, स्पेससूट आदि अभी विकास की प्रक्रिया में हैं।
3. मानव अंतरिक्ष उड़ान के लिए श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र की तकनीकी दक्षता बढ़ाने की आवश्यकता है।
4. अंतरिक्ष अभियानों की दर अधिक होने के साथ ही अंतरिक्ष मलबों का संचय भी बढ़ेगा। चूंकि कोई भी पिंड बहुत तेज़ गति से पृथ्वी की परिक्रमा करता है, इसलिए अंतरिक्ष मलबे का एक छोटा-सा टुकड़ा भी अंतरिक्ष यान के लिए भारी घातक साबित हो सकता है।

अनुज कुमार
वैज्ञानिक सहायक-सी, सीएमयू,

एनपीसीआईएल स्थानांतरण लाभ

एनपीसीआईएल में दो प्रकार के स्थानांतरण होते हैं:-

1. **व्यक्तिगत हित में स्थानांतरण :** व्यक्तिगत हित में स्थानांतरण के मामले में कोई लाभ नहीं दिया जाता है।
2. **निगम हित में स्थानांतरण :** निगम हित में स्थानांतरण के मामले में पात्रता नीचे दिए अनुसार विनियमित की जाएगी:-

(i) यात्रा भत्ता (टीए) :

कर्मचारियों को पुराने स्टेशन से नए स्टेशन तक स्वयं और उनके परिवार के आश्रित सदस्यों की यात्रा की लागत की प्रतिपूर्ति की जाती है। इसमें रेल, सड़क या हवाई यात्रा के यथाप्रयोज्य किराया शामिल है।

नए स्टेशन पर निगम के आवास की अनुपलब्धता और कर्मचारी द्वारा अपने परिवार को पुराने मुख्यालय में छोड़ देने की स्थिति में, वह परिवार को नए स्टेशन पर ले आने पर सामान्य टीए के अलावा आने-जाने हेतु एक अतिरिक्त किराए का हकदार होगा।

(ii) व्यक्तिगत सामान का परिवहन:

लेवल	व्यक्तिगत सामान के परिवहन हेतु प्रतिपूर्ति
ए और बी	पुराने स्टेशन से नए स्टेशन पर निवास तक 9 एमटी ट्रक किराए पर लेने के लिए सड़क मार्ग से परिवहन की वास्तविक लागत जो 37/- रुपये प्रति किमी तक सीमित है। जिन अधिकारियों को अपने निवास पर कार्यालय चलाने की अनुमति दी गई है, वे एक अतिरिक्त 3 मीट्रिक टन ट्रक किराये पर ले सकते हैं, जिसकी वास्तविक लागत 25 रुपये प्रति किमी तक सीमित है।
सी, डी, ई एवं इससे नीचे	पुराने स्टेशन से नए स्टेशन पर निवास तक 9 एमटी ट्रक किराए पर लेने के लिए सड़क मार्ग से परिवहन की वास्तविक लागत जो 37/- रुपये प्रति किमी तक सीमित है।

परिवहन के लिए पात्रता निम्नानुसार होगी:

लेवल ए से ई	एक मोटर कार आदि या एक मोटर साइकिल/स्कूटर
लेवल एफ और उससे नीचे	एक मोटर साइकिल स्कूटर/मोपेड/ बाइक

(iii) वाहन परिवहन (कार) ऑटो और टैक्सी के लिए निर्धारित दर

अपनी कार/टैक्सी से की गई यात्रा के लिए	रु.19/- प्रति किमी
ऑटो रिक्शा/अपने स्कूटर से की गई यात्रा के लिए	रु. 9/- प्रति किमी

नोट : विभाग में कार खरीदने की जानकारी दी जानी अनिवार्य है।

(iv) समग्र स्थानांतरण अनुदान:

स्थानांतरण, जिसमें स्टेशन बदलना शामिल है, के मामले में समग्र स्थानांतरण अनुदान एक महीने के मूल वेतन के बराबर होगा। समग्र स्थानांतरण अनुदान में पैकिंग भत्ता, दैनिक भत्ता और स्थानीय सड़क माइलेज शुल्क शामिल हैं।

समग्र स्थानांतरण अनुदान का भुगतान पुराने स्टेशन से कार्यमुक्त होने की तिथि पर पिछले महीने के मूल वेतन के बराबर होगा।

"यदि पति और पत्नी दोनों एनपीसीआईएल में कार्यरत हैं एवं एक ही मुख्यालय पर तैनात हैं और उनमें से किसी एक का स्थानांतरण होने के छह महीने के भीतर ही दूसरे का स्थानान्तरण समान मुख्यालय में हो जाता है, तो उनमें से केवल एक ही सामान भत्ता, एकमुश्त अनुदान, पैकिंग भत्ता के लाभ का हकदार होगा।"

(v) कार्यभार ग्रहण करने का समय :

कर्मचारी को दिया जाने वाला कार्यभार ग्रहण करने का समय नीचे दी गई दूरी के आधार पर होगा:

पुराने मुख्यालय एवं नए मुख्यालय के बीच की दूरी	अनुमेय कार्यभार ग्रहण समय	अनुमेय कार्यभार ग्रहण समय जब स्थानांतरण में सड़क मार्ग से 200 किमी से अधिक की निरंतर यात्रा शामिल हो।
1000 किमी या उससे कम	10 दिन	12 दिन
1000 किमी से अधिक एवं 2000km से कम	12 दिन	15 दिन
2000 किमी से अधिक	15 दिन, हवाई यात्रा के मामले में अधिकतम 12 दिन है, को छोड़कर	15 दिन

कार्यभार ग्रहण करने का समय पुराने स्टेशन पर पद का कार्यभार छोड़ने की तिथि से शुरू होगा।

जब कार्यभार ग्रहण करने के बाद अवकाश आता है, तो ऊपर बताए अनुसार कार्यभार ग्रहण करने का समय ऐसे अवकाश को कवर करने के लिए बढ़ा हुआ माना जाएगा।

(vi) पात्रता की प्रकृति :

कर्मचारियों का वर्गीकरण

7वें वेतन आयोग में वेतन लेवल	एनपीसीआईएल (टीए) नियमों में समतुल्य लेवल
सीएमडी और निदेशक	लेवल ए
लेवल 14 से 16 (जीपी-1000 और उससे अधिक+ एचएजी और उससे अधिक	लेवल बी
लेवल 12 से 13ए	लेवल सी
लेवल 9 से 11	लेवल डी
लेवल 6 से 8	लेवल ई
लेवल 5	लेवल एफ
लेवल 4	लेवल जी
लेवल 3 और उससे नीचे	लेवल एच

(क) रेल मार्ग से यात्रा:

लेवल यात्रा	पात्रता
लेवल ए	एसी प्रथम, प्रथम श्रेणी
लेवल बी और सी	एसी प्रथम, प्रथम श्रेणी
लेवल डी और ई	एसी II टियर
लेवल एफ और उससे नीचे	प्रथम श्रेणी/एसी-III टियर/ एसी चेयर कार

(ख) हवाई मार्ग से यात्रा:

लेवल यात्रा	पात्रता
लेवल ए	बिजनेस /क्लब क्लास
लेवल बी	बिजनेस /क्लब क्लास
लेवल सी से ई	इकोनॉमी क्लास
लेवल एफ और उससे नीचे	पात्र नहीं

नोट: तीसरे पक्ष द्वारा हवाई टिकट बुक करने की अनुमति नहीं है।

(vii) अग्रिम :

स्थानांतरण पर जाने वाले कर्मचारी को अपने और अपने परिवार के सदस्यों के लिए यात्रा के लिए अनुमानित किराए, समग्र स्थानांतरण अनुदान, वाहन शुल्क और व्यक्तिगत सामान के हस्तांतरण पर होने वाले खर्चों को पूरा करने के लिए अग्रिम दिया जाता है।

(viii) दावा :

कर्मचारी द्वारा वापसी यात्रा पूरी होने के तुरंत बाद 30 दिनों से पहले अग्रिम का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

कोई भी दावा जिसके लिए कोई अग्रिम नहीं लिया गया है, यदि उसे तीन महीने के भीतर प्रस्तुत नहीं किया जाता है, तो उसे जब्त कर लिया जाएगा।

-अरविंद कुमार
स्थापना अनुभाग, मा.सं. समूह

बुद्धि

एक गाँव में एक बुनकर रहता था, उसकी बुद्धि की ख्याति दूर दूर तक फैली थी।

एक बार वहाँ के राजा ने उसे चर्चा पर बुलाया। काफी देर चर्चा के बाद राजा ने कहा— महाशय, आप बहुत ज्ञानी है, इतने पढ़े लिखे हैं पर आपका लड़का इतना मूर्ख क्यों है? उसे भी कुछ सिखाएं। उसे तो सोने चांदी में मूल्यवान क्या है यह भी नहीं पता। यह कहकर राजा जोर से हँस पड़ा।

बुनकर को बुरा लगा, वह घर गया व लड़के से पूछा सोना व चांदी में अधिक मूल्यवान क्या है? सोना, बिना एक पल भी गंवाए उसके लड़के ने कहा।

तुम्हारा उत्तर तो ठीक है, फिर राजा ने ऐसा क्यूं कहा? सभी के बीच मेरी खिल्ली भी उड़ाई।

लड़के की समझ में आ गया, वह बोला राजा गाँव के पास एक खुला दरबार लगाते हैं, जिसमें सभी प्रतिष्ठित व्यक्ति शामिल होते हैं। यह दरबार मेरे स्कूल जाने के मार्ग में ही पड़ता है। मुझे देखते ही बुलवा लेते हैं, अपने एक हाथ में सोने का व दूसरे में चांदी का सिक्का रखकर, जो अधिक मूल्यवान है वह ले लेने को कहते हैं...

और मैं चांदी का सिक्का ले लेता हूं। सभी ठहाका लगाकर हँसते हैं व मज़ा लेते हैं। ऐसा तक़रीबन हर दूसरे दिन होता है।

फिर तुम सोने का सिक्का क्यों नहीं उठाते, चार लोगों के बीच अपनी फ़जीहत कराते हो व साथ में मेरी भी?

लड़का हँसा व हाथ पकड़कर पिता को अंदर ले गया और कपाट से एक पेटी निकालकर दिखाई जो चांदी के सिक्कों से भरी हुई थी। यह देख वो बुनकर हतप्रभ रह गया।

लड़का बोला जिस दिन मैंने सोने का सिक्का उठा लिया, उस दिन से यह खेल बंद हो जाएगा।

वो मुझे मूर्ख समझकर मज़ा लेते हैं तो लेने दें, यदि मैं बुद्धिमानी दिखाऊंगा तो कुछ नहीं मिलेगा। बुनकर का बेटा हूँ अक़्ल से काम लेता हूँ।

मूर्ख होना अलग बात है और मूर्ख समझा जाना अलग...

एक स्वर्णिम मौके का फायदा उठाने से बेहतर है, हर मौके को स्वर्णिम बनाने का प्रयास किया जाए।

-धनेश रा. परमार
सहायक निदेशक(राजभाषा)
प.ऊ.वि, मुंबई

बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान

"बेटी है तो - है मां, बहन, लक्ष्मी और दुर्गा ॥
अगर की भ्रूण हत्या, तो नरक में भी नहीं मिलेगी जगह।।"

बेटी बचाओ और बेटी पढ़ाओ अभियान की शुरूआत प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 2 2 जनवरी, 2015 को हरियाणा के पानीपत में की थी। इसको 2014-15 में 100 जिलों में शुरू किया गया था। तीन मंत्रालय मिलकर इस योजना को चलाते हैं जोकि— महिला एवं बाल कल्याण मंत्रालय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय तथा मानव संसाधन विकास मंत्रालय हैं। ऐसा कहा भी गया है कि जहां स्त्री की पूजा होती है, वहीं देवता भी निवास करते हैं।

उद्देश्य :

बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ अभियान का उद्देश्य शिशु लिंग अनुपात में कमी को रोकना है। इसके अंतर्गत महिलाओं का सशक्तिकरण करना है। इस अभियान के माध्यम से ना केवल बेटियों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है बल्कि बेटियों को उच्च शिक्षा के लिए भी प्रोत्साहित करना है। इसका उद्देश्य बेटियों को उच्च शिक्षा दिलाने के लिए बेटी के माता-पिता को भी प्रोत्साहित करना है। यह अभियान बालिकाओं की सुरक्षा और शिक्षा को सुनिश्चित करता है। यह बेटी और बेटे के बीच समानता स्थापित करता है। इसके द्वारा बेटियों की शिक्षा व सामाजिक भागीदारी सुनिश्चित होती है। इसका उद्देश्य सामाजिक कुरीतियों को दूर करना भी है।

सुकन्या समृद्धि योजना इसी की एक पहल है जिसमें ८.२ प्रतिशत की दर से ब्याज देकर बेटी की पढ़ाई, विवाह आदि के लिए कर मुक्त सहायता प्रदान की जाती है। इसी पहल में बालिका समृद्धि योजना, लाड़ली योजना और कन्या कोष योजना, राष्ट्रीय स्तर की प्रोत्साहन योजनाएं शामिल हैं।

इसके अंतर्गत भारत में जागरूकता और प्रचार अभियान चलाना तथा चुने गए 100 जिलों में विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित कार्य करना भी शामिल है। बुनियादी स्तर पर लोगों को प्रशिक्षित करके संवेदनशील और जागरूक बनाना तथा सामुदायिक एकजुटता के माध्यम से उनकी सोच को बदलने पर जोर दिया जाना है। इस अभियान के अंतर्गत भ्रूण हत्या को रोकने के लिए सख्त कदम उठाए गए हैं।

बेटी बचाओ क्यों ? :—

कन्या भ्रूण हत्या से समाज की गति रूक जाएगी। अतः इसे रोकना आवश्यक ही नहीं हमारी नैतिक व मौलिक जिम्मेदारी भी है। वह जन्मदात्री ही नहीं चरित्र निर्मात्री भी है। कौन नहीं जानता कि सृष्टि के चक्र को अविरल चलाने को माँ, राखी बांधने को बहिन, कहानी सुनाने को दादी, जिद पूरी करने को मौसी, खीर खिलाने को भाभी, जीवन साथी हेतु पत्नी इन जरूरतों को पूरा करने हेतु बेटी का जिन्दा रहना जरूरी है। बेटी माँ बन गौरव पाती है, नौ माह तक गर्भस्थ शिशु को अपने रक्त की एक-एक बूँद से सींचकर जन्म देती है व त्यागी व निस्वार्थी होने की वजह से शिशु को पति का नाम दे, आत्म संतुष्टि का अनुभव करती है।

भ्रूण हत्या के तहत गर्भवती महिला अत्यधिक रक्तस्राव से, गर्भाशय क्षतिग्रस्त होने से संक्रमण हो जाने से या तो दुबारा माँ नहीं बन पाती या संसार से ही विदा हो जाती है। अतः बेटी को बचाएं, माँ को जीवित व समाज की व्यवस्था बरकरार रहने दें। हत्या करना घोर अपराध है, सजा का भी प्रावधान है पर आज तक किसी को भी सजा नहीं मिल सकी है। यहाँ तक कि डॉक्टर जीवन देते हैं, पर पैसे की लालच में वे भी जीवन लेने से नहीं चूकते। सरकारी आंकड़ों के अनुसार वर्ष 1981 में 1000 पुरुषों पर 935 महिलाएं, 1991 में 1000 पुरुषों पर 927 महिलाएं, 2011 में 919 महिलाएं ही रह गईं, यह हम सबके लिए एक चुनौती है।

बेटी है सृष्टि के निर्माण का आधार ।
बेटी बिना परिवार का सपना है, असंभव और बेकार ।।

बेटी पढ़ाओ क्यों? :-

देश को पूर्ण विकसित, आत्मनिर्भर व साक्षर करने के लिए बेटी को शिक्षित करना परम आवश्यक है क्योंकि इनकी भागीदारी के बिना सब असंभव है। एक शिक्षित बेटी पूरे परिवार को नई दिशा, रोशनी व नया परिवेश दे सकती है। संतान का उचित मार्गदर्शन, अमृत व विष का अंतर, सदाचार का पाठ पढ़ा जीवन सु-यश-सफल व उत्तम बना सकती है। जन्म के बाद बेटी का पालन-पोषण-शिक्षा, माता-पिता की जिम्मेदारी है। हिन्दुओं के 16 संस्कारों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण विवाह है। विवाह के बाद नये रिश्तों को तन-मन से स्वीकारती है बेटी। घर की देखभाल, बच्चों का पालन पोषण, पति का ख्याल, सास-ससुर की सेवा प्रातः से रात्रि तक घड़ी की सुई की तरह चलकर पूरा करती है। जीवन तो पशु भी जीते हैं पर शिक्षित बेटी आधुनिक जीवन शैली, नए आविष्कार, देश-विदेश की तकनीक का उपयोग कर परिवार में खुशहाली ला सकती है। एक शिक्षित बेटी पूरे परिवार को नई दिशा, रोशनी व नया परिवेश देती है।

जग जाहिर है कि शिक्षा के बल पर हमारे देश की बेटियाँ राष्ट्रपति, गवर्नर, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, सैनिक, विदेश मंत्री, पायलट, गीतकार, गायिका, स्पेस वूमन, ट्रेन चालक, चित्रकार, कवयित्री, लेखिका, डॉक्टर, प्रिंसीपल यहाँ तक कि फाइटर प्लेन की पायलट बन घर-परिवार-समाज-शहर व देश का गौरव बढ़ा रही हैं। शिक्षित बेटियाँ बेटों के बराबर बल्कि ज्यादा बेहतर घर-व्यवसाय संभालकर अपने आपको सिद्ध कर रही हैं। साथ ही परिवार की आर्थिक मददगार भी साबित हो रही हैं। बेटी को शिक्षित करना अति आवश्यक ही नहीं, अपितु हर परिवार की नैतिक जिम्मेदारी है। राष्ट्र की आधी जनशक्ति नारी है जो अपनी ऊर्जा, संकल्प, वात्सल्य से आंगन से लेकर अंतरिक्ष तक की भूमिका सफलता से निभा रही है। एक बालक को शिक्षित करना, केवल एक को शिक्षित करना जबकि एक बालिका को शिक्षित करना, पूरे परिवार को शिक्षित करना है क्योंकि बालिका बड़ी होकर पत्नी-माँ बन परिवार को संजोती है, वह जन्मदात्री ही नहीं, चरित्र निर्मात्री भी है।

"शिक्षित बेटी नहीं है किसी भी बेटे से कम ।

समय आने पर दुर्गा, लक्ष्मी, इन्दिरा व सुनिता बनने में नहीं होगा विलंब" ।।

धार्मिक महत्व में देवियों का पूजन व रानी लक्ष्मीबाई, माता जीजाबाई आदि को भुलाया नहीं जा सकता। विश्व की प्रख्यात महिलाओं में सावित्री जिन्दल, इन्दू जैन, अनुभा, किरण मजूमदार, शोभना आदि भारतीय रही हैं। इंदिरा नुई, शिखा शर्मा, चंदा कोचर आदि ने नाम रोशन किया। संस्कारित, शिक्षित महिला ही स्वस्थ-समर्थ परिवार व भारत की संरचना कर सकती है। हिंदू ग्रंथों में माता का दर्जा पिता से हजार गुना अधिक माना है तथा शंकराचार्य महाराज भगवान श्रीकृष्ण को माँ पुकारते थे और उपनिषदों में मातृ देवो भव, पितृ देवो भव कहा है एवं वन्देमातरम में भी माँ की ही वंदना की गई है। राम, कृष्ण, शिवाजी, हनुमान आदि के जीवन को सुसंस्कारों से माँ ने सजाया।

महर्षि दयानन्द जी ने माँ को ममतामयी, जीवनदायिनी, परोपकारिणी बताया है। माँ की गोद से बड़ी कोई पाठशाला नहीं, माँ से बड़ी कोई शिक्षिका नहीं, माँ की ममता, वात्सल्य, प्रेम निःस्वार्थ होता है। ईश वंदना में भी माँ को पहले नमन करते हैं। उदाहरण स्वरूप **त्वमेव माता च पिता त्वमेव**। मंदिर, सत्संग, कथा में ज्यादा महिलाएं होती हैं अर्थात् वे धर्म संस्कृति की रक्षा करती हैं।

बेटी बचाओ-बेटी पढाओ नहीं है सिर्फ एक अभियान

शिक्षित बेटी ही करें घर-परिवार के साथ भविष्य का निर्माण।।

-अमित कुमार शर्मा

कौन हो तुम?

कैसे बताऊँ कौन हो तुम,
मेरी जुस्तजु मेरी आरजू हो तुम,
जो धड़कता है मेरे जिस्म में वो दिल हो तुम,
मेरी जिंदगी का मकसद, मेरे रहबर हो तुम,
कैसे बताऊँ कौन हो तुम ? .....

बड़ी मन्नत बड़ी मशक्कत से मिले हो तुम,
बड़े सजदे बड़ी इबादत से मिले हो तुम,
रो रो कर जो गुजारे हैं दिन,
अधियारों मे जो बिताई है रातें.
उन्हीं ख्वाहिशों की अताअत हो तुम,
कैसे बताऊँ कौन हो तुम ? .....

रो रो कर आँखें पथरा गईं थी कभी,
जीने की जरा भी आस बाकी न रही, तभी
एक फरिश्ता बनकर आये थे तुम,
मेरे जिस्म में नई जान बनकर आये हो तुम,
कैसे बताऊँ कौन हो तुम ? .....

यह जो मेरा रूप है तुम्हारा ही स्वरूप है,
पूरब में तुम, पश्चिम में तुम, उत्तर में तुम दक्षिण में तुम,
मेरी कश्ती भी तुम, मेरा साहिल भी तुम,
मेरी जिंदगी का हर मकसद हो तुम।
कैसे बताऊँ कौन हो तुम ? .....

मेरी हर खुशी, हर ख्वाहिश हो तुम,
मेरे जिंदा रहने की वजह हो तुम,
मेरी बैचेनी भी तुम, मेरा सुकून भी तुम,
मेरी जिंदगी का सरमाया हो तुम,
कैसे बताऊँ कौन हो तुम ? .....

जो हर वक्त माँगी थी, वही दुआ हो तुम,
कैसे कहूँ कौन हो तुम ?
लफ्जों में कैसे बयाँ करूं, कौन हो तुम ?
बस मेरी जान हो तुम, मेरी जान हो तुम ।।

-उजमा इस्माईल खान
एनएपीएस टाउनशिप, नरौरा

निगम सामाजिक दायित्व के अंतर्गत कौशल विकास कार्यक्रम

नरौरा परमाणु विद्युत केंद्र द्वारा एनपीसीआईएल निगम सामाजिक दायित्व (सीएसआर) कार्यक्रम के अंतर्गत राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम लिमिटेड के सहयोग से अलीगढ़ में एनएपीएस के निकटवर्ती क्षेत्रों के युवाओं के लिए कौशल विकास कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है।

प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए तत्कालीन जिलाधिकारी, अलीगढ़

प्रशिक्षण के बारे में जानकारी देते हुए एनएसआईसी के अधिकारी

व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए छात्राएं

इस कार्यक्रम के माध्यम से राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम लिमिटेड, अलीगढ़ के सहयोग से युवाओं को कुल 18 पाठ्यक्रमों में रोजगारपरक प्रशिक्षण दिलाया जा रहा है। राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम लिमिटेड, अलीगढ़ और नरौरा परमाणु विद्युत केंद्र के बीच हस्ताक्षरित वर्ष 2023-24 के समझौता ज्ञापन के अधीन संचालित सभी पाठ्यक्रमों का प्रशिक्षण कार्यक्रम 24.06.2024 को पूर्ण हुआ। तत्पश्चात प्रशिक्षण में उत्तीर्ण रहे सभी प्रशिक्षणार्थियों के लिए लघु उद्योग निगम लिमिटेड, अलीगढ़ द्वारा 7 अगस्त, 2024 को रोजगार मेले का आयोजन किया गया जिसमें एनएपीएस के मुख्य अधीक्षक श्री संजय केशव कावरे, प्रशिक्षण अधीक्षक श्री एस.जी. बठेजा एवं अन्य अधिकारियों ने भाग लिया। नरौरा परमाणु विद्युत केंद्र द्वारा प्रायोजित किए गए पाठ्यक्रमों में नामित कुल 126 युवाओं को इस रोजगार मेले के माध्यम से प्रतिष्ठित संगठनों में रोजगार प्राप्त हुआ।

प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए एनएपीएस के मुख्य अधीक्षक

इसके अलावा राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम लिमिटेड, अलीगढ़ के साथ 10.05.2024 को एक अन्य समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया गया जिसमें 11 पाठ्यक्रमों को शामिल किया गया। इस समझौता ज्ञापन के अधीन संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम अगले वर्ष तक अलगअलग बैचों में पूर्ण होंगे। 10.05.2024 को हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन में शामिल सभी पाठ्यक्रमों को 18 बैचों में विभाजित किया गया है।

रोजगार मेला का एक दृश्य

-शुभम जोशी,
उप प्रबंधक (मा.सं.) एवं
सदस्य-सचिव, निगम सामाजिक दायित्व समिति

एनएपीएस स्टेशन प्रशिक्षण केंद्र की गतिविधियां

अप्रैल से सितंबर, 2024 की अवधि में एनएपीएस स्टेशन प्रशिक्षण केंद्र में नियमित रूप से होने वाले सभी प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुए। तथापि कुछ विशेष कार्यक्रमों के अतंर्गत होने वाले प्रशिक्षण/गतिविधियां निम्नानुसार है:-

नव-आगंतुक कार्यकारी अभियंताओं (अग्निशमन एवं सरंक्षा) के लिए अनिवार्य प्रशिक्षण कार्यक्रम दिनांक 01.08.2024 से 21.08.2024 तक आयोजित किया गया।

बाहय फैकल्टी श्री बिजन चक्रवती, क्षेत्रीय निदेशक

कार्यक्रम में भाग लेते प्रतिभागी गण

श्री अनिल कुमार दुबे, वरिष्ठ प्रशिक्षण अधिकारी

इसके अंतर्गत एनएपीएस की संयंत्र प्रणाली का परिचय एवं ए.आर.पी.टी. प्रशिक्षण, आई.एस. ट्रेनिंग फॉर ऑफिसर्स, ईएचएसएमएस, एसपीसी/ सीएमएमएस और प्राथमिक चिकित्सा प्रशिक्षण आदि संबधित प्रशिक्षण संयंत्र के वरिष्ठ अभियंताओं/ अधिकारियों द्वारा दिए गए। इसमें कुल 10 कार्यकारी अभियंताओं ने भाग लिया। इस कार्यक्रम के प्रशिक्षण संयोजक श्री एच.सी. गौड़, वरिष्ठ प्रशिक्षण अधिकारी, प्रशिक्षण अनुभाग थे।

प्रत्येक तिमाही में संपन्न होने वाले कार्यक्रमों की श्रृंखला में 'टीम बिल्डिंग व अन्य तकनीकी विषयों पर प्रशिक्षण' कार्यक्रम दिनांक 15 से 17 मई, 2024 एवं 28 से 30 अगस्त, 2024 के मध्य संपन्न हुए। इस प्रशिक्षण हेतु बाह्य फैकल्टी श्री बिजन चक्रवर्ती, क्षेत्रीय निदेशक, राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा विकास बोर्ड, श्रम एवं रोजगार मंत्रालय को आमंत्रित किया गया जिन्होंने बहुत प्रभावी रूप से विभिन्न विषयों पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति के माध्यम से व्याख्यान दिए।

एनएपीएस के वरिष्ठ अभियंताओं/अधिकारियों द्वारा अनेक विषयों जैसे इफैक्टिव टीमवर्क में लीडरशिप का योगदान, कॉफ्लिक्ट मेंनेजमेंट, सकरात्मक व्यवहार एवं शिष्टाचार, औद्योगिक व व्यवहारिक सुरक्षा एवं सेफ्टी मैंनेजमेंट, वानो पीअर रिव्यू/ कारपोरेट रिव्यू, ओबजर्वेशन, ए.एफ.आई. एवं करैक्टिव एक्शन इत्यादि पर महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। इस कार्यक्रम के प्रशिक्षण संयोजक श्री अनिल कुमार दुबे, वरिष्ठ प्रशिक्षण अधिकारी, प्रशिक्षण अनुभाग थे।

-भावना मॉडवेल
प्रधान निजी सचिव, स्टेशन प्रशिक्षण केंद्र

सफर सफलता का

कल कल बहती नदिया की धारा
हमें यह बतलाती है,
सूखी जमीन हो या

ऊँची चट्टान यह कहां रूक पाती है।
संसार के इस क्षण-भंगुर जीवन में,
हमें कितनी समस्या आती है।
है यह भी अस्थिर,
इसलिए यह कहां रूक पाती है।

क्योंकि जीवन का यह दौर
फिर कभी नहीं आयेगा,
छायेगा अंधेरा तेरी जिंदगी में
सुख का सवेरा फिर कभी नहीं आयेगा।

इसलिए है समय,
अपने आप पर काम कर
मेहनत कर और पहुंच जा
अपने मनचाहे मुकाम पर।

-नितिन चौधरी
एमएमयू

एनएपीएस में राजभाषा हिंदी गतिविधियां

नरौरा परमाणु विद्युत केंद्र में अप्रैल से सितंबर, 2024 की छमाही के दौरान राजभाषा हिंदी संबंधी निम्नलिखित गतिविधियां सफलतापूर्वक संपन्न की गईं :-

1. राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें : विद्युत केंद्र में राजभाषा कार्यान्वयन में हुई प्रगति की समीक्षा करने के लिए एनएपीएस राजभाषा कार्यान्वयन समिति की दो बैठकें क्रमश: दिनांक 25.04.2024 तथा 24.07.2024 को केंद्र निदेशक, एनएपीएस श्री प्रतीक अग्रवाल की अध्यक्षता में आयोजित की गईं एवं महत्वपूर्ण विषयों पर निर्णय लिए गए।

2. हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन : विद्युत केंद्र में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए एवं हिंदी में कार्य करते समय कर्मचारियों को आने वाली कठिनाइयों को दूर करने के लिए 27 जून, 2024 तथा 28 सितंबर, 2024 को दो एकदिवसीय हिंदी कार्यशालाएं आयोजित की गईं जिनमें कुल 58 कार्मिकों ने भाग लिया।

इन हिंदी कार्यशालाओं में राजभाषा संबंधी मुख्य संवैधानिक प्रावधानों, राजभाषा अधिनियम, नियम तथा राजभाषा विभाग द्वारा समय समय पर जारी आदेशों आदि के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी गई। इसके साथ ही कम्प्यूटर पर यूनीकोड के माध्यम से हिंदी टाइपिंग के बारे में बताया गया। हिंदी को शुद्ध रूप में लिखने के लिए मानक हिंदी का प्रयोग, पारिभाषिक शब्दावली तथा एनपीसीआईएल में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए लागू विभिन्न हिंदी प्रोत्साहन योजनाओं के बारे में भी जानकारी दी गई। इन कार्यशालाओं के दौरान प्रतिभागियों को शुद्ध एवं सरल हिंदी लेखन का अभ्यास भी कराया गया।

3. हिंदी माह का आयोजन : विद्युत केंद्र में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए 01 से 30 सितंबर, 2024 तक हिंदी माह मनाया गया। इस दौरान हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए प्रमुख स्थानों पर बैनर लगाए गए। हिंदी माह के दौरान हिंदी टिप्पण आलेखन, हिंदी कहानी लेखन, हिंदी तकनीकी लेखन, हिंदी सामान्य ज्ञान, हिंदी रोचक प्रसंग लेखन, हिंदी कविता लेखन, हिंदी निबंध लेखन एवं हिंदी अंताक्षरी इत्यादि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनमें प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

4. हिंदी दिवस का आयोजन : विद्युत केंद्र में 14 सितंबर को अवकाश होने के कारण 18 सितंबर, 2024 को हिंदी दिवस एवं एनपीसीआईएल स्थापना दिवस कार्यक्रम का आयोजन संयुक्त रूप से किया गया। हिंदी दिवस के अवसर पर गृहमंत्री, भारत सरकार, अध्यक्ष-परमाणु ऊर्जा आयोग एवं सचिव-परमाणु ऊर्जा विभाग तथा अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एनपीसीआईएल से प्राप्त संदेशों का उपस्थित कार्मिकों के समक्ष वाचन किया गया। इसके साथ ही पिछले वर्ष आयोजित की गई हिंदी प्रतियोगिताओं में विजयी रहे प्रतिभागियों को पुरस्कृत भी किया गया।

5. कवि गोष्ठी का आयोजन : हिंदी माह के समापन अवसर पर 30 सितंबर, 2024 को राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए एक कवि गोष्ठी आयोजित की गई। जिसमें विद्युत केंद्र के कर्मचारियों एवं अन्य कवियों ने काव्य पाठ किया। इनमें श्री पवन गुप्ता,

हिंदी दिवस समारोह
एवं
एनपीसीआईएल स्थापना दिवस
18 सितंबर, 2024

एनपीसीआईएल स्थापना दिवस

एनपीसीआईएल स्थापना दिवस

एनपीसीआईएल स्थापना दिवस

श्री अभिनव मिश्र, श्री अमित कुमार शर्मा, श्री मनोज कुमार शर्मा, श्री विजयपाल सिंह, श्री संजय कुमार, मौ. रिजवान अंसारी, श्री जे. पी. सुमन, श्री रामसिंह वर्मा, डॉ. सूर्य प्रकाश गौतम, श्रीमती पंछी शर्मा, श्रीमती भावना मोडवेल, श्री सुरेश चन्द्र और श्री प्रमोद कुमार सिंह ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समां बांध दिया। कवि गोष्ठी का संचालन श्री जे. पी. राजपूत ने किया। प्रमुख (मा.सं.) श्री. आशुतोष तिवारी, उप प्रबंधक (राजभाषा) सुश्री अर्चना श्रीवास्तव के साथ-साथ अन्य लोग उपस्थित रहे।

6. राजभाषा निरीक्षण : विद्युत केंद्र के 05 अनुभागों का स्थानीय स्तर पर राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निरीक्षण किया गया।

7. हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम : पत्राचार के माध्यम से हिंदी टंकण प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे विद्युत केंद्र के 19 सहायक ग्रेड कर्मचारियों के लिए 8 जुलाई, 2024 को स्थानीय केंद्र पर हिंदी टंकण परीक्षा आयोजित कराई गई जिसमें सभी 19 सहायक ग्रेड कर्मचारी उत्तीर्ण हुए। इसके अतिरिक्त इस विद्युत केंद्र के 04 सहायक ग्रेड कार्मिक हिंदी टंकण प्रशिक्षण तथा 5 कार्मिक हिंदी भाषा प्रशिक्षण पत्राचार के माध्यम से प्राप्त कर रहे हैं।

8. हिंदी ई-गृहपत्रिका 'अणुविहार' का प्रकाशन : विद्युत केंद्र की हिंदी ई-गृहपत्रिका 'अणुविहार' का अक्टूबर 2023 से मार्च, 2024 अवधि का अंक प्रकाशित किया गया।

9. हिंदी प्रोत्साहन योजनाओं के अधीन पुरस्कार : विद्युत केंद्र में राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए चलाई जा रही विभिन्न हिंदी प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को वित्तीय प्रोत्साहन/ पुरस्कार प्रदान किए गए।

10. राजभाषा कार्यान्वयन : एनएपीएस में राजभाषा कार्यान्वयन को और अधिक बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रशासनिक प्रधान द्वारा सभी संबंधित अनुभागाध्यक्षों को कार्यालय आदेश जारी किए गए। इकाई में हिंदी में प्रवीणता प्राप्त सभी कार्मिकों को अपना अधिकतम कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने के लिए प्रशासनिक प्रधान द्वारा व्यक्तिशः आदेश जारी किए गए। इकाई में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न हिंदी प्रोत्साहन योजनाएं पुनः शुरू की गईं।

-प्रेमपाल
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक ग्रेड-2

वार्षिक कार्यक्रम 2025-26 में 'क' क्षेत्र लिए निर्धारित लक्ष्य

राजभाषा कार्यान्वयन की दृष्टि से नरौरा परमाणु विद्युत केंद्र 'क' क्षेत्र में स्थित है। भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा जारी वर्ष 2025-26 के राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार 'क' क्षेत्र में स्थित केंद्रीय सरकार के मंत्रालयों/ विभागों/ कार्यालयों के लिए कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए लक्ष्य निर्धारित किए गए है जिनमें से कुछ प्रमुख लक्ष्य निम्नानुसार हैं -

क्रम सं.	कार्य विवरण	लक्ष्य
1.	हिन्दी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	
	i) 'क' क्षेत्र से 'क' एवं 'ख' क्षेत्र को	100%
	ii) 'क' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को	70%
	iii) 'क' क्षेत्र से 'क' एवं 'ख' क्षेत्र के राज्य/ संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति को	100%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%
3.	हिन्दी में टिप्पण	80%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	75%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%
6.	हिन्दी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (अधिकारी द्वारा स्वयं तथा सहायक द्वारा)	70%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा,टंकण,आशुलिपि)	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%
9.	हिंदी पुस्तकों की खरीद पर व्यय	50%
10.	हिंदी अंग्रेजी दोनों भाषाओं में कार्य करने में सक्षम कम्प्यूटरों की खरीद	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड द्विभाषी हों	100%
13.	कार्यालयों का राजभाषा निरीक्षण	30%
14.	वर्ष में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें	4 बैठकें
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%

वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए उपर्युक्त लक्ष्यों के अनुसार कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग किया जाना अपेक्षित है।

राजभाषा अनुभाग, एनएपीएस

एनएपीएस में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया

नरौरा परमाणु विद्युत केंद्र में 77वाँ स्वतंत्रता दिवस 2024 बड़ी धूमधाम से मनाया गया। प्रातः 7.30 बजे संयंत्र स्थल पर मुख्य अधीक्षक श्री एस.के. कावरे ने ध्वजारोहण कर केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के विशेष कार्यबल टुकड़ी की सलामी ली। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि आज के दिन हमारा देश स्वतंत्र हुआ। यह हमारे लिए बड़ा गर्व का दिन है, आजादी हासिल करने के लिए हमारे देश के अनेक वीरों ने देश पर बलिदान दिया,आज हम उनको नमन करते हुए, यह प्रण लेते हैं कि देश को उन्नति के शिखर पर ले जाने में अपना अहम योगदान करेंगे।

एनएपीएस टाउनशिप 'अणुविहार' में परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय क्रीड़ा स्थल पर आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि केंद्र निदेशक श्री प्रतीक अग्रवाल ने राष्ट्र ध्वज फहराया। उन्होंने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि आज पूरे देश में हर्ष का माहौल है, लेकिन इस आजादी को प्राप्त करने के लिए हमारे देश के वीर सपूतों ने बहुत त्याग और बलिदान किया है। अनगिनत वीरों ने आजादी के लिए अपनी जान इस देश पर कुर्बान कर दी, हम आज उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। हमारे देश ने आजादी से आज तक अभूतपूर्व तरक्की की है, आज का भारत पूरी तरह से नया भारत है जो कि विश्व को वसुधैव कुटुम्बकम यानी सारे विश्व को एक परिवार मानने की बात करते हुए शांति का संदेश देते हुए मानव कल्याण की बात करता है। उन्होंने एनएपीएस के सभी अनुभागों को उनके विशिष्ट कार्यों के लिए बधाई दी।

केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के जवानों ने फायर, वीआईपी सुरक्षा से संबंधित प्रदर्शन कर अपनी प्रतिभा दिखाई तो वहीं परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों ने देशभक्ति गीत, अंग्रेजी/हिंदी

में भाषण एवं सामूहिक नृत्य के माध्यम से सभी दर्शकों का मन मोह लिया। कार्यक्रम में मुख्य अधीक्षक श्री संजय केशवराव कावरे, प्रमुख, मानव संसाधन श्री आशुतोष तिवारी, अनुरक्षण अधीक्षक श्री एच.एस. सिंह, तकनीकी सेवा अधीक्षक श्री मुकेश कुमार, वरिष्ठ कमांडेंट श्री ललित शेखर झा, चिकित्सा अधीक्षक श्रीमती तनुजा देवलालीकर, कर्मचारी यूनियन अध्यक्ष श्री जे.के. शुक्ला एवं बड़ी संख्या में अन्य अधिकारी, कर्मचारी और परिजन उपस्थित रहे।

-भास्कर शर्मा
जनसंपर्क अनुभाग

मेरी दिल्ली-बरेली यात्रा

10 अप्रैल 1988 को घटित एक घटना मैं जीवनपर्यन्त नहीं भूल सकती। उस दिन मैं दिल्ली से बरेली जा रही थी। इस दौरान हुआ यूं कि जब मैं गाड़ी में चढ़ी तो एक अन्य महिला भी उसी बोगी में चढ़ी। ट्रेन चलने में समय अधिक होने के कारण उस महिला को ट्रेन में बैठाने आया व्यक्ति खिड़की पर खड़ा होकर बात करने लगा। महिला भावुक हो कर रोने लगी। थोड़ी देर बाद ट्रेन धीरे-धीरे चलने लगी, परंतु उस महिला का रोना बंद नहीं हुआ। वो आदमी स्टेशन पर रह गया लेकिन महिला के आंसू रूकने का नाम नहीं ले रहे थे। खैर.....जब महिला थोड़ी सहज हुई तो सहानुभूतिवश मैंने कहा, आप रो क्यों रही हैं? उसने जवाब दिया कि वे मेरे पति हैं, पहली बार उन्हें छोड़ कर कुछ दिनों के लिए मैं मायके जा रही हूँ, इसलिए बुरा लग रहा है।

हम लोग बातें कर रहे थे और महिला रुवांसी थी कि अचानक ट्रेन की गति कम होने लगी, तभी खिड़की से एक हाथ ट्रेन के अंदर आया और खिड़की के पास बैठी उस महिला के कान पर झपट्टा मार के कुंडल खींचने का प्रयास करने लगा। उस महिला ने अपनी तकलीफ छोड़कर तत्परता से उस हाथ को पकड़ लिया और मदद के लिए चिल्लाई। कोई मदद के लिए नहीं उठा। मैंने भी एकबारगी विचार किया कि मदद करने पर कोई पंगा ना हो जाए, लेकिन दिल ने दिमाग पर विजय पाई। मैंने भी खूब जोर से उस अजनबी का हाथ पकड़ लिया। ट्रेन ने फिर गति पकड़ी। वो आदमी प्लेटफार्म पर घिसटने लगा और हमसे हाथ छोड़ने की गुहार लगाने लगा। पास बैठा उस महिला का बच्चा जोर से चिल्ला रहा था, आंटी, इसे छोड़ना नहीं, हम मिलकर इसकी पिटाई करेंगे। वाकया देख किसी ने अचानक ट्रेन की चेन खींच दी। ट्रेन धीमी हो कर रुक गई। महिलाओं की हिम्मत और उस बच्चे की मासूम दरकार सुनकर अन्य लोग भी मदद के लिए आए। ट्रेन रुकते ही जब उस बोगी के दो आदमी नीचे उतर कर उस चोर को पकड़ लिए, तभी हमने उसका हाथ छोड़ा। पिटाई होने पर वो घिघियाकर माफी मांगने लगा कि बहन जी, ऐसी गलती अब कभी नहीं करूंगा। बच्चा बराबर चिल्ला रहा था, अंकल, इसको खूब मारो, छोड़ना नहीं अंकल। सबने मिलकर उसकी दे दनादन धुनाई की, अन्य लोगों ने भी बहती गंगा में हाथ धोया। उसे पुलिस को सौंपकर हम मुस्कुराते हुए ट्रेन में बैठ गए जो अब काफी तेज चल रही थी।

हम सब लोग एक बेहद संवेदनशील, भावुक लेकिन बेहद चौकन्नी महिला की बहादुरी की चर्चा के साथ उस मासूम बच्चे के बारे में सोच रहे थे जिसकी मुखरता ने इतने सोते हुए प्राणियों को सही दिशा प्रदान की।

- भावना मोडवेल
प्रधान निजी सचिव, एसटीसी

आओ, भारत को अग्नि सुरक्षित बनाएँ

भारत एक विशाल और विविधताओं से भरा देश है, जहाँ जनसंख्या, उद्योग, वन और प्राकृतिक संसाधनों की भरमार है। लेकिन हाल के वर्षों में आगजनी की घटनाओं में भारी वृद्धि हुई है— चाहे वह जंगलों की आग हो, रिहायशी इलाकों में शॉर्ट सर्किट से लगी आग या फिर फैक्ट्रियों में "अग्नि सुरक्षा" मानकों की अनदेखी के कारण हुई अग्नि दुर्घटनाएँ। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम सभी एकजुट होकर भारत को अग्नि सुरक्षित देश बनाने की दिशा में ठोस कदम उठाएँ।

आग के खतरे और उनके दुष्परिणाम :

आग एक विनाशकारी शक्ति है। इसके कारण जानमाल की अथाह हानि होती है, पर्यावरण प्रदूषित होता है जिससे मनुष्यों और जीव-जंतुओं को सांस लेने में भारी परेशानी का सामना करना पडता है और आर्थिक नुकसान भी अत्यधिक मात्रा में होता है। हर साल हजारों लोग आग की घटनाओं में अपनी जान गंवा देते हैं, किसानों की फसलें जलकर बर्बाद हो जाती हैं और लाखों की संपत्ति राख हो जाती है। इन घटनाओं में से अधिकांश को रोका जा सकता है यदि हम सावधानी बरतें और सुरक्षा के उपायों को अपनाएँ।

अग्नि सुरक्षा के लिए सामूहिक प्रयास :

भारत को अग्नि सुरक्षित बनाने के लिए यदि हम व्यक्तिगत, सामाजिक और सरकारी स्तर पर मिलकर निम्नलिखित प्रयास किए करें तो निश्चित ही हम भारत को "अग्नि सुरक्षित" देश बनाने में सफल होंगे:-

1. **शिक्षा और जागरूकता :** स्कूलों, कॉलेजों और कार्यालयों में अग्नि सुरक्षा से संबंधित प्रशिक्षण देना अनिवार्य होना चाहिए।
2. **सुरक्षा उपकरणों की उपलब्धता :** प्रत्येक भवन, फैक्टरी और सार्वजनिक स्थान पर अग्निशमन यंत्र, अलार्म और इमरजेंसी निकास की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।
3. **सरकारी नियमों का कड़ाई से पालन :** भवन निर्माण, औद्योगिक संस्थानों और दुकानों में अग्नि सुरक्षा मानकों/ प्रावधानों का सख्ती से पालन कराना जरूरी है।
4. **जनभागीदारी :** हर नागरिक को यह समझना होगा कि उसकी सतर्कता और ज़िम्मेदारी से कितनी जानें बच सकती हैं। हम सभी को मिलकर आग बुझाने में सहयोग करना चाहिए। मोहल्ला स्तर पर स्वयंसेवी अग्नि सुरक्षा समितियाँ बनाई जा सकती हैं।

5. **अग्निशमन सेवाओं को सशक्त बनाना:** फायर ब्रिगेड को आधुनिक उपकरणों से लैस करना, स्टाफ की संख्या बढ़ाना और समय पर प्रतिक्रिया देने की क्षमता में सुधार लाना आवश्यक है।

उपसंहार :

भारत को अग्नि सुरक्षित बनाना कोई अकेले व्यक्ति या संस्था का कार्य नहीं है। यह हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है। जब पूरा देश एकजुट होकर इस दिशा में कार्य करेगा, तभी हम एक सुरक्षित, सतर्क और सजग समाज की स्थापना कर पाएँगे। "सतर्क भारत, सुरक्षित भारत" का सपना तभी साकार होगा, जब हर नागरिक अपनी भूमिका निभाएगा और अग्नि सुरक्षा को अपनी प्राथमिकता बनाएगा।

-शरीफ़ ख़ान,
वैज्ञानिक सहायक-ई,
रावतभाटा राजस्थान साइट।

जीवन प्रकृति के संग करें

प्रकृति के संग में, मिला प्रेम ही प्रेम।
वरना जीवन रह जाता, खाली फोटो फ्रेम।।

चित्र तुम्हारा देखकर, मन में उठे उमंग।
मित्र कभी ना छोड़ना, प्रकृति का संग।।

रिश्ते नाते दोस्ती, सब पैसों का खेल।
प्रकृति ने भर दिया, बिन पैसों का मेल।।

प्राणवायु खूब देती, प्रकृति का प्यार।
बिन पेड़ों के जिंदगी, हो न सकेगी पार।।

रंग बदलती, रूप बदलती, यह प्राकृतिक माया है।
जीवन भी खुश तभी रहेगा, अच्छी होगी छाया है।।

गर्मी आती, जाडा जाता, वर्षा भी बहुत सुहानी है।
तीनों रंग बिरंगे मौसम, यह प्राकृतिक खुशहाली है।।

फसल झूमती मस्त-मस्त, खेतों में बहती हरियाली।
हर किसान, मजदूर झूमता, खुशियों की किलकारी।।

रामरतन यूँ कहता भाई, सुन्दर सुन्दर वृक्ष लगाओ।
हवा, दवा, फल, फूल मिलेंगे, प्रकृति का रूप सजाओ।।

-रामरतन
वरि.सहा.ग्रेड -2, मानव संसाधन

फेसबुक की मित्रता

उदय से सीता की मित्रता फेसबुक पर हुई थी, लेकिन बहुत जल्दी उदय उसके दिलो दिमाग पर छा गया था। सीता ने प्रबंधन में स्नातकोत्तर किया था, उसने उदय से कहा कि उसे भी मुंबई बुला ले, कोई न कोई नौकरी मिल ही जाएगी, जब वह नौकरी में लग जाएगी तो माँ व पिताजी से बात कर लेगी और शादी के बंधन में बंधकर एक हो जाएंगे। उदय को तो मुक्त रहने की आदत थी, फिर भी सीता के ज्यादा जिद करने पर उसने सीता को मुंबई आने के लिए आमंत्रित कर दिया। सीता ने घर पर बताया कि एक नौकरी के लिए मुंबई जा रही हूँ। पिताजी से खर्चे के लिए पैसे लिए और चल पड़ी मुंबई। आखिर वह मुंबई पहुँच गयी। उदय ने फेसबुक पर ही सीता को बताया, शाम को मुझे गेटवे ऑफ इंडिया पर मिल जाना, वहाँ से मैं तुम्हें पिक कर लूँगा।

मुंबई पहुंचते ही सीता ने ऑटो लिया और चल पड़ी मुंबई घूमने, श्याम नाम के ऑटो वाले को पूरे दिन के लिए किराए पर तय कर लिया, कुछ अग्रिम किराया भी दे दिया। श्याम ऑटो चलाते हुए बातें भी किए जा रहा था, रास्ते में उसने अपने बेटे राम का कार्यालय भी दिखाया। घूमते हुए जब शाम हो गयी तो सीता ने कहा कि मुझे गेटवे ऑफ इंडिया छोड़ दो। श्याम के पूछने पर बताया कि मेरा एक फेसबुक मित्र है, उसी के भरोसे मुंबई आई हूँ, उसने मुझे गेटवे ऑफ इंडिया के पीछे मिलने को कहा है, इसलिए वह यहीं रुक कर उसके आने की प्रतीक्षा करेगी। गेटवे ऑफ इंडिया पर उतर कर सीता ने फुटपाथ पर अपना बैग रख लिया और वहीं बैठ गयी। श्याम ने अपना किराया लिया और सीधा अपने घर की तरफ चल पड़ा।

श्याम अपने परिवार के साथ खाना खाते हुए अपनी दिनचर्या शेयर करते हुए आखिर में जैसे ही उसने बताया कि उस लड़की को गेटवे ऑफ इंडिया पर छोड़कर आ गया तो बेटे राम को कुछ अजीब सा लगा और वह तुरंत ही खाना बीच में छोड़ कर अपने पिताजी को लेकर उस स्थान पर पहुंचा, जहां उसके पिताजी ने उस लड़की को छोड़ा था।

रात के ग्यारह बज रहे थे, सीता उनको वहीं बैठी मिल गयी, राम ने एक चैन की सांस ली। श्याम के पूछने पर सीता रो पड़ी, उदय से उसका संपर्क ही नहीं हो पा रहा था, यही बात उसने उन्हे बताई। राम ने उस समय पुलिस सहायता लेना उचित समझा और तीनों थाने चले गए, पुलिस ने तत्परता दिखाई और जांच में पता चला कि उदय की आईडी झूठी थी जो उसी दिन बंद कर दी गई एवं सभी पोस्ट भी मिटा दी गईं। सीता को अब अपनी भूल पर पछतावा हो रहा था, वह सोच रही थी कि क्यों उसने फेसबुक पर एक अंजान व्यक्ति से दोस्ती करके उस पर इतना भरोसा किया।

श्याम ने कहा, अगर हम पर विश्वास कर सको तो हमारे साथ हमारे घर चलो, सुबह सोचेंगे कि आगे क्या करना है। सुबह राम अपने कार्यालय के लिए तैयार हो रहा था, सीता भी जाग गई थी तब राम बोला कि आप अपने घर पर नौकरी के बारे में कह कर आई हैं, अगर आप नौकरी करना चाहती हैं तो मेरे कार्यालय में एक सहायक प्रबंधक की जगह खाली है। आपको अच्छा लगे तो नौकरी कर लो एवं एक महिला हॉस्टल में आपके रहने का प्रबंध भी करवा दूंगा, तब तक आप कंपनी के अतिथिगृह में रह सकती हैं।

सीता को ऐसा लगा जैसे एक भयंकर सपने से जागी हो, बुरा समय गुजर गया था, सीता ने फोन पर अपने पिता को अपनी कुशलता की सूचना दी और अपनी नौकरी के बारे में भी बताया। सीता को मंजिल मिल गयी, वह अपने राम तक पहुँच गयी थी।

-संजीव कुमार

वैज्ञानिक अधिकारी/ई, स्वास्थ्य भौतिकी इकाई

हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा का विकास करने के लिए संघ सरकार को निदेश दिए गए हैं जो कि निम्नानुसार हैं :-

"संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्थानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे ।"

नारी का संघर्ष

सरला एक साधारण परिवार में पैदा हुई थी जिसका लालन-पालन गरीबी में हुआ था। उसके पिता खेती का कार्य करते थे और उसकी माता एक घरेलू महिला थीं। उसके घर में पैसों की तंगी रहती थी। सरला के पिता उसे अच्छी शिक्षा दिलवाना चाहते थे, लेकिन धन के अभाव में मजबूरी महसूस करते थे। सरला ने अपनी पढ़ाई गांव के एक सरकारी स्कूल से शुरू की। वह अपनी कक्षा में हमेशा प्रथम आती थी। वह पढ़ाई के साथ-साथ खेलकूद एवं चित्रकारी में भी अच्छा प्रदर्शन करती थी। सरला धीरे-धीरे बड़ी होने लगी। समय पंख लगाकर उड़ने लगा।

सरला ने गांव के सरकारी स्कूल से हाईस्कूल की परीक्षा प्रथम श्रेणी से पास की। सभी ने उसकी भूरि-भूरि प्रंशसा की और उसके अच्छे भविष्य की कामना की। इस प्रदर्शन से उसके माता-पिता बहुत प्रसन्न हुए लेकिन गरीबी के कारण वे उसे आगे पढ़ाने में असमर्थ थे। सरला ने आगे पढ़ने की इच्छा जाहिर की तो माता-पिता ने उसे गरीबी का हवाला दिया। माता-पिता ने उसकी इच्छा को देखते हुए उसे ग्यारहवीं कक्षा में भेज दिया, लेकिन घर के हालात लगातार बिगड़ रहे थे। जैसे-तैसे सरला ने इंटर की परीक्षा भी प्रथम श्रेणी में पास करके अपने मॉ-बाप का नाम रोशन कर दिया।

बिटिया को सयानी होते देख उसके पिता को उसके ब्याह की चिंता सताने लगी। वह अपने पिता से शादी के लिए मना करते हुए कहती है, 'पिताजी, मैं पहले अपने पैरों पर खड़ी हो जाऊं, तब आप मेरी शादी करवा देना'। लेकिन पिता ने उसे अपनी गरीबी का हवाला दिया और कहा, 'सयानी बिटिया ससुराल में ही अच्छी लगती है'।

उसके माता-पिता ने उसकी मर्जी के खिलाफ जाकर उसकी शादी एक पढ़े-लिखे बेरोजगार युवक राजेश से तय कर दी। वह शादी करके अपने ससुराल में आ गई। उसके सास-ससुर उसे अपनी बिटिया की तरह प्यार करते और उसकी सभी इच्छाओं का ख्याल रखते थे। उसका पति भी उसे बहुत प्यार करता था। उसका समय अच्छी तरह से बीत रहा था। उसके ससुर एक प्राइवेट कंपनी में काम करते थे तथा पति राजेश रोजगार की तलाश में लगा रहता था लेकिन राजेश को कोई अच्छी नौकरी नहीं मिल रही थी। भ्रष्टाचार एवं रिश्वतखोरी के कारण राजेश को नौकरी मिलना मुश्किल हो रहा था।

इसी तरह समय बीतने लगा। सरला ने आगे पढ़ने की इच्छा अपने पति के सामने रखी लेकिन राजेश ने कहा- 'तुम्हें आगे पढ़ने की जरूरत नहीं है। तुम घर-गृहस्थी संभालो, मैं नौकरी प्राप्त करके तुम्हारी सारी जरूरतें पूरी कर दूंगा। लेकिन राजेश ने उसे घर पर चित्रकारी करने की स्वीकृति दे दी। इसी तरह समय बीतता गया। सब कुछ ठीक प्रकार से चल रहा था कि अचानक दिल का दौरा पड़ने से उसके ससुर की मृत्यु हो गई और इस सदमे से उसकी सास भी बीमार रहने लगी। अब घर की सारी जिम्मेदारी राजेश के कंधों पर आ गई। लाख कोशिशों के बावजूद भी उसे नौकरी नहीं मिल रही थी।

राजेश अब उदास रहने लगा और कभी-कभी शराब पीकर घर आने लगा। सरला राजेश की इन हरकतों से और परेशान होने लगी। अब उसे घर के खर्च की चिंता और सताने लगी। सरला ने अपनी सास की रजामंदी से गली-गली जाकर सब्जी बेचना शुरू कर दिया जिससे घर का खर्च चलने लगा। राजेश अब और ज्यादा लापरवाह और नशे का आदी हो गया। सरला घर के सभी कामों से समय निकालकर अपने हालात कैनवास पर उतरती रही। अब तक सास ने भी बिस्तर पकड़ लिया और बीमारी से उसका स्वर्गवास हो गया।

अब सरला अकेली पड़ गई। राजेश उसे और ज्यादा परेशान करने लगा। अब उसका सारा दर्द चित्रकारी के जरिए कैनवास पर उतरने लगा। वह सारा दिन घर-घर जाकर सब्जी बेचती तथा आकर घर का सारा काम करती। अब राजेश सारे दिन इधर-उधर घूमता रहता था। एक दिन राजेश शराब के नशे में गाड़ी के नीचे आकर मर गया। अब तो वह बिल्कुल टूट गई और अपने आपको असहाय महसूस करने लगी।

वह अकेली सब्जी बेचकर अपनी गुजर-बसर करने लगी। एक दिन वह सब्जी लेकर गली में जा रही थी तो किसी ने पीछे से उसे पुकारा तो उसने मुड़कर देखा तो वह राजीव था, जो स्कूल में उसके साथ पढ़ता था। वह राजीव को देखकर रोने लगी और सारी कहानी उसे बयां कर दी। राजीव ने कहा— 'मैं इसी शहर में नौकरी करता हूँ, मैं तुम्हारी जरूर मदद करूंगा, अब चुप हो जाओ"। उसी दिन से राजीव का उसके घर आना-जाना शुरू हो गया। उसका सब्जी बेचने का काम भी बंद करवा दिया। मौहल्ले वालों को ये सब अच्छा नहीं लगा। राजीव खुले दिल से उसकी मदद करने लगा।

एक दिन अचानक से राजीव की नजर घर में रखी पेंटिंग पर पड़ी तो राजीव बोला- 'अरे सरला! तुम तो बहुत अच्छी पेंटिंग बनाती हो, क्यों न इसी क्षेत्र में तुम आगे बढ़ो। सरला अब खुश रहने लगी और अपना शौक पूरा करने लगी। राजीव के मन में सरला की बनी पेंटिंग की प्रदर्शनी लगाने का ख्याल आया। राजीव ने उसकी प्रदर्शनी का सभी जगह प्रचार-प्रसार किया। बहुत लोग उस प्रदर्शनी को देखने आए और सभी ने सरला के हुनर की तारीफ की।

धीरे-धीरे सरला ने और काम किया और राजीव ने हमेशा उसका साथ दिया। सरला अब हमेशा हँसती रहती। उसे राजीव का साथ बहुत अच्छा लगता था। अब जगह-जगह सरला की पेंटिंग की प्रदर्शनी लगने लगी और सब लोग उसे जानने लगे और आगे चलकर उसे इस कला प्रदर्शन के लिए कई राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए।

एक दिन मौका देखकर राजीव ने सरला के सामने शादी का प्रस्ताव रखा जिसे सरला ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। इस तरह लंबे संघर्ष के बाद सरला का जीवन अब खुशियों से भर गया और वह अपने गृहस्थ जीवन में व्यस्त हो गई।

यह कहानी हमें जीवन में संघर्ष करना सिखाती है, क्योंकि संघर्ष के आगे जीत है। हर नारी का जीवन इसी तरह के संघर्षों से गुजरता है।

-नागेश्वर सिंह मलिक,
वरिष्ठ सहायक ग्रेड-II, सीएमएम

सफलता की राह

एक छोटे से गांव में एक गरीब लेकिन खुशहाल दम्पत्ति रहता था। आदमी का नाम राजू था और वह एक कैनवास पेंटर था, जबकि उसकी पत्नी सुमित्रा, दरवाजे-दरवाजे फल बेचने का काम करती थी। दोनों की ज़िंदगी साधारण थी, लेकिन उनके सपने और आकांक्षाएँ असाधारण थीं।

राजू का स्टूडियो एक छोटे से कमरे में था, जहाँ उसने दीवार पर एक बड़ा कैनवास टांग रखा था। इस कैनवास पर वह अपनी भावनाओं को रंगों के माध्यम से व्यक्त करता था। हालांकि उसके काम की गारंटी नहीं थी, लेकिन उसके दिल में कला के प्रति एक गहरा प्यार था। राजू की आंखों में कला की दुनिया बसी हुई थी और वह अपने चित्रों के माध्यम से उसे बाहर लाना चाहता था।

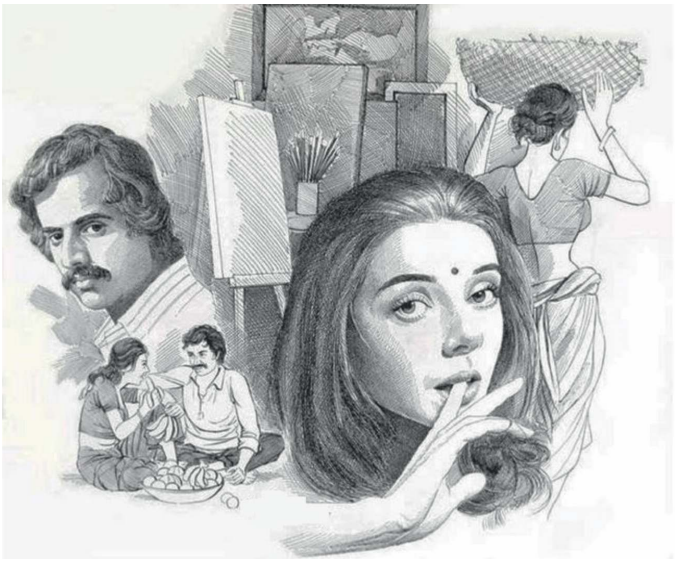

दूसरी ओर, सुमित्रा हर सुबह अपने गहनों और पुरानी साड़ी को पहनकर फल लेकर घर-घर जाती थी। उसके पास अलग-अलग रंग के और स्वादिष्ट फल होते थे और हर दरवाजे पर जाकर वह मुस्कराती हुई अपने फल बेचने का काम करती थी। उसकी मेहनत और समर्पण ने उसे गांव में हर दिल की प्यारी बना दिया था। लेकिन उसका दिल हमेशा राजू की चिंता में लगा रहता था, क्योंकि राजू की कला को पहचान पाने में बहुत समय लग रहा था।

एक दिन, जब सुमित्रा दरवाजे-दरवाजे फल बेच रही थी, उसने एक अमीर ग्राहक को देखा जिसने उसके फलों की बहुत तारीफ की। उस ग्राहक ने उसकी मेहनत को सराहा और उसे सुझाव दिया कि वह अपने फल और सामान को एक जगह पर बेचने के लिए एक छोटी सी दुकान खोल ले। सुमित्रा ने उसकी बात मानी और गांव के एक कोने में एक छोटी सी दुकान खोल दी। अब वह फल बेचने के लिए दुकान पर जाती और आसानी से अधिक ग्राहक पा सकती थी।

राजू के चित्रों की एक प्रदर्शनी का आयोजन गांव के मुख्य चौक पर किया गया। प्रदर्शनी की तैयारी के दिन, सुमित्रा ने अपनी दुकान के माध्यम से अतिरिक्त पैसे जुटाए और राजू को अपनी प्रदर्शनी में कुछ रंगीन फूल और फल भेंट किए। ये फूल और फल प्रदर्शनी को सजाने का एक हिस्सा बने और उन्होंने प्रदर्शनी में चार चाँद लगा दिए।

प्रदर्शनी में गांव के सभी लोग आए और राजू के चित्रों की सराहना की। लोगों ने उसकी कला को देखा और उसकी मेहनत की तारीफ की। धीरे-धीरे, राजू की कला को पहचान मिलने लगी और उसके चित्रों की बिक्री भी बढ़ी।

राजू और सुमित्रा की जिंदगी में अब खुशियाँ और समृद्धि आने लगी थी। राजू की कला को मान्यता मिलने लगी थी, और सुमित्रा की दुकान भी चलने लगी थी। उनकी लगन और मेहनत उनके सपनों को सच करने में सहायक साबित हुई। उनके चेहरे की मुस्कान और उनकी आत्म-संतुष्टि उनके संघर्ष की सबसे बड़ी जीत थी।

इस तरह, एक गरीब दम्पत्ति ने अपनी मेहनत और प्यार के बल पर न केवल अपनी जिंदगी को बदल दिया, बल्कि अपने सपनों को भी साकार किया।

-अभिनव मिश्र,
वैज्ञानिक अधिकारी/ई, प्रचालन

भारतीय सभ्यता की अविरल धारा प्रमुख रूप से हिंदी भाषा से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है।

- अमित शाह,
माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री

कर्मशील

कहानी है राजेश और उर्मिला की। राजेश एक निजी संगठन में कार्यरत कर्मचारी है परन्तु उसकी रूचि चित्रकला में ज्यादा है, तो अक्सर गंगा घाट पर अपनी उपस्थिति देता रहता है। वहीं उसे और उसकी चित्रकला को समय मिलता है। गंगा की लहरों में अजीब सा सुकुन मिलता है। जब भी राजेश को समय मिलता है, तो अपने आप को गंगा किनारे उपस्थित पाता है। वहीं उर्मिला एक गरीब घर की लड़की है, जो फल बेचकर अपना घर चलाती है।

एक दिन राजेश गंगा किनारे बैठे चित्रकारी कर रहा था। तभी वहाँ उसे एक फल वाली लड़की, जो चिल्ला–चिल्ला कर सबको फल बेच रही होती है, दिखाई पड़ती है। फिर लड़की का वहाँ बैठी अन्य महिला से फल के पैसों को लेकर विवाद हो जाता है और महिला गुस्से में उसके फल फेंक देती है जिससे उस लड़की के काफी फल खराब हो जाते हैं। यह सब देख राजेश लड़की के प्रति हमदर्दी और दयादृष्टि से देखने लगता है। तभी लड़की के पिताजी राधेश्याम वहाँ आ जाते हैं और जोर-जोर से उसपर चिल्लाने लगते हैं, उर्मिला ! तूने ये क्या किया, तूने सारे फल खराब कर दिए, गरीबी में आटा गीला कर दिया। वह उर्मिला को कोसने लगते हैं। उर्मिला रो पड़ती है। उर्मिला के पिता उसे लकड़ी से मारने लगते हैं। उनका वृद्ध शरीर और दारू का नशा उन्हें ये करने पर विवश कर देता है क्योंकि उर्मिला के द्वारा कमाए पैसों में से कुछ हिस्सा उनकी दारू में गवां दिया जाता है।

उर्मिला को मारता देखकर राजेश उर्मिला के पिता को रोकता है। उन्हें समझाता है, परन्तु नशे में बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। राधेश्याम राजेश की बात नहीं सुनता और राजेश को उल्टा भला बुरा बोलने लगता है, तब राजेश उर्मिला के बचाव में राधेश्याम को पकड़ कर दूर भेज देता है। उर्मिला सहमी सी रोती हुई फलों को उठाती है। राजेश उसकी मदद करता है, और उसे उसके घर छोड़ देता है। उर्मिला का घर-घर नहीं एक छोटी सी कुटिया है जो गरीबी में कभी भी टूटने को व्याकुल है, जहाँ बरसात में पानी का टपकना आम बात है। उर्मिला राजेश के पूछने पर बताती है कि उसकी माँ की कुछ समय पहले ही मृत्यु हुई है, एक छोटा भाई है, 8 साल का जो स्कूल जाता है। उसी के लिए उर्मिला फल बेचकर पैसे कमाती है। क्योंकि पैसों की कमी के कारण ही वह भी अपनी पढ़ाई 10वीं तक ही कर पाई है। उसका बहुत मन था पढ़ने का, परन्तु अपने पिता राधेश्याम की नशे की लत के कारण पैसों की कमी सी रहती है।

उस दिन के बाद अधिकतर राजेश और उर्मिला का आमना-सामना होता रहता था। राजेश के मन में उर्मिला की छवि एक गरीब लड़की, जो अपने परिवार के लिए कर्मशील है और आजकल की चकाचौंध से दूर सरल स्वभाव वाली बन गई थी। उर्मिला भी राजेश से बातचीत कर लिया करती थी। इसी बीच राजेश की निजी कम्पनी के प्रबंधक द्वारा कुछ कर्मचारियों को निकाला गया जिसमें राजेश का भी नाम था। यह बात राजेश के लिए अधिक निराशाजनक थी। वो दुनियाँ से दूर सा रहने लगा, घाट पर जाना भी छोड़ दिया। उर्मिला राजेश के घर को ढूंढ़ते हुए उसके घर आ पहुंची। राजेश का घर भी कुछ ठीक ना था, बचपन में माता-पिता गुजर गए। अनाथ आश्रम वालों ने उसकी पढ़ाई कराई। अभी वो किराए के घर में रहता है। उर्मिला के पूछने पर राजेश सारी बात बताता है। उर्मिला राजेश को सहानुभूति देती है, और कहती है कि आपकी चित्रकला अच्छी है, उसी में आप बहुत अच्छा कर सकते हैं।

राजेश मन बना लेता है, कि वो चित्र बनाकर उन्हें बेचेगा। उर्मिला भी उसमें उसकी मदद करती है, समय बीतता गया। धीरे-धीरे राजेश की बनाई चित्रकारी बिकने लगी। कुछ समय बाद उर्मिला के पिता की मृत्यु हो गई। उर्मिला और उसका भाई अकेले से हो गए। समाज के भय से राजेश उन्हें अपने साथ अपने घर ले आया सभी साथ रहने लगे। धीरे-धीरे राजेश और उर्मिला ने एक दूसरे को समझा और शादी कर ली। उर्मिला का भाई भी अपनी पढ़ाई में ध्यान देने लगा। राजेश उसकी मदद करने लगा। यह देखकर उर्मिला भी पढ़ने लगी। धीरे-धीरे राजेश ने खुद का घर खरीद लिया।

शिक्षा — हमें सदैव कर्मशील रहना चाहिए, विपरीत परिस्थिति मनुष्य को शक्तिशाली बना देती हैं।

-मुकेश कुमार शर्मा
सहा. ग्रेड-1, वित्त एवं लेखा

अग्निशमन सेवा सप्ताह

एनएपीएस नरौरा में 14 अप्रैल से 20 अप्रैल-2024 तक अग्निशमन सेवा सप्ताह मनाया गया। इसका विषय था "अग्नि सुरक्षा सुनिश्चित करें, राष्ट्र निर्माण में योगदान दें"। अग्निशमन सेवा सप्ताह के दौरान एफएएफएफ कक्षा, अग्नि प्रदर्शन, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, निबंध लेखन, नारा लेखन प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया गया जिनमें कर्मचारियों, संविदा श्रमिकों, सीआईएसएफ सुरक्षा विंग के कर्मचारियों, गृहिणियों और छात्रों ने भाग लिया।

14.04.2024 को प्रात:काल में संयंत्र स्थल एवं एनएपीएस टाउनशिप में विभिन्न स्थानों पर प्रभात फेरी निकाली गई। संयंत्र स्थल पर आयोजित कार्यक्रम में सर्वप्रथम 14 अप्रैल, 1944 को बॉम्बे डॉक विस्फोट और उसके बाद हुई आग दुर्घटनाओं में अपनी जान गंवाने वाले अग्निशामकों को श्रद्धांजलि देने के लिए पुष्पांजलि अर्पित की गई और 02 मिनट का मौन रखा गया। उसके बाद अग्निशमन सेवा सप्ताह मनाये जाने की आधिकारिक तौर पर श्री बी.एस.मीना, सहायक कमांडेंट/सीआईएसएफ और श्री नीरज मोहन मोडवेल, प्रमुख (आईएस एंड एफ), एनएपीएस प्रबंधन द्वारा घोषणा की गई।

15.04.2024 को एनएपीएस कर्मचारियों के लिए अग्नि सुरक्षा सुनिश्चित करें, राष्ट्र निर्माण में योगदान दें। विषय पर हिंदी और अंग्रेजी में निबंध लेखन प्रतियोगिता तथा संविदा कर्मचारियों के लिए पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की गई।

16.04.2024 को एनएपीएस कर्मचारियों के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, प्राथमिक चिकित्सा अग्निशमन कक्षा और अग्नि सुरक्षा पर प्रदर्शन आयोजित की गई। सीआईएसएफ सुरक्षा विंग के बीच अग्निशामक यंत्र और होज ड्रिल प्रतियोगिता आयोजित की गई।

17.04.2024 को परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय के कर्मचारियों और छात्रों के लिए निकासी ड्रिल और प्राथमिक चिकित्सा अग्निशमन कक्षा और छात्रों के लिए ड्राइंग एवं निबंध प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। एनएपीएस कर्मचारियों के लिए अंग्रेजी और हिंदी में अग्नि विषय पर नारा लेखन प्रतियोगिता तथा संविदा कर्मचारियों के बीच होज और बी.ए. सेट प्रतियोगिता आयोजित की गई।

18.04.2024 को एनएपीएस कर्मचारियों के लिए पोस्टर प्रतियोगिता, प्राथमिक चिकित्सा अग्निशमन और अग्निशामक यंत्र संचालन प्रतियोगिता तथा सीआईएसएफ गृहणियों के लिए प्राथमिक चिकित्सा अग्निशमन कक्षा और अग्नि सुरक्षा पर प्रदर्शन और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

19.04.2024 को एनएपीएस अस्पताल, गेस्ट हाउस, सहकारी समिति, डाकघर और एसबीआई कर्मचारियों के लिए प्राथमिक चिकित्सा अग्निशमन पर व्याख्यान और इसके प्रदर्शन का आयोजन किया गया। सीआईएसएफ फायर विंग कर्मियों के बीच विभिन्न फायर ड्रिल प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

अग्निशमन सेवा सप्ताह का समापन समारोह 20.04.2024 को फायर स्टेशन एनएपीएस नरौरा में आयोजित किया गया। इस अवसर पर एनएपीएस के केंद्र निदेशक श्री प्रतीक अग्रवाल मुख्य अतिथि थे और अन्य वरिष्ठ अधिकारी और कर्मचारी तथा सीआईएसएफ सुरक्षाकर्मी इस अवसर पर उपस्थित थे। प्रभारी अग्निशमन विंग ने मुख्य अतिथि और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों का स्वागत किया और अग्निशमन सेवा सप्ताह-2024 के आयोजन पर एक संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। सभी को अग्नि सुरक्षा पर बैज वितरित किए गए। इसके बाद पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। श्री प्रतीक अग्रवाल, केंद्र निदेशक, एनएपीएस और श्री नागेंद्र देवरारी, वरिष्ठ कमांडेंट/सीआईएसएफ ने दर्शकों को संबोधित किया और अग्नि सुरक्षा के महत्व पर जोर दिया। अंत में प्रभारी अग्निशमन विंग ने मुख्य अतिथि और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों और दर्शकों को धन्यवाद दिया।

-केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल अग्निशमन विंग

गुणकारी पत्तियां

विचारणीय है कि हमारे सभी देवताओं का पूजन भी पत्तियों से किया जाता है। देवताओं में प्रथम पूज्य गणपति जी महाराज का पूजन दूर्वा से किया जाता है। इसी प्रकार विष्णु भगवान का भोग तुलसी पत्र तथा शिव जी का भोग बेल पत्र के बिना सम्भव नहीं है। ऐसा इसीलिए विधान बनाया गया जिससे मनुष्य भी इससे सीख ले और अपने भोजन में पत्तियों को प्रथम स्थान दे।

सृष्टि में यदि खाद्य पदार्थों की बात करें तो ईश्वर ने सर्वप्रथम पत्तियों का सृजन किया मानो ईश्वर मनुष्य को संकेत दे रहा हो कि मैंने तुम्हारे भोजन की पहली खुराक तुम्हें दे दी है। वास्तविकता है कि हमारे भोजन में यदि पहली खुराक पत्तियों की हो सके तो स्वास्थ्य की ओर उठने वाला यह पहला कदम साबित हो सकता है।

पत्तियों में क्लोरोफिल नामक तत्व पाया जाता है जो शरीर में रोगों से लड़ने की क्षमता पैदा करता है। यदि आपके शरीर में यह तत्व रहेगा तो कोई भी संक्रामक रोग आप पर आसानी से आक्रमण नहीं कर सकेगा। बात चाहे क्लोरोफिल की हो या आयोडिन की अथवा अन्य खनिज लवणों की ये सारे तत्व आग पर चढ़ने से नष्ट हो जाते हैं। अत: उत्तम है कि इसका उपयोग आग पर चढ़ाए बिना ही करना चाहिए।

व्यवहार में पहली खुराक के रूप में आसानी से उपलब्ध कुछ हरी पत्तियां जैसे-धनिया, पोदीना, पालक, मूली के पत्ते, कढ़ी पत्ता, बेल पत्र, तुलसी, दूर्वा आदि को धोकर पानी मिलाकर मिक्सी में पीसकर छान लें। इसी के साथ कुछ हरा आंवला, खीरा, लौकी आदि भी डाल लें। स्वाद के लिए मौसम के अनुसार कोई मीठा फल जैसे सेब या गाजर आदि भी मिला सकते हैं। शहद अथवा नमक मिलाकर स्वादिष्ट जूस लेना सर्वोत्तम है। यह शोधक भी है और अनेक आवश्यक तत्वों की पूर्ति करता है। सीजनल होने के कारण सस्ता भी है।

दोपहर के अल्पाहार के साथ भी उपरोक्त वर्णित 3-4 तरह की पत्तियों को मिलाकर स्वादिष्ट चटनी का सेवन अति लाभकारी है।

जाड़ों के मौसम में विशेष रूप से पालक, धनिया, मेथी, बथुआ आदि को पीसकर आटे के साथ मिलाने का रिवाज भी इसीलिए बनाया गया है ताकि पत्तियों का पूरा लाभ मिल सकें।

शलजम की पत्ती, इमली की पत्ती तथा सरसों के पत्तों में प्रस्तुत मात्रा में कैल्शियम पाया जाता है। यदि हम कुछ पत्तियों का सेवन करने लगे तो कैल्शियम की पूर्ति भी हो जाएगी और यूरिक एसिड व केलोस्ट्राल के दुष्प्रभावों से हम बच जाएंगे। पत्तियों में शोधन का गुण होने के कारण यह अंदर संचित मल को साफ करने में मददगार हैं। पत्तियों के इसी गुण के कारण इनका सेवन करने से शरीर में मल का संचय रुक जाता है। शरीर के अंदर मल की सड़न के कारण बनने वाली गैस तथा एसिड्स से मुक्ति मिलने लगती है।

भोजन के चार तत्व हैं वायु तत्व(पत्तियां), अग्नि तत्व (फल), जल तत्व (सब्जियां), पृथ्वी तत्व (अनाज़)। इनमें सबसे सूक्ष्म वायु तत्व ही है जो पत्तेदार शाक भाजी में पाया जाता है। ये पत्तियां क्षारीय प्रकृति की होने के कारण रक्त में अम्लता को कम करती है। कुछ पत्तियां जैसे-चाय, तम्बाकू आदि की पत्ती भयंकर अम्लीय होती है। कारण जहां इन पत्तियों की खेती होती है वहां जानवरों से सुरक्षा हेतु कोई बाड़ा नहीं बनाना पड़ता। अत: पशुओं से सीख लें और पत्तियों का त्याग कर देने में ही भलाई हैं।

सामान्य रूप से सभी शाक भाजी की पत्तियां शरीर के लिए उत्तम हैं फिर भी किसी रोग विशेष की अवस्था में अनेक प्रकार की अलग-अलग पत्तियों का अपना विशेष महत्व है।

दूर्वा (दूब घास) की पत्ती : आंतरिक अथवा बाह्य रक्तस्राव को रोकने व उदर रोगों में विशेष सहायक।

तुलसी : सभी प्रकार के संक्रमण व दर्द में उपयोगी।

कढ़ी पत्ता : हाई बी. पी. रक्ताल्पता में प्रभावी।

पत्तागोभी : मूत्रल एवं किडनी रोग में विशेष उपयोगी, अल्सर, नपुसंकता, एलर्जी, दुर्बलता में लाभकारी।

धनिया पत्ती : नेत्र रोग वाले विटामिन बी का अभाव व रक्ताल्पता में उपयोगी।

नीम की पत्ती : अस्थमा, मधुमेह, चर्मरोग, खून की अशुध्दता में उपयोगी एवं प्रभावशाली-एंटिबायटिक।

पपीते का पत्ता : रक्त में प्लेटलेट्स बढ़ाने में विशेष उपयोगी।

शरीफा (सीताफल) का पत्ता : मधुमेह में विशेष उपयोगी।

बेल पत्र : संक्रमण, टी.बी., कब्ज, बी. पी., बुखार, हृदय रोग व अस्थमा में लाभकारी।

आम के पत्ते : कब्ज, एसिडिटी में लाभकारी।

ज्वारे की पत्ती : कैंसर, रक्तस्राव, रक्ताल्पता, रक्त शोधन कोलाइटिस में सहायक।

पीपल के पत्ते : पाइल्स, फिशर, फिश्च्युला, स्त्री रोग, मासिक धर्म में बहु उपयोगी।

जामुन के पत्ते : चर्म रोग, थेलिसिमिया, आयरन, विटामिन सी, कैल्शियम में उपयोगी।

अमलतास के पत्ते : पीलिया, लीवर रोग, एक्जीमा, पेट कृमि, सोराइसिस, अपच व कब्ज में लाभकारी।

नींबू के पत्ते : अतिरिक्त गर्मी, रोग प्रति रोधकता बढ़ाने, कफ रोकने, सिर दर्द, गठिया, रुसी में लाभकारी।

अमरूद के पत्ते : खांसी, दंत रोग, कफ में लाभकारी।

मूली के पत्ते : लीवर के रोगों में लाभकारी।

पालक : रक्ताल्पता को दूर कर खून बढ़ाने वाला आयरन का भंडार।

एलोविरा : गुर्दे के रोगों को दूर कर नव यौवन देने वाला होता है।

-संकलन

स्वस्थ रहने की कुंजी

जीवन शैली व खान-पान में बदलाव से कई रोगों से मुक्ति पाई जा सकती है। घरेलू वस्तुओं के उपयोग से शरीर तो स्वस्थ रहेगा ही बीमारी पर होने वाला खर्च भी बचेगा।

कृपया इनका ध्यान रखें।

- फलों का रस, अत्यधिक तेल की चीजें, मट्ठा, खट्टी चीजें रात में नहीं खानी चाहिए।
- घी या तेल की चीजें खाने के तुरंत बाद पानी नहीं पीना चाहिए बल्कि एक-डेढ़ घण्टे के बाद पानी पीना चाहिए।
- भोजन के तुरंत बाद अधिक तेज चलना या दौड़ना हानिकारक है। इसलिये कुछ देर आराम करके ही जाना चाहिए।
- शाम को भोजन के बाद शुद्ध हवा में टहलना चाहिए। खाने के तुरंत बाद सो जाने से पेट की गड़बड़ियाँ हो जाती हैं।
- प्रात:काल जल्दी उठना चाहिए और खुली हवा में व्यायाम या शरीर श्रम अवश्य करना चाहिए।
- तेज धूप में चलने के बाद, शारीरिक मेहनत करने के बाद या शौच जाने के तुरंत बाद पानी कदापि नही पीना चाहिए।
- शहद और घी बराबर मात्रा में मिलाकर नहीं खाना चाहिए, वह विष हो जाता है।
- खाने पीने में विरोधी पदार्थों को एक साथ नहीं लेना चाहिए जैसे दूध और कटहल, दूध और दही, मछली और दूध आदि चीजें एक साथ नहीं लेनी चाहिए।
- सिर पर कपड़ा बांधकर या मोजे पहनकर कभी नहीं सोना चाहिए।
- बहुत तेज या धीमी रोशनी में पढ़ना, अत्यधिक टीवी या सिनेमा देखना, अधिक गर्म-ठंडी चीजों का सेवन करना, अधिक मिर्च मसालों का प्रयोग करना, तेज धूप में चलना इन सबसे बचना चाहिए। यदि तेज धूप में चलना भी हो तो सर और कान पर कपड़ा बांधकर चलना चाहिए।
- रोगी को हमेशा गर्म अथवा गुनगुना पानी ही पिलाना चाहिए। और रोगी को ठंडी हवा, परिश्रम तथा क्रोध से बचाना चाहिए।
- कान में दर्द होने पर यदि पत्तों का रस कान में डालना हो तो सूर्योदय के पहले या सूर्यास्त के बाद ही डालना चाहिए।
- आयुर्वेद में लिखा है कि निद्रा से पित्त शांत होता है, मालिश से वायु कम होती है, उल्टी से कफ कम होता है और लंघन करने से बुखार शांत होता है। इसलिये घरेलू चिकित्सा करते समय इन बातों का अवश्य ध्यान रखना चाहिए।
- आग या किसी गर्म चीज से जल जाने पर जले भाग को ठंडे पानी में डालकर रखना चाहिए।
- किसी भी रोगी को तेल, घी या अधिक चिकने पदार्थों के सेवन से बचना चाहिए।
- अजीर्ण तथा मंदाग्नि दूर करने वाली दवाएँ हमेशा भोजन के बाद ही लेनी चाहिए।
- मल रुकने या कब्ज होने की स्थिति में यदि दस्त कराने हों तो प्रात:काल ही कराने चाहिए, रात्रि में नहीं।
- यदि घर में किशोरी या युवती को मिर्गी के दौरे पड़ते हों तो उसे उल्टी, दस्त या लंघन नहीं करना चाहिए।
- यदि किसी दवा को पतले पदार्थ में मिलाना हों तो चाय, कॉफी या दूध में नमिलाकर छाछ,नारियल पानी यासादे पानी में हीमिलाना चाहिए।
- हींग को सदैव देशी घी में भून कर ही उपयोग में लाना चाहिये। लेप में कच्ची हींग लगानी चाहिए।

दिनचर्या

आज से 3000 वर्ष पूर्व महर्षि बागभट्ट द्वारा रचित अष्टांग हृदय के अनुसार, बीमार व्यक्ति ही अपना सबसे अच्छा चिकित्सक हो सकता है, बीमारियों से मुक्त रहने के लिए दैनिक आहार-विहार द्वारा स्वस्थ रहने के सूत्रों के आधार पर श्री राजीव दीक्षित ने निम्न सूत्र बनाए:।

- रात को दाँत साफ करके सोएं। सुबह उठ कर गुनगुना पानी बिना कुल्ला किए बैठ कर, घूंट-घूंट करके पीएं। एक दो गिलास से शुरुआत करके, धीरे धीरे बढ़ा कर सवा लीटर तक पीना है।
- भोजनान्ते विषमबारी अर्थात भोजन के अंत में पानी पीना विष पीने के समान है। इसलिए खाना खाने से आधा घंटा पहले और डेढ़ घंटा बाद तक पानी नहीं पीना। डेढ़ घंटे बाद पानी जरूर पीना।
- पानी के विकल्प में आप सुबह के भोजन के बाद मौसमी फलों का ताजा रस पी सकते हैं (डिब्बे वाला नहीं), दोपहर के भोजन के बाद छाछ और अगर आप हृदय रोगी नहीं है तो आप दहीं की लस्सी भी पी सकते हैं। शाम के भोजन के बाद गर्म दूध। यह आवश्यक है की इन चिजों का क्रम उलट-पलट मत करें।
- पानी जब भी पीएं बैठ कर पीएं और घूंट-घूंट करके पीएं।
- फ्रीजर (रेफ्रीजिरेटर) का पानी कभी ना पीएं। गर्मी के दिनों में मिट्ठी के घड़े का पानी पी सकते हैं।
- सुबह का भोजन सूर्योदय के दो से तीन घंटे के अन्दर खा लेना चाहिए। अपना मनपसंद खाना सुबह पेट भर कर खाएं।
- दोपहर का भोजन सुबह के भोजन से एक तिहाई कम करके खाएं, जैसे सुबह अगर आप तीन रोटी खाते है तो दोपहर को दो खाएं। दोपहर का भोजन करने के तुरंत बाद बाई करवट लेट जाएं, चाहे तो नींद भी ले सकते हैं, मगर कम से कम 20 मिनट, अधिक से अधिक 40 मिनट। 40 मिनट से ज्यादा नहीं।
- शाम को भोजन के तुरंत बाद नहीं सोना। भोजन के बाद कम से कम 500 कदम जरूर सैर करें। संभव हो तो रात का खाना सूर्यास्त से पहले खा लें। भोजन बनाने में फ्रीजर, माइक्रोवेव ओवन, प्रैशर कूकर तथा एल्युमिनियम के बर्तनों का प्रयोग ना करें।
- खाने में रिफाइन्ड तेल का प्रयोग ना करें। आप जिस क्षेत्र में रहते हैं वहाँ जो बीज उगाये जाते हैं उसका शुद्ध तेल प्रयोग करें, जैसे यदि आपके क्षेत्र में सरसों ज्यादा होती हैं तो सरसों का तेल, मूंगफली होती हैं तो मूंगफली का तेल, नारियल है तो नारियल का तेल। तेल सीधे सीधे घानी से निकला हुआ होना चाहिए।
- खाने में हमेशा सेंधा नमक का ही प्रयोग करना चाहिए, ना की आयोडिन युक्त नमक का। चीनी की जगह गुड़, शक्कर, देसी खाण्ड या धागे वाली मिस्त्री का प्रयोग कर सकते हैं।
- कोई भी नशा ना करें, चाय, काफी, मांसाहार, मैदा, बेकरी उत्पादों का उपयोग नहीं करना चाहिए।
- रात को सोने से पहले हल्दी वाला दूध पीएं।
- सोने के समय सिर पूर्व दिशा की तरफ करना चाहिए।

***

"अधूरा प्यार"

अल्पाहार के बाद स्टेट ट्रांसपोर्ट की एक बस उत्तर प्रदेश परिवहन निगम के अधिकृत ढाबे से रवाना होती है।

ड्राइवर आवाज लगाता है.....

अरे... कोई रह तो नहीं गया।

कोई आवाज नहीं आती, ड्राइवर गाड़ी चला देता है और बस धीरे-धीरे आगे बढ़ती रहती है।

गाड़ी के पीछे-पीछे तभी एक लड़की दौड़ती हुई आती है। रोको.... रोको .... रोको अरे प्लीज - रोको ।

ड्राईवर सुनता ही नहीं और बस चलाते रहता है। तभी एक लड़का गाड़ी के अंदर से चिल्लाता है।

अरे ड्राइवर साहब! सुनाई नहीं दे रहा क्या?

बस रोको । सुना नहीं, बस रोको ।

ड्राईवर ब्रेक लगाता है।

बस के पीछे दौड़ती हुई वो लड़की चली आती है। हांफते हुए -- हा - हा, थैंक्यू, थैंक्यू।

अरे मन्ने न बोल - इस हीरो को बोल। इसी ने बस रुकवाई है। थैंक्यू जी... थैंक्यू जी --- ।

और धीरे-धीरे बढ़ते-बढ़ते वो अपनी सीट पर आ जाती है। जहाँ एक अधेड़ औरत बेसुध होकर सो रही होती है।

धीरे-धीरे वो लड़का भी उस लड़की की सीट के पास आ जाता है। लड़की उस लड़के को देखकर बोलती है.... जी आपका बहुत बहुत शुक्रिया - - ।

अगर आज आप बस नहीं रूकवाते तो न जाने क्या अनर्थ हो जाता।

आपका नाम क्या है?

जी ..... मेरा नाम कामिनी है--! और आपका --? जी मेरा नाम जय है। जय राज सिंह ।

आप कहाँ जा रही हो ?

जी मैं सिद्धवली जा रही हूँ।

और आप - ?

जी मैं भी सिद्धवली जा रहा हूँ फिर वहाँ से अपनी बाइक लेकर पास के गाँव नगली जाऊँगा। मैं वहीं रहता हूँ।

जय कामिनी को देखता है तो नजरें नहीं चुरा पाता है। उसके लिए कामिनी मानों स्वर्ग से आई कोई अप्सरा थी।

वैसे आप इतना घबरा क्यों गई थीं यहाँ से सिद्धवली कोई ज्यादा दूर तो है नहीं।

यही कोई 10-12 किमी होगा। वैसे भी आप किसी और वाहन को पकड़ कर आ सकती थीं।

जी हाँ आ तो सकती थी!

पर मेरी मौसीजी का क्या होता? मतलब जो सो रही है, ये आपकी मौसी हैं ?

जी इन्हीं के पास रहकर मैं बढ़ी हुई हूँ। पर अब ये बेसुध रहती हैं।

बहुत साल पहले इनके पति और बेटे की एक कार हादसे में मौत हो गई थी।

उनकी अकाल मृत्यु से इनको बहुत सदमा पहुंचा और ऐसी हालत हो गई, हालत क्या है, एक तरह से जिंदा लाश हो गई हैं।

मैं और इनकी बेटी रश्मि मिलकर इनकी और घर की देखभाल करते हैं।

फिर घर कैसे चलता है? - जय बोला ।

जी वो जो सिद्धवली में केदार मार्केट है वो मेरे मौसा जी की है।

उसी के किराए से घर और दवाइयों का खर्च चल जाता है।

आप यहाँ क्या कर रहे थे? जी मैं यही पीसी ...

चलिए -- चलिए. चलिए सिद्धवली की सब सवारी आगे आ जाएं, कंडेक्टर बोला। ड्राइबर बस रोक देता है।

वो लोग बस से उतर आते हैं।

कुछ ही दूर खड़ी मारुती कार में से आवाज आती है।

कामिनी! कामिनी! आ जल्दी आजा, कब से इंतजार कर रही हूँ।

आती हूँ रश्मि- तू उधर ही रूक!

जय जय जल्दी से अपना फोन दो- कामिनी बोली।

अरे जल्दी स्क्रीन लॉक खोलकर अपना फोन दो।

जय एकदम हक्का बक्का रह जाता है। और फट से स्क्रीन अनलॉक कर अपना फोन कामिनी को दे देता है।

कामिनी फटाफट अपना नम्बर डायल कर के मिस्ड कॉल कर देती है और फोन वापस कर देती है।

बाद में बात करती हूँ- कामिनी बोली।

जय को तो जैसे सब सपना लग रहा था। जय भी बाइक उठाकर अपने घर चला जाता है।

"जय घर जाकर इधर-उपर घूमने लगता है जैसी बड़ी व्याकुलता से इंसान घूमता है।

कुछ देर बाद जय की माँ पूछती है, बेटा क्या बात है?

तू इतना व्याकुल क्यों है?

माँ -माँ - माँ वो बात ऐसी है।

हां, हां बोल क्या बात है?

माँ वो ---?

इसके पहले की कोई और बात होती ---जय के फोन की घंटी बजती है, जय फोन उठाता है।

जी- कौन ?

मुझे जय से बात करनी है।

हाँ — हाँ, जय बोल रहा हूँ।

मैं कामिनी बोल रही हूँ।

ओहो कामिनी,

आप ठीक से घर पहुँच गई और कोई परेशानी तो नहीं हुई। घर में सब ठीक-ठाक हैं। मौसी ठीक हैं न? पता है जब से घर आया हूँ बस आपके ही बारे में सोच रहा हूँ। सच पूछो तो बस आपका दीवाना हो गया हूँ।

और एक डर भी लग रहा है कि आगे क्या होगा।

मैं- मैं, तुमसे मिलना चाहता हूँ, अभी आता हूँ बताओ!

अरे — अरे, शांत हो जाओ, इतने उतावले मत बनो।

मैं भी तुमसे मिलना चाहती हूँ... बात करना चाहती हूँ। तुम्हारे बारे में बहुत कुछ जानना चाहती है।

कल शाम 5 बजे राजकीय इंटर कॉलिज के सामने वाले गार्डन में मिलते हैं।

चलो फोन काटती हूं-- कल मिलेंगे।

तय समय के अनुसार कामिनी 5 बजने में 5 मिनट पहले ही आ जाती हैं।

जहाँ जय पहले से ही इधर-उधर चक्कर लगा रहा होता है।

जय! जय! कामिनी बोली।

अरे कामिनी! आ गई तुम, कब से इंतजार कर रहा हूँ। कितनी देर कर दी आने में?

अरे तुम्हें कोई प्रोब्लम है क्या है इतने उताबले क्यों रहते हो अभी 5 मिनट बाकी है 5 बजने में और इतना शोर क्यों मचा रहे हो?

कामिनी मैं लाइफ में पहली बार सीरियस हुआ हूँ। न जाने क्यूँ तुमको देखकर लगा कि शायद तुम्हीं मेरी मंजिल हो।

देखो जय! मैं भी सेटल होना चाहती हूँ और मैंने काफी स्ट्रगल किया है। मेरे कुछ सपने हैं, मैं कुछ अचीव करना चाहती हूँ। एक अच्छी जिंदगी जीना चाहती हूँ। मैं एक बार को तो तुमको देखकर बहक सी गई थी, जब तुमने डेरिंग करके बस रुकवाई थी। मुझे तुममें एक सच्चाई दिखाई दी। लेकिन जय, एक अच्छी जिंदगी जीने के लिए सिर्फ प्यार ही काफी नहीं होता।

मैं एक अच्छी लाइफ स्टाईल चाहती हूँ, कुछ अचीव करना चाहती हूँ और उसके लिए मुझे चाहे कितनी भी मेहनत करनी पड़े, मैं करूँगी। अब तुम बताओ!

कामिनी मैं क्या बोलूँ तुमने इतना सब तो कह दिया। मैं एक साधारण परिवार से लोवर मिडिल क्लास फैमिली से हूँ। मेरे पिताजी की लेडीज टेलरिंग की एक छोटी सी दुकान है। माँ एक प्योर हाउस वाईफ है। पिताजी से मेरी ज्यादा बनती नहीं।

बस यूँ समझ लो कि बस मां की वजह से ही घर में हूँ। मैंने B.A इन इंग्लिश किया है और प्राइवेट से डिप्लोमा इन कम्प्यूटर हार्डवेयर में किया है। फिलहाल माइक्रोटेक कंपनी में जौब ज्वाइन की है। उसके जहाँ-जहाँ पीसी/प्रिन्टर के AMC हैं वहाँ सर्विस देता हूँ।

ठीक है जय, अब ज्यादा जज्बात में न बह कर और अपने इमोशंस पर काबू पाकर कामयाबी की तरफ कदम बढ़ाते हैं। अगर कामयाब हुए तो जरूर मिलेंगे।

मैं कल नोएडा जा रही हूँ, एक कंपनी में इंटरव्यू देने के लिए। फिर कामिनी चली जाती है।

जय वहीं बैठा रहता है, उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था, क्या करे क्या न करे। उसे ऐसा लग रहा था कि सब कुछ जैसे हासिल होते होते रह गया।

जय यूँ ही सर झुकाए बैठे रहता है। शाम हो जाती है।

अब जय पहले से ज्यादा उदास रहने लगता है, उसका किसी काम में मन नहीं लगता।

जॉब पर ही टाईम पर नहीं पहुँचता। कभी भी बिन बताए छुट्टी मार देता जिसके लिए कम्पनी ने उसे कई बार वॉर्निंग दे दी है।

जय कामिनी को बार बार कभी भी फोन कर डालता। जिससे कामिनी चिढ़ जाती थी। वो कभी उसका फोन उठाती कभी नहीं और बात के नाम में सिर्फ हाय, हैलो से ज्यादा कुछ नहीं होता।

कामिनी इंटरव्यू पर इंटरव्यू देती रहती है, कहीं जॉब पसंद नहीं आती तो कभी सैलरी।

एक दिन पेपर में एड छपता है "नाएका एड शूट" वॉक इन इंटरव्यू, स्थान- होटल हयात, न्यू देहली। ऐनी ग्रेज्युएट केन एप्लाई, फीमेल ऑनली।

कामिनी सोचती है क्यों न यहाँ ट्राई किया जाए। कामिनी अगले दिन सीधे साधे कपड़े पहनकर बिना मेक अप किए होटल हयात पहुँच जाती है।

होटल पहुँचकर उसे बहुत शर्म सी महसूस होती है। वहां अच्छे अच्छे कपडे हुए बड़ी बड़ी गाड़िया में लड़कियाँ आई थीं। कामिनी उनमें एक साधारण सी लड़की लग रही थी। उधर इंटरव्यू चल रहे होते हैं। दरअसल नाइका वाले कंपनियों के प्रोडक्ट प्रमोशन के लिए एक नए चेहरे की तलाश कर रहे होते हैं। इंटरव्यू और ओडिसन चलता रहता है और कामिनी का नंबर नहीं आता। दोपहर के 2 बज जाते हैं। 5 लड़कियाँ शॉर्टलिस्ट हो जाती हैं। फाइनल सेलेक्शन के लिए चीफ एक्जीक्यूटिव का इंतजार होता है। सब चाय पीने और स्नैक्स खाने में लग जाते हैं। कामिनी को लगता है कि अब यहाँ कुछ होने वाला नहीं है। वो मायूस होकर जाने लगती है। तभी अचानक लोग चिल्लाते है वीर सर आ गए। वीर सर आ गए। सामने काले रंग की BMW कार आकर रुकती है। ड्राइवर फट से उतरकर दरवाजा खोलता है। अंदर से एक हैंडसम नौजवान काले रंग का कोट पहने, सफेद शर्ट और लाल टाई पहनकर कर बाहर निकलता है।

तिवारी क्या स्टेटस है? कितनों का ट्राइल हुआ? सर 5 लड़कियों को शॉर्टलिस्ट किया है। बाकी आप देख लीजिए। हूँ, चलो। जैसे ही वीर सर अंदर की ओर बढ़ते हैं, उनकी निगाह जाती हुई कामिनी पर पड़ती है। वे पूछते हैं तिवारी जी ये कौन है? सर यह कोई

मामूली सी लड़की लगती है। इसको देखकर ऐसा लगा नहीं लगा कि ये कुछ कर पाएगी, इसलिए इसका पंजीकरण नहीं किया। तिवारी - मैंने तुम लोगों को पहले ही बताया था कि मुझे एक रियल टेलेंट चाहिए, अमीर-गरीब, साधारण-असाधारण नहीं। पहले इसका ओडिसन होगा।

जी, जी सर। तिवारी कामिनी के पास जाकर कहता है- चलो मैडम, सर आपको बुला रहे हैं ओडिसन के लिए । कामिनी दंग रह जाती है और कहती है जी मैं? हाँ तुम चलो। तिवारी बोला। वीर सर पूछते हैं- क्या तुमने पहले कभी ओडिसन दिया है?

जी, जी नहीं। सर, क्या करना होगा बताइये । हम कोरियन कंपनी के एक नये फ्रीज के लिए एड शूट कर रहे हैं। तुमको अभी फ्रिज के पेरेलल खड़े होकर अपने एक्सप्रेशन दिखाने हैं और बोलना है- वॉउ, क्या फ्रिज है! ये कितना अच्छा है! कामिनी बिना समय बिताए तुरंत फ्रिज के पास खड़े होकर उसी अवस्था में तुरंत स्टार्ट हो जाती है। वॉउ, क्या फ्रिज है! ये कितना बड़ा है!

गुड, गुड, बहुत बढ़िया। वीर सर कहते हैं। कामिनी यह सुनकर चहक उठती है, उसकी आँखों एक चमक सी आ जाती है। एकदम सादा कपड़े में लंबी चोटी बांधे हुए और दाये गाल पर लटकी हुई लट उसकी खूबसूरती बढ़ा रही थी। तिवारी - इसकी आँखों में एक सच्चाई है। इसका लाइट मेकअप करवा कर दुबारा शूट करवाओ। वीर सर कहते हैं- कामिनी तुम्हें 50,000/- सेलरी और 2 लाख प्रति शूट पर रख लिया जाता है। पर एक बात ध्यान रखना हम कंपनी के नये प्रोडक्ट लांच के लिए एड शूट करते हैं, कभी-कभी रिमोट लोकेशन पर भी जाना पड़ता है। क्या तुम कर पाओगी? जी सर। थैंक्यू वेरी मच। फिर फटाफट मेकअप के बाद एड शूट हो जाता है। पैक-अप के बाद वीर सर कामिनी से पूछते हैं- कहाँ से आई हो? जी सर सिदधवली से आई हूँ। यहाँ से कितनी दूर है? सर लगभग 120 किमी। ठीक है। तिवारी ! ड्राइवर को बोलो मैडम को घर छोड़कर आए मेरी गाडी में और मैं तुम्हारे साथ चलूँगा। और तुम कल सुबह 10 बजे मुझे हमारे नोयडा फिल्म सिटी वाले ऑफिस में आकर मिलो।

जी सर। कामिनी बोली।

कामिनी जब सिद्धवली पहुँचती है, तो सब लोग उसे BMW कार में देख कर हक्के बक्के रह जाते हैं। कामिनी ड्राइवर से कहती है- भइया! यहीं छोड़ दो आगे तंग गली है। मैं चलकर चली जाऊँगी।

ड्राइवर बोला, ठीक है मैडम। कामिनी जब गाड़ीसे उतर कर चलती है तो उसे एक अजीब खुशी होती है। मानों बादलों पर चल रही हो। कामिनी घर जाकर सपनों में खो जाती है। खुशी के मारे उसे नींद भी नहीं आती। इधर उसके फोन पर जय के 51 मिस्ड कॉल आए थे। कामिनी ध्यान नहीं देती है। कल तय समय अनुसार कामिनी वीर सर के आफिस नोएडा पहुँच जाती है। वीर सर- कामिनी क्या तुम कर पाओगी न ?

कामिनी कहती है- जी सर कर लूँगी। हमको कभी कभी रिमोट लोकशन पर हफ्ता-हफ्ता रहना पड़ता है, क्या तुम रह पाओगी।

जी सर - रह लूँगी गुड, वेरी गुड।

कामिनी ये कंपनी मेरे पापा ने बनाई है, मैं तो बस इसे चला रहा हूँ। कुछ साल पहले मेरे छोटे भाई की रेसर बाइक एक्सीडेंट में मृत्यु हो गई। मैं अमेरिका में पढ़ाई छोड़ कर इंडिया आ गया। भाई की अकाल मृत्यु से माँ तो एकदम जिंदा लाश बन गई है, और पापा भी काफी टूट गए हैं। वो घर पर रहकर मां की देखभाल करते हैं। ओह नो सर! very sad. मेरे भी मौसा जी और मौसेरे भाई की एक कार हादसे में मृत्यु हो गई थी, मैं बचपन में ही मौसीजी की देखभाल के लिए सिदधबली आ गई थी। मेरी मौसी भी अभी तक एक जिंदा लाश हैं। Very Common! चलो तुम्हें तुम्हारे घर छोड़ आता हूँ और मौसी जी को भी मिल लूँगा। अगले हफ्ते कुल्लू मनाली जाएंगे एड शूट के लिए।

जी। कामिनी बोली। वीर सर और कामिनी गाड़ी में बैठ जाते हैं और गाडी सिद्धवली लिए चल पड़ती है। गाड़ी में कामिनी वीर सर से पूछती है- सर आपने शादी की या नहीं?

नहीं कामिनी, अभी तक नहीं ?

क्यूं सर ? मुझे एक सच्ची सीधी सादी लड़की चाहिए जो मेरे अलावा मेरी मां और पापा की भी देखभाल कर सके। क्योंकि नौकर चाकर कितने भी रख लो, उनमें अपनापन नहीं आता। सब सुनकर कामिनी सपनों की दुनिया में खो जाती है। और वीर सर की भी आंख लग जाती है। जब गाड़ी सिद्धवली बाजार में पहुँचती है सामने से बाइक पर जय आ रहा होता है। वो कामिनी को गाड़ी में देख लेता है- वो जोर जोर से चिल्लाता है- कामिनी, कामिनी। कामिनी ध्यान नहीं देती।

और सामने से आ रही लॉरी से जय टकरा जाता है। बाइक के परखच्चे उड़ जाते हैं। जय दूर जाकर गिरता है। भीड़ इकट्ठी हो जाती है। शोर सुनकर वीर सर भी कामिनी को लेकर बाहर आते हैं। पास जाकर जब कामिनी जय को देखती है तो उसके चेहरे का रंग उड़ जाता है।

अरे, रे! वीर सर पूछते हैं क्या तुम जानती हो इसे । जी-जी - नहीं सर । जय को जब होश आता है तो वह खुद को एक अस्पताल में पट्टियों से भरा, हाथ और पांव में प्लास्टर किए हुए पाता है। उसके चेहरे पर एक अनंत उदासी होती है।

प्यार एक हकीकत है, कोई ख्वाब नहीं।
यह वो इम्तिहान है जिसमें हर कोई पास नहीं ।।
जिन्हें प्यार मिला वो गिनती में खास नहीं।
जिन्हें प्यार न मिल सका उनका कोई हिसाब नहीं।

-इस्माईल खान
आईटी एवं संचार अनुभाग

यूनीकोड के माध्यम से कम्प्यूटर पर हिंदी टाइपिंग

यूनीकोड का पूरा नाम यूनिवर्सल एनकोडिंग है। सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा भाषा एनकोडिंग के लिए यूनीकोड एनकोडिंग को मानक (स्टैंडर्ड) के रूप में मान्यता दी गई है।

यूनिकोड की आवश्यकता क्यों -

1. विभिन्न विभागों/कार्यालयों में हिंदी में कार्य करने के लिए कंप्यूटरों पर अलग-अलग सॉफ्टवेयरों/फोंटों जैसे आकृति, आईएसएस आफिस, एपीएस, अक्षर, और कृति देव फोंट व अन्य फोंटों का प्रयोग किया जा रहा है, जो मानक भाषा एनकोडिंग के अनुरूप नहीं हैं और ये एक दूसरे के साथ मेल योग्य (कंपेटिबल) नहीं होने के कारण हिंदी फाइलों/ सामग्री के प्रेषण तथा प्रदर्शन में समस्या आती है।
2. मानक भाषा एनकोडिंग (यूनीकोड) से भिन्न भाषा एनकोडिंग के प्रयोग ने कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग में फोंट संबंधी एक बड़ी समस्या को जन्म दे रखा है।
3. अत: यह आवश्यक है कि प्रत्येक कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने हेतु मानक भाषा एनकोडिंग यानि यूनीकोड का प्रयोग किया जाए। भारत जैसे बहुभाषी देश में ई-गवर्नेंस को सफलतापूर्वक लागू करने में मानक एनकोडिंग का अनुपालन एक महत्वपूर्ण आधार है।
4. कंप्यूटरों पर यूनीकोड के प्रयोग से हिंदी में तैयार/ उपलब्ध दस्तावेजों, वैब पृष्ठों, ई-मेल को भेजने तथा प्राप्त करने में फोंट संबंधी समस्याओं से बचा जा सकता है।

यूनीकोड के प्रयोग से लाभ -

- आप कार्यालय से संबंधित से 100 प्रतिशत कार्य हिंदी में कर सकते हैं। यह अंतरराष्ट्रीय मानक है। हिंदी सामग्री/ फाइलों का आसानी से आदान-प्रदान कर सकते हैं।
- यह यूजर फ्रेंडली सॉफ्टवेयर है। इसमें की-बोर्ड लेआउट जैसे हिंदी फोनेटिक, हिंदी रेमिंग्टन एवं हिंदी इंस्क्रिप्ट के विभिन्न विकल्प उपलब्ध हैं।
- जो व्यक्ति हिंदी की टाइपिंग जानते हैं वे हिंदी रेमिंग्टन/ हिंदी टाइपराइटर की-बोर्ड का विकल्प चुनकर आसानी से हिंदी में टाइप कर सकते हैं।
- ऐसे व्यक्ति जो हिंदी टाइपिंग नहीं जानते हैं वे हिंदी फोनेटिक की-बोर्ड "ट्रांसलिटरेशन" विकल्प को चुनकर
- हिंदी शब्दों को रोमन में टाइप करेंगे तो उसका आउटपुट देवनागरी लिपि में आएगा।

की-बोर्ड के विकल्प —

यूनीकोड में प्रयोगकर्ता को निम्नलिखित की-बोर्डों का विकल्प मिलता है-

1. Hindi Transliteration
2. Hindi Typewriter
3. Hindi Typewriter (Akruti)
4. Hindi Remington (PNB)
5. Hindi Remington(GAIL)
6. Hindi Remington (CBI)
7. Hindi inscript
8. Hindi webdunia keyboard
9. Hindi Anglo Nagari

कंप्यूटरों पर यूनीकोड को सक्रिय करना —

यूनीकोड को इंटरनेट से निशुल्क डाउनलोड किया जा सकता है तथा इसको सक्रिय करने की विधि भी इंटरनेट पर उपलब्ध है। एनएपीएस में यह कार्य आईटी अनुभाग द्वारा किया जाता है।

यूनीकोड में कार्य कैसे शुरू करें —

कम्प्यूटर पर यूनीकोड शुरू करने के लिए बायें Shift + Alt को एक साथ दबाकर छोड़ देने से कम्प्यूटर हिंदी में टाइप करने योग्य स्थिति में आ जाता है। सिस्टम ट्रे में HI का इंडीकेशन आ जाता है। यह कार्य सिस्टम ट्रे में उपलब्ध EN पर क्लिक कर HI का चयन करके भी किया जा सकता है।

- इसके पश्चात settings से अपनी सुविधानुसार की-बोर्ड का चयन करके आसानी से हिंदी में टाइप किया जा सकता है।
- Shift +Alt को पुन: एक साथ दबाकर छोड़ देने से कम्प्यूटर अंग्रेजी में टाइप करने योग्य स्थिति में आ जाता है अथवा भाषा इंडीकेटर पर अंग्रेजी भाषा ऑप्शन चुनकर अंग्रेजी में टाइप कर सकते हैं। सिस्टम ट्रे से 'टॉगल की' EN या HI भाषा का चयन कर सकते हैं।
- जिन्हें हिंदी टाइपिंग की जानकारी नहीं है वे Hindi Transli -teration Keyboard चुनकर हिंदी को रोमन में टाइप करके आसानी से हिंदी में टाइप कर सकते हैं। कोई भी अक्षर टाइप करते ही एक हैल्प पट्टी भी कम्प्यूटर स्क्रीन पर उपस्थित हो जाती है जिसमें हिंदी अक्षर की बारहखड़ी को अंग्रेजी में टाइप कैसे किया जाए, की जानकारी दी गई है।
- फोनेटिक की-बोर्ड (ट्रांसलिटरेशन) के माध्यम से हिंदी टाइप करने के लिए हिंदी वर्णों को निम्नानुसार रोमन में टाइप करें। जिस व्यंजन को आधा लिखना हो, उसमें vowel 'a' टाइप न करें तो वह व्यंजन आधा हो जाएगा।

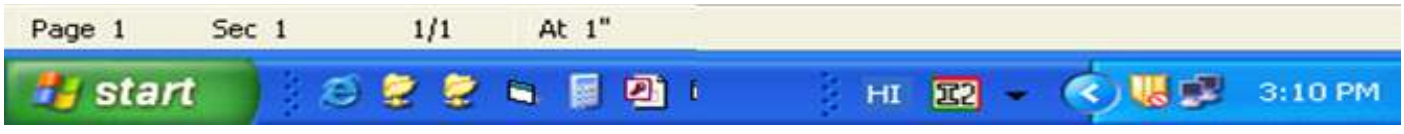

उदाहरण :-

स्वर:

अ	a	आ	aa	इ	i	ई	ee,ii,I	उ	u
ऊ	oo,uu,U	ऋ	R	ए	e	अँ,	A	ऐ	ai,ei
ओ	o	ऑ	O	औ	au,ou	अं	a^	अः	aH

व्यंजन :

क	ka, ca	ख	kha	ग	ga	घ	gha	ङ	Nga
च	cha	छ	chha	ज	ja	झ	jha	ञ	Nja
ट	Ta	ठ	Tha	ड	Da	ढ	Dha	ण	Na
त	ta	थ	tha	द	da	ध	dha	न	na
प	pa	फ	pha,fa	ब	ba	भ	bha	म	ma
य	ya	र	ra	ल	la	व	va,wa	श	sha
ष	Sha	स	sa	ह	ha	क्ष	kSha,X	त्र	tra
ज्ञ	Gya,jNja,dny								

संयुक्त व्यंजन :

क्ष	त्र	ज्ञ	कृ	क्र	श्र	ऋ
kSha/ X	tra	Gya	kRi	kra	shra	R

मात्रा											
◌ा	aa	◌ि	i	◌ी	ee,ii,I	◌ु	u	◌ू	oo,uu,O	◌ृ	R
◌े	e	◌ै	ai,ei	◌ो	o	◌ौ	au,ou	◌ॅ	A	◌ॉ	O

अनुस्वार, विसर्ग एवं चंद्र बिंदी

◌ं	^	◌ः	H	◌ँ	M	ड़	D_a

विराम चिन्ह :

अंग्रेजी के सभी symbols [ ] { } ( ) - + * / = । ; : . , " ? ! % \ ~ _ भी देवनागरी लिपि में ज्यों के त्यों प्रयोग होते हैं।

हिंदी में पत्र, टिप्पणी अथवा सूची इत्यादि तैयार करने में यूनीकोड का प्रयोग करेंगे तो इससे निःसंदेह सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ेगा।

-प्रेम पाल, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

कला की परछाई

मनोज एक साधारण पृष्ठभूमि से आने वाला कलाकार था, लेकिन उसकी कला में एक असाधारण गहराई थी। उसकी हर पेंटिंग में न केवल रंग होते थे, बल्कि भावनाओं की ऐसी परतें होती थीं जो देखने वाले को सोचने पर मजबूर कर देती थीं। वह घंटों अपने आर्ट स्टूडियो में बंद रहता, दीवारों पर टंगी अधूरी पेंटिंग्स के बीच। उसकी कला का केंद्र बिंदु हमेशा से एक ही था—एक महिला का चेहरा। वह चेहरा उसकी कल्पना का हिस्सा था, या शायद किसी बीते हुए पल की धुंधली याद। यह चेहरा उसकी कला का अभिन्न अंग बन चुका था, लेकिन उसे नहीं पता था कि वह किसका चेहरा था।

हर दिन, मनोज इस चेहरे को और स्पष्ट करने की कोशिश करता। कभी उसकी आँखों में एक उदासी होती, तो कभी एक अनकही कहानी। उसे लगता जैसे यह चेहरा उससे कुछ कहना चाहता है, कोई कहानी सुनाना चाहता है, जिसे वह समझ नहीं पा रहा। उसने कई बार खुद से पूछा—आखिर यह कौन है? क्यों यह चेहरा बार-बार उसकी कला में उभर आता है?

एक दिन, जब वह अपने स्टूडियो में काम कर रहा था, तभी दरवाजे पर दस्तक हुई। उसने दरवाजा खोला और सामने खड़ी महिला को देखकर स्तब्ध रह गया। वह वही चेहरा था जिसे वह वर्षों से अपनी पेंटिंग्स में उकेर रहा था। उसकी आँखों में वही गहराई थी, वही अनकही बातें। वह महिला उसकी पेंटिंग से निकलकर हकीकत में आ गई थी, ऐसा उसे महसूस हुआ।

नमस्ते, मेरा नाम अंजलि है। मैं आपके बारे में बहुत सुना है, और आपकी कला देखने आई थी, उसने कहा। उसकी आवाज़ में एक अजीब सा आकर्षण था, जैसे वह पहले से ही मनोज को जानती हो। मनोज ने उसे स्टूडियो में आमंत्रित किया और उसकी पेंटिंग्स दिखाने लगा। अंजलि ने हर पेंटिंग को ध्यान से देखा, और जब उसने वह चेहरा देखा, जो उसकी ही तरह दिखता था, तो वह चौक गई।

यह चेहरा..., अंजलि ने धीरे से कहा, यह मैं हूँ, लेकिन हमने तो पहले कभी मुलाकात नहीं की। कैसे आपने मेरी तस्वीर बनाई?

मनोज कुछ बोल नहीं पाया। वह खुद भी नहीं समझ पा रहा था कि यह सब कैसे हो रहा है। दोनों के बीच एक गहरा मौन छा गया। लेकिन उस मौन में भी एक संवाद था, जिसे शब्दों की आवश्यकता नहीं थी।

कुछ दिनों बाद, अंजलि और मनोज के बीच मुलाकातें बढ़ने लगीं। वे कला, जीवन और उन अनसुलझे रहस्यों के बारे में बातें करने लगे जो उन्हें एक-दूसरे की ओर खींच रहे थे। अंजलि का भी अतीत कुछ धुंधला था। वह भी अपने जीवन में कुछ खोई हुई थी, जैसे उसकी पहचान का एक हिस्सा गायब हो गया हो।

मनोज की पेंटिंग्स में अब पहले से ज्यादा गहराई आने लगी। उसकी कला में अब एक नई कहानी बुन रही थी। वह समझ चुका था कि उसकी कला का उद्देश्य सिर्फ रंगों से खेलना नहीं था, बल्कि उन भावनाओं को व्यक्त करना था जो उसके और अंजलि के बीच पनप रही थीं।

अंजलि ने भी मनोज की कला में खुद को फिर से खोजा। उसकी हर पेंटिंग में उसे अपनी जिंदगी की एक नई परत दिखने लगी। वे दोनों एक-दूसरे के बिना अधूरे थे, जैसे कला के बिना कलाकार। उनकी जिंदगी अब एक दूसरे से जुड़ गई थी, और उनके बीच की डोर इतनी मजबूत हो गई थी कि उसे कोई नहीं तोड़ सकता था।

समय बीतता गया, और मनोज की पेंटिंग्स में एक नई सजीवता आ गई। उसकी कला में अब सिर्फ दुख नहीं था, बल्कि खुशी और रंग भी थे। उसकी पेंटिंग्स में अब जीवन की हर वो छवि दिखने लगी, जो वह अंजलि के साथ जी रहा था।

अंततः, कला ने उन दोनों को एक ऐसे बंधन में बाँध दिया, जिसे समय भी नहीं तोड़ सकता था।

- इंद्र भूषण
वैज्ञानिक सहायक-एफ, एचपीयू

हम शतरंज के प्यादे हैं

मैंने एनपीसीआईएल ज्वॉइन किया कल्पक्कम से। वहां पता चला कि तारापुर में जगह खाली है, इसलिए मैंने ट्रांसफर के लिए निवेदन कर दिया, क्योंकि मेरा घर महाराष्ट्र में था। ट्रेनिंग के दौरान ही दो महिने में मुझे ट्रांसफर मिल गया। बाद में मुझे पता चला कि तारापुर में क्वथन जल रिएक्टर प्लांट है, जो भविष्य में कहीं और आने वाला नहीं है, इसलिए हमने ट्रेनिंग के अंत में कोशिश की कि अन्य प्लांट में पोस्टिंग हो जाए, मगर हमारे टॉपर को छोड़कर सभी को तारापुर में ही ज्वॉइन करना पड़ा।

नौकरी के 21 वर्ष मैंने तारापुर के इंस्ट्रुमेंट अनुरक्षण में काम किया। अंत में बदली के लिए सतर्कता अधिकारी की जिम्मेदारी 3 वर्ष सम्हाली। उसके बाद 3 वर्ष वरिष्ठ तकनीकी अभियंता (इलेक्ट्रिकल एवं इंस्ट्रुमेंट) का काम किया। उसके बाद 4 वर्ष मैंने प्रमुख (सी.टी.सी.) के रूप में भी काम किया।

2019 में मैंने वानो पीअर के लिए आवेदन किया, यह सोचकर कि छोटा बेटा प्रथम वर्ष में है, उसके अंतिम वर्ष तक आने तक मेरे 2 वर्ष का डेपुटेशन पूरा हो जायेगा, मगर कोविड की वजह से मुझे 2022 में जाना पड़ा, जब वह अंतिम वर्ष में आ गया था। हालांकि विज्ञापन परिपत्र में यह लिखा नहीं था कि वहां पगार कितना मिलेगा, मगर मुझे चयन के बाद पता चला की पगार कम मिलता है। उस समय मना करने से एनपीसीआईएल का नाम खराब होगा, इसलिए मैं चुपचाप 2 वर्ष के लिए वानो टोकयो सेंटर चला गया। वहां रहने का खर्चा ज्यादा था, मगर वहां की हवा तथा पानी की गुणवत्ता अच्छी थी और सबसे बड़ी बात वहां ईमानदारी थी, अगर किसी की बैग अथवा मोबाइल बस या ट्रेन में छूट भी जाए, तो वापस मिल जाता था।

मेरे साथ जो भी लोग वानो टोकयो सेंटर गए थे, वे तीसरे वर्ष के लिए वहीं रुक गए। मैं नहीं रुका क्योंकि मुझे 2025 में सेवानिवृत्त होने से पहले बड़े बेटे की शादी तय करनी थी। 24 जून को मैं तारापुर पहुंचा, मकान की चाबी ली, उसी दिन शाम को मेरा नरौरा के लिए ट्रांसफर ऑर्डर आ गया।

जब दांत थे, तब चने नहीं थे, आज चने हैं, मगर दांत नहीं है।

एस.जी. भठेजा,
प्रशिक्षण अधीक्षक, एनएपीएस

खोये खोये से रहते हैं हम

रह गये तड़प कर हम
जिस दिन से लुटा है दिल
खोये खोये से रहते हैं हम
जिस दिन से जुदा हो गए तुम॥

पलकों पे ठहर जाते हैं
जाने क्या सोच मेरे आसूं?
कुछ भी ना समझ आये
क्यू हमसे खफ़ा हो तुम?
खोये खोये से रहते हैं हम
जिस दिन से जुदा हो गए तुम॥

रह जाये तरस नजरे
तुम्हे पाके ना राहों मे
आओ या मत आओ
मेरे दिल की वफा हो तुम
खोये खोये से रहते हैं हम?
जिस दिन से जुदा हो गए तुम॥

हम दिल से तुम्हारे हैं
ये मान भी अब जाओ
तुम जान हमारी हो
मेरी जान अदा हो तुम
खोये खोये से रहते हैं हम
जिस दिन से जुदा हो गए तुम॥

तुम बिन मेरा लरजे मन
अब लौट भी तुम आओ
आँख बरस पड़े
पंछी याद आते हो पल पल तुम
खोय खोये से रहते हैं हम
जिस दिन से जुदा हो गए तुम॥

-पंछी शर्मा

मैं खुश हूँ

चारों ओर के अंधियारे में, चांदनी में भी खुश हूँ,
अपनी छोटी सी जिंदगी में, गमों में भी खुश हूँ।
दुखों के इस सागर में, दूसरे की खुशी में भी खुश हूँ,
मैं खुश हूँ, क्योंकि आप भी खुश हैं॥

आज इस महंगाई के दौर में, अपनी गरीबी में भी खुश हूँ,
मिठाई ना मिले फिर भी, गुड़ की मिठास में भी खुश हूँ।
जिंदगी की दौड़ में, अपने अकेलेपन में भी खुश हूँ,
मैं खुश हूँ, क्योंकि आप भी खुश हैं॥

कल के इंतजार में, आज में खुश हूँ,
जो बीत गया, उस समय के बीत जाने में खुश हूँ।
ईश्वर ना मिले तो भी, उसकी भक्ति में खुश हूँ,
मैं खुश हूँ, क्योंकि आप भी खुश हैं॥

कोई लाखों में खुश है, तो कोई अठन्नी में भी खुश है,
कोई कार में खुश है, तो मैं पैदल में भी खुश हूँ।
अपनी जिंदगी के बारे में सोच कर, मैं सोच में भी खुश हूँ,
मैं खुश हूँ, क्योंकि आप भी खुश हैं॥

मेरी कोई बात अगर, आपके दिल को लगे,
तो उस एहसास के बारे के पल में भी मैं खुश हूँ।
जिंदगी के बोझ में, कोई दवा दारू में भी खुश है,
मैं खुश हूँ, क्योंकि आप भी खुश हैं॥

-संजीव कुमार
वैज्ञानिक अधिकारी/ई, एचपीयू

चार लोग क्या कहेंगे?

दुनिया में हर व्यक्ति चार लोगों को बहुत महत्व देता है। कोई भी काम करने से पहले व्यक्ति यही सोचता है कि चार लोग क्या कहेंगे? आज हम एक रोचक कहानी के अंत में जानेंगे कि आखिर चार लोग कहते क्या हैं?

एक समय की बात है, एक गांव में मोहन नाम का व्यक्ति रहता था। मोहन बहुत मेहनती था। वह अपने परिवार के हर सदस्य का ध्यान रखता था, किन्तु वह किसी काम को करने से पहले यही सोचता था कि चार लोग क्या कहेंगे? मोहन के परिवार में उसके माता-पिता, उसकी पत्नी और उसके दो बेटे थे। उसके दोनों बेटों की उम्र शादी के लायक थी। उसके दोनों बेटे प्रेम-विवाह करना चाहते थे, किन्तु मोहन प्रेम-विवाह के खिलाफ था। उसको डर था कि यदि उसने अपने बेटों का प्रेम-विवाह कराया तो चार लोग क्या कहेंगे?

अतः उसके बेटों ने मोहन का मान रखते हुए, जहाँ मोहन ने कहा, वहाँ विवाह कर लिया। किन्तु उनके मन में पिता के प्रति एक कड़वाहट आ गयी। मोहन की एक जिद ने चार लोगों (दो बेटों और उनकी पत्नियों) की जिंदगी को दर्द के दलदल में ढकेल दिया था। कुछ दिन बाद मोहन बहुत बीमार हो गया। उसी बीमारी में उसकी मृत्यु हो गयी। उसका पूरा परिवार बहुत दुखी था। बहुत लोग आए और थोड़ा शोक व्यक्त करके चले गये। किन्तु वास्तव में देखा जाए तो दुख सिर्फ परिवार के सदस्यों को ही था। तेरह दिन बाद मोहन का मृत्यु भोज हुआ। उसके बेटों ने बहुत बड़ी दावत रखी। बहुत लोग आए परन्तु कोई भी दुखी नहीं था। ज्यादातर लोग खाने में कमी भी निकाल रहे थे कि पूड़ी गर्म नहीं है, सब्जी अच्छी नहीं है, लड्डू मुलायम नहीं हैं इत्यादि।

मोहन की आत्मा को भगवान सब दिखा रहे थे, तब उसने सोचा कि जिन चार लोगों की फिक्र में उसने चार लोगों (दो बेटों और उनकी पत्नियों) को कष्ट में कर दिया, वो चार लोग कुछ नहीं कह रहे। बाकी चार लोग बस इतना कह रहे हैं कि पूड़ी गर्म नहीं हैं।

अतः इस कहानी से हमें सीख मिलती है कि कभी भी यह सोचकर अपने परिवार के सदस्यों का अहित मत करो कि चार लोग क्या कहेंगे? क्योंकि चार लोग बस इतना ही कहते हैं कि पूड़ी गर्म नहीं है।

-मोहित वशिष्ठ
सहायक ग्रेड-1, सीएमएम

मानक टिप्पणियाँ

क्रम सं.	अंग्रेजी वाक्यांश	हिंदी पर्याय
1	Acknowledgement is awaited.	पावती की प्रतीक्षा है।
2	Action may be taken as proposed.	यथाप्रस्तावित कार्रवाई की जाए।
3	Advise the action taken.	की गई कार्रवाई से अवगत कराएं।
4	Agenda is sent herewith.	कार्यसूची साथ में भेजी जा रही है।
5	All concerned to note.	सर्वसंबंधित कृपया नोट करें।
6	Approval may be accorded.	अनुमोदन प्रदान किया जाए।
7	Approved.	अनुमोदित।
8	Bill is outstanding.	बिल बकाया है।
9	Bills for signature please.	कृपया बिलों पर हस्ताक्षर कर दें।
10	Budget provision exists.	बजट व्यवस्था उपलब्ध/मौजूद है।
11	Call for explanation.	स्पष्टीकरण मांगा जाए।
12	Case has been closed.	मामला समाप्त कर दिया गया है।
13	Case is under consideration.	मामला विचाराधीन है।
14	Checked and found correct.	जाँच की और सही पाया।
15	Circulate and then file.	सम्बद्ध व्यक्तियों को दिखाकर फाइल कर दीजिए।
16	Convey the decision to all concerned.	निर्णय की सूचना सभी संबंधितों को दे दें।
17	Copy is enclosed for ready reference.	तत्काल हवाले /सुलभ संदर्भ के लिए प्रतिलिपि संलग्न है।
18	Decision is awaited.	निर्णय की प्रतीक्षा है। /निर्णय प्रतीक्षित है।
19	Delay is regretted.	देरी/विलंब के लिए खेद है।
20	Delay in returning the file is regretted.	फाइल को लौटाने में हुई देरी के लिए खेद है।
21	Do the needful.	आवश्यक कार्रवाई करें ।
22	Early reply is solicited	शीघ्र उत्तर भेजने की प्रार्थना है।
23	Ex-post facto sanction is accorded as proposed.	यथाप्रस्तावित कार्योत्तर मंजूरी प्रदान की जाती है।
24	Follow up action should be taken soon.	अनुवर्ती कार्रवाई शीघ्र की जाए।
25	Indents for signature please.	मांगपत्र (इन्डेंट) हस्ताक्षर के लिए प्रस्तुत हैं।
26	Inform accordingly.	तदनुसार सूचित करें।
27	Kindly countersign.	कृपया प्रतिहस्ताक्षर करें ।
28	Kindly review the case.	कृपया मामले पर पुनर्विचार करें।
29	Let the status quo be maintained.	पूर्व स्थिति बनी रहने दी जाए।
30	Matter has been examined.	मामले की जाँच कर ली गई है ।
31	Matter should be considered as most urgent.	मामला अत्यंत आवश्यक समझा जाए।
32	May be approved.	अनुमोदित किया जाए।
33	May be forwarded to	को भेज दिया जाए।
34	May be taken into account.	का ध्यान रखा जाए / का हिसाब लगा लिया जाए।
35	May be treated as urgent.	इसे अत्यावश्यक समझा जाए।
36	Must be rigidly adhered to.	कड़ाई के साथ पालन किया जाए /जाना चाहिए।
37	Necessary correction may be carried out.	आवश्यक संशोधन कर लिया जाए।
38	No further action is necessary.	आगे कोई कार्रवाई अपेक्षित नहीं है।
39	Passed for payment.	भुगतान के लिए पारित/पास किया।
40	Please discuss.	कृपया चर्चा करें /चर्चा कीजिए।
41	Please expedite compliance.	कृपया शीघ्र अनुपालन कीजिए।

अंग्रेजी मुहावरे एवं उनके हिंदी पर्याय

To go hand in hand	कंधे से कन्धा मिला कर चलना
Being busy doing nothing	व्यर्थ के कामों में व्यस्त होना
Chicken-hearted	बहुत डरपोक या कायर होना
To be in a fix	मुसीबत में फंसना
Throw cold water on someone's pleasure	किसी की प्रसन्नता/ उम्मीदों पर पानी फेरना
Laugh in their sleeves	दूसरों की गलतियों पर चुपके से हंसना।
To build a castle in the air	हवाई किले बनाना
Birds of a feather flock together	एक ही थाली के चाटते-बट्टे
Drop-in an ocean	ऊंट के मुंह में जीरा
Have one's way	अपनी ढपली बजाना / अपनी ढपली अपना राग
Fall in with	ताल से ताल मिलाना
Empty vessels sound much	थोथा चना बाजे घना
Catch the evil eye	आँखों की किरकिरी
Barking dogs seldom bite	गरजने वाले बादल बरसते नहीं हैं
Man catches a straw	डूबते को तिनके का सहारा
Crying in wilderness	अंधे के आगे रोना, अपने दीदे खोना
Tit for tat	जैसे को तैसा
It is no use crying over spilled milk	अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत
A thorn in the flesh	आँख का काँटा होना
Get into hot water	मुसीबत में पड़ना
Add fuel to fire	आग में घी डालना
As you sow, so shall you reap	जैसा बोओगे, वैसा ही काटोगे
Hope sustains life	उम्मीद पर दुनिया कायम है
Every dark cloud has a silver lining	हर रात की सुबह होती है
To make mountain the mole hill	राई का पहाड़ बनाना
A friend in need is a friend indeed	दोस्त ही दोस्त के काम आता है
Where there is a will there is a way	जहाँ चाह वहां राह
To error is human	मनुष्य से गलती होना स्वाभाविक है।
There is something wrong at the bottom	दाल में कुछ काला होना
Goodness never goes unrewarded	कर भला तो हो भला
Cast in the same mold	चोर-चोर मौसेरे भाई
Distant drums sound well	दूर के ढोल सुहावने
A blessing in disguise	अशुभ या बुरे में कुछ अच्छा होना / अंत भला तो सब भला
All is well that ends well	अंत भला तो सब भला
Sweet are the fruits of patience	धैर्य का फल मीठा होता है
Prevention is better than cure	इलाज से परहेज अच्छा
Honesty is the best policy	ईमानदारी श्रेष्ठ नीति है
It takes two to make a quarrel	एक हाथ से ताली नहीं बजती

संकलन-धर्मेंद्र यादव, सहायक ग्रेड-।

आगमन एवं प्रस्थान

अप्रैल, 2024 से सितंबर 2024

आगमन (नई नियुक्ति)

सोमेन मण्डल
तकनीशियन/बी
एमएमयू
मई, 2024

राहुल साह
वैज्ञा.सहायक/बी
प्रचालन
जून, 2024

प्रवीन कुमार
वैज्ञा.सहायक/बी
एमएमयू
जून, 2024

गौरव शर्मा
वैज्ञा.सहायक/बी
एमएमयू
जून, 2024

विनीत यादव
वैज्ञा.सहायक/बी
एमएमयू
जुलाई, 2024

जय प्रकाश यादव
वैज्ञा.सहायक/बी
प्रचालन
जुलाई, 2024

राजेन्द्र कुमार
वैज्ञा.सहायक/बी
एफएचयू
जुलाई, 2024

राहुल कुमार
वैज्ञा.सहायक/बी
एफएचयू
जुलाई, 2024

अभिषेक कुमार राजपुरी
वैज्ञा. अधिकारी/सी
प्रचालन
अगस्त, 2024

मोहित सिंह नेगी
वैज्ञा. अधिकारी/सी
एफएचयू
अगस्त, 2024

अखिल तिवारी
वैज्ञा. अधिकारी/सी
एफएचयू
अगस्त, 2024

अरूण कुमार सिंह
वैज्ञा. अधिकारी/सी
एफएचयू
अगस्त, 2024

सत्यम सिंह
वैज्ञा. अधिकारी/सी
एफएचयू
अगस्त, 2024

अंकुश कुमार गुप्ता
वैज्ञा. अधिकारी/सी
एफएचयू
अगस्त, 2024

अभिषेक पाण्डे
वैज्ञा. अधिकारी/सी
एफएचयू
अगस्त, 2024

सारांश
वैज्ञा. अधिकारी/सी
एफएचयू
अगस्त, 2024

सतेन्द्र कुमार त्यागी
वैज्ञा. अधिकारी/सी
एफएचयू
अगस्त, 2024

विनय कुमार
वैज्ञा. अधिकारी/सी
एफएचयू
अगस्त, 2024

गौरव कुमार
वैज्ञा. अधिकारी/सी
एफएचयू
अगस्त, 2024

दशमीत कौर
वैज्ञा. अधिकारी/सी
सीएमयू
अगस्त, 2024

सप्तमिता धर
उप प्रबंधक (मा.सं.)
मानव संसाधन
अगस्त, 2024

आगमन (स्थानांतरण पर)

डॉ. यू.एस.बंदोपाध्याय
चिकि.अधिकारी/जी
चिकित्सालय
तारापुर साइट से
अप्रैल, 2024

डॉ. ऋद्धि बनर्जी
चिकि.अधिकारी/सी
चिकित्सालय
आरआर साइट से
मई, 2024

अर्चना श्रीवास्तव
उप प्रबंधक(राभा)
मानव संसाधन
आरआर साइट से
जून, 2024

प्रवीण कुमार
उप प्रबंधक (विधि)
मानव संसाधन
मुंबई मुख्यालय से
जुलाई, 2024

एस. जी. बठेजा
प्रशिक्षण अधीक्षक
प्रबंधन
तारापुर साइट से
जुलाई, 2024

कमल जीत
वैज्ञा.सहायक/सी
एचपीयू
तारापुर साइट से
जुलाई, 2024

संतोष राउत
वैज्ञा. अधिकारी/जी
सीएमयू
कैगा साइट से
अगस्त, 2024

एनएपीएस परिवार उपर्युक्त कार्मिकों का स्वागत करता है तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

प्रस्थान (स्थानांतरण)

डॉ. वैभव पाराशर
चिकि.अधिकारी/ई
चिकित्सालय
आरआर साइट को
अप्रैल, 2024

डॉ. सुधीर त्यागी
चिकि. अधिकारी/एफ
चिकित्सालय
कैगा साइट को
मई, 2024

महेश प्रसाद रथ
उप महाप्रबंधक (मा.सं.)
मानव संसाधन
आरआर साइट को
मई, 2024

भारत भूषण उपाध्याय
वरि.प्रबंधक(विधि)
मानव संसाधन
कैगा साइट को
जून, 2024

भीनी देवांगन
वैज्ञा.सहायक/सी
एचपीयू
तारापुर साइट को
जुलाई, 2024

प्रस्थान सेवानिवृत्ति

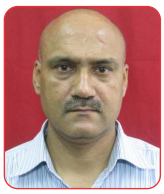

टीकम सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक (राभा)
मानव संसाधन
अप्रैल, 2024

मंजू शर्मा
वरिष्ठ सहायक ग्रेड-1
मानव संसाधन
अप्रैल, 2024

प्रभु दयाल राम
कार्य सहायक/सी
भारी पानी प्रबंधन
मई, 2024

कृष्ण कुमार यादव
तक.सुपरवाइजर/ए
रसायन प्रयोगशाला
मई, 2024

केशव कुमार शर्मा
वैज्ञा.अधिकारी/जी
स्टेशन प्रशिक्षण केंद्र
जून, 2024

भास्कर दत्त जोशी
वैज्ञा.अधिकारी/जी
सतर्कता
जून, 2024

रामवीर सिंह
वरि.सहायक ग्रेड-2
एचपीयू
जून, 2024

नेम सिंह बघेल
वरि.तकनीशियन/एच
परिवहन
जून, 2024

सतीश कुमार गोयल
वैज्ञा.अधिकारी/जी
टीएसयू
जुलाई, 2024

भरत सिंह
तक.सुपरवाइजर/ए
ईएमयू
जुलाई, 2024

बाबू राम चौधरी
फोरमैन/डी
सीएमयू
अगस्त, 2024

धर्मवीर सिंह
फोरमैन/डी
सीएमयू
अगस्त, 2024

सुरेश चंद्र
वरि. तकनीशियन/जे
अपशिष्ट प्रबंधन
अगस्त, 2024

उपेन्द्र प्रसाद
फोरमैन/डी
चिकित्सालय
सितंबर, 2024

एस.के.श्रीवास्तव
वैज्ञा. सहायक/जी
एमएमयू
सितंबर, 2024

एनएपीएस परिवार उपर्युक्त सभी कर्मचारियों के सुखद भविष्य की कामना करता है तथा एनएपीएस में की गई उनकी सेवाओं के प्रति आभार प्रकट करता है।

श्रद्धांजलि

आलोक रामनिवास त्रिपाठी
वैज्ञा.अधि./डी, ईएसएल
सितंबर, 2024

एनएपीएस परिवार उपर्युक्त कर्मचारी के असामयिक निधन पर शोक व्यक्त करता है तथा ईश्वर से प्रार्थना करता है कि उनके शोक संतप्त परिवार को इस दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

नरौरा परमाणु विद्युत केंद्र के निकटवर्ती क्षेत्र में विचरण करते पक्षी